मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 07 | जनवरी, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी

सम्मान समारोह–2019

सम्मानित कार्मिक

स्थान: बीकानेर

16 दिसम्बर, 2019

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 7 | पौष शु.- माघ शु. २०७६ | जनवरी, 2020

प्रधान सम्पादक
हिमांशु गुप्ता

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राॅफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। -वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- नई ऊर्जा और नये संकल्प 5

आलेख
- उस त्याग को नमन, **देवेन्द्र पण्ड्या** 11
- विश्व की महान विभूति हैं-गाँधी 12
  शंभूलाल अग्रवाल
- स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी एवं शैक्षिक विचार, **राकेश** 13
- विद्यालय वातावरण का मूल्यांकन 14
  वृद्धि चन्द गोठवाल
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के संविधान पर विचार 15
  सूर्य प्रताप सिंह राजावत
- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के शिक्षा विषयक विचार, **विजय सिंह माली** 18
- गाँधी महाप्रयाण, **वेद प्रकाश कुमावत** 19
- स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन 20
  चैनाराम सीरवी
- राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी विजय सिंह पथिक, **रामगोपाल राही** 21
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास 22
  हरीश कुमार वर्मा
- बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें 24
  राजकुमार तोलंबिया
- रसायन विज्ञान : ट्रिक आधारित शिक्षण 28
  बृजेश कुमार सिंह
- राज्य शैक्षिक प्राधिकारी संस्था : आर.एस.सी.ई.आर.टी. 30
  तेजपाल उपाध्याय
- आत्मरक्षा की टिप्स 35
  आशा रानी सुमन
- उपस्थिति बढ़ाने के लिए नई पहल 36
  विकास तिवाड़ी
- पर्यावरण संरक्षण में ईको क्लब की भूमिका 37
  विष्णु कुमार गुप्ता
- मेरा अपना विद्यालय 38
  रामगोपाल प्रजापति
- मन की शक्ति अर्थात् इच्छा-शक्ति 39
  अनिता चौधरी

रपट
- शैक्षिक संवाद : आओ चलें विद्यालय की ओर, **देवलता चाँदवानी** 6
- मंत्रालयिक एवं सहायक कार्मिकों की श्रेष्ठता का गौरवमय सम्मान, **राकेश भाटी** 9
- अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2019-20, **बंशीधर गुर्जर** 32
- 65वीं राष्ट्रीय वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग में राजस्थान विजेता, **द्वारका प्रसाद सुथार** 40

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-26
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 27
- पञ्चाङ्ग (जनवरी, 2020) 27
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 41-42
- जलते मरुथल में दाझे पांवों से
  लेखक : आईदान सिंह भाटी
  समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
- जीने दो धरती पर
  लेखक : डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा
  समीक्षक : **डॉ. मूलचन्द बोहरा**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

▼ परिचय

हिमांशु गुप्ता
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइ.ए.एस. बैच 2012) के अत्यन्त ऊर्जस्वी युवा अधिकारी श्री हिमांशु गुप्ता ने 09 दिसम्बर, 2019 को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म दिनाँक 16 अक्टूबर, 1987 है, आप बी.ई. (आनर्स-इलेक्ट्रिकल एण्ड इलेक्ट्रॉनिक्स) हैं। राज्य सेवा में आपकी प्रथम कार्यग्रहण तिथि 03 सितम्बर 2012 है। आपका गृह जिला लुधियाना है।

आपने सब डिविजनल ऑफिसर धौलपुर; सेक्रेट्री, यू.आइ.टी. अलवर; कमिश्नर, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, अजमेर एण्ड चीफ एग्ज्यूकेटिव ऑफिसर, अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, अजमेर; कमिश्नर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन अजमेर एण्ड एडिशनल चीफ एग्ज्यूकेटिव ऑफिसर, अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, अजमेर; कलक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, बाड़मेर; एडिशनल डायरेक्टर, एच.सी.एम. रीपा जयपुर के रूप में सेवाएँ देने के पश्चात् माध्यमिक शिक्षा निदेशक के रूप में कार्यभार सम्भाला है।

आप विनम्र, सरल, शान्त, दृढ़ निश्चयी, शिक्षा के प्रति संवेदनशील व्यक्तित्व हैं। राज्य में प्रत्येक बालक-बालिका को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, हमारा राज्य शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनते हुए प्रथम स्थान प्राप्त करे ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आप कार्यग्रहण के प्रथम दिवस से ही प्रतिबद्धता के साथ विभाग को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। प्रत्येक कार्य को त्वरित गति से सम्पन्न करवाना आपकी प्राथमिकता है।

-वरिष्ठ सम्पादक

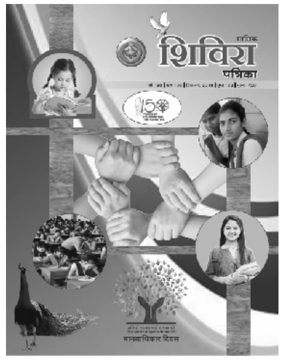

पाठकों की बात

- मास दिसम्बर, 2019 का शिविरा का आकर्षक मुखपृष्ठ वाला अंक प्राप्त हुआ। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थाप्रधानों को निर्देशित/प्रेरित किया है कि यदि हमारा संकल्प दृढ़ है तो साधन और परिणाम भी वैसे ही निकलते हैं। गाँधीजी की 150वीं जयंती पर मुद्रित लेखों से गाँधीजी के जीवन-दर्शन की जानकारी प्राप्त होती है। उनका दर्शन अनुभूतियों का दर्पण है। माननीय शिक्षामंत्री महोदय द्वारा 'आओ चले विद्यालय की ओर' संवाद कार्यक्रम की पहल सराहनीय है। यह कार्यक्रम भविष्य में अन्य संभागीय स्तर पर भी होने चाहिए। संवाद कार्यक्रम के तहत संस्था प्रधानों से जो सुझाव प्राप्त हो, उन्हें सकारात्मक रूप में लिया जाए। पूर्व प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की नींव है, यह शुद्ध होनी चाहिए। इस शैक्षिक चिंतन पर बल देना चाहिए **'प्रारम्भिक शिक्षा में आई.सी.टी.'** लेख इस बात की ओर इंगित करता है कि आने वाला समय आविष्कार और नवाचारों का होगा और शिक्षक को इसके लिए तैयार रहना होगा। पत्रिका में मुद्रित अन्य लेख भी सारगर्भितऔर पठनीय हैं।

-महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद (अजमेर)

- आकर्षक मुख्य पृष्ठ के साथ शिविरा का दिसम्बर, 2019 का अंक मिला। मन को सुखद अनुभूति हुई। प्रत्येक माह की शिविरा का बेसब्री से इंतजार रहता है। माननीय मंत्री महोदय का अज्ञानता से ज्ञान की ओर अग्रसरता का संदेश एवं निदेशक महोदय की दृढ़ संकल्प शक्ति से ही परिणाम संभव है। प्रेरणाप्रद व मील के पत्थर लगे। गाँधीजी की 150वीं जयन्ती पर विशेष आलेख प्रेरणाप्रद व हृदयस्पर्शी लगे। बाल शिविरा रोचक, प्रसन्नतादायक व अपने बचपन की याद दिलाने वाली रचनाएँ प्रस्तुत कर इसी की अनुभूति करवाती है। शिक्षा चौपाल एवं नवाचार भी नई प्रेरणा का संचार करते हैं। सभी विधाओं की रचनाओं को स्थान देकर शिविरा, शैक्षिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में मानक स्तर कायम किए हुए हैं। पुनश्चः संपादक मंडल की पूरी टीम को (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में) हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

-हजारी राम विश्नोई, जोधपुर

- माह दिसम्बर, 2019 का शिविरा अंक बेहतरीन कवर पृष्ठ के साथ मिला। मंत्री महोदय एवं निदेशक महोदय के पृष्ठ 'अपनों से अपनी बात' व 'दिशाकल्प' शिक्षकों को ऊर्जा बढ़ाने का कार्य करते हैं। गाँधी जी की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष में गाँधी विचार शृंखला में लेखों का चयन बहुत सराहनीय है। बाल शिविरा का प्रकाशन बालकों की सृनेनवृति को प्रोत्साहित करता है। पर्यावरण संरक्षण पर आधारित आलेख खासकर 'सिंगल यूज़ प्लास्टिक हानिकारक' वर्तमान स्थिति को दर्शाता हुआ भविष्य के लिए जागृत करता है। शिक्षा चौपाल : एक नवाचार नई प्रेरणा के साथ ऊर्जा प्रदान करता है। शिक्षा जगत की एक मात्र राजकीय पत्रिका 'शिविरा' का हमेशा इन्तजार रहता है। बालक भी अब शिविरा आई क्या! पूछते रहते हैं। सभी विधाओं को यथास्थान प्रदान कर सम्पादक मण्डल ने अपने रचना-धर्म को बखूबी निभाया। सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना।

-अनिला कांकानी, अजमेर

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सत्यमेव जयते

हिमांशु गुप्ता
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

नई ऊर्जा और नये संकल्प

राष्ट्रीय पर्व, गणतन्त्र दिवस की सभी शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, भामाशाहों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को बहुत-बहुत बधाई!

गणतन्त्र दिवस, 26 जनवरी, 1950 से हर वर्ष हम पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं। यह पर्व हमें अपने संविधान के प्रति आत्मगौरव की सर्वोच्च भावानुभूति करवाता है।

हमारा सौभाग्य है कि हमें शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का शुभ अवसर मिला है। चाहे हम विद्यालय में कार्य कर रहे हैं अथवा कार्यालय में, लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें अपनी ऊर्जा का शत-प्रतिशत देते हुए दृढ़ संकल्पित होकर कर्त्तव्यपालन करना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा-सत्र अपने उत्कर्ष पर है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा मार्च में है। विद्यार्थियों की सफलता हेतु संस्थाप्रधान, शिक्षक और विद्यार्थी स्वयं भी कठिन परिश्रम कर रहे हैं। हमारे विद्यालयों के संस्थाप्रधान और विषय विशेषज्ञ शिक्षक, विशेष अतिरिक्त कक्षाओं के द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का निवारण करवा रहे हैं। शत-प्रतिशत सफलता की सुनिश्चितता हेतु अल्प समयावधि की कार्ययोजना बनवाकर प्रभावी रूप से क्रियान्वयन करवाया जा रहा है। हमारे सभी विद्यार्थी आनंददायी वातावरण में अध्ययन करें, बिना किसी तनाव और भय के परीक्षा दें तथा अपनी क्षमता का श्रेष्ठतम प्रदर्शन करें, ऐसा प्रयास हम सभी करें।

नव वर्ष (ईस्वी सन्) 2020 का आगमन सभी के लिए शुभ एवं मंगलमय हो। सभी अपने-अपने क्षेत्र में नई ऊर्जा और नये संकल्पों के साथ रचनात्मक कार्य करें।

स्वस्थ रहें! प्रसन्न रहें! हार्दिक शुभकामनाएँ!

(हिमांशु गुप्ता)

"हमारा सौभाग्य है कि हमें शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का शुभ अवसर मिला है। चाहे हम विद्यालय में कार्य कर रहे हैं अथवा कार्यालय में, लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें अपनी ऊर्जा का शत-प्रतिशत देते हुए दृढ़ संकल्पित होकर कर्त्तव्यपालन करना चाहिए।"

रपट

शैक्षिक संवाद : आओ चले विद्यालय की ओर

दिनांक : 16.12.2019 • स्थल : तेरापंथ भवन, गंगाशहर, बीकानेर

❒ देवलता चाँदवानी

सर्वप्रथम संवाद कार्यक्रम में उपस्थित संस्थाप्रधानों एवं विभागीय अधिकारियों का स्वागत संयुक्त निदेशक, बीकानेर संभाग, श्रीमती देवलता चांदवानी द्वारा किया गया। संयुक्त निदेशक द्वारा सीकर जिले में आयोजित विज्ञान मेले के बारे में भी बताया गया। उन्होंने कहा कि यदि हम सामुहिक प्रयास करें तो शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर आ सकते हैं। शैक्षिक संवाद बहुत ही गहरा कार्यक्रम हैं। हम इस कार्यक्रम का अधिक से अधिक लाभ लें। आप लोगों की शत प्रतिशत उपस्थिति के लिए आप सब को धन्यवाद और साधुवाद।

संवाद को संबोधित करते हुए माननीय शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता ने सर्वप्रथम माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदय एवं मंच पर बैठे हुए सभी अधिकारियों एवं संवाद कार्यक्रम में उपस्थित विभाग के समस्त संस्था प्रधानों एवं विभागीय अधिकारियों को कार्यक्रम में आने एवं कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे ऐसे कार्यक्रम में सम्मिलित होने का मौका मिला। आप लोगों की जो भी समस्याएँ, सुझाव है एवं जो भी विभाग से अपेक्षाएँ हैं, उन सब पर आप बिना किसी रूकावट के बोलें। हमारे बीच इस कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री महोदय उपस्थित हैं, जो आज कर्मचारी सम्मान समारोह में शामिल हो कर इस कार्यक्रम में पधारे हैं, इसके लिए उनका धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

कार्यक्रम की शुरूआत में बालिकाओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया एवं महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्म शताब्दी समारोह के कारण माननीय मंत्री महोदय को चरखा भेंट किया गया।

माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सबसे पहले 'आओ चले विद्यालय की ओर' कार्यक्रम के अध्यक्ष शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता, संयुक्त निदेशक, बीकानेर संभाग श्रीमती देवलता चाँदवानी एवं मंच पर आसीन समस्त अधिकारीगण एवं मंच के सामने बैठे समस्त गुरुजन जिनके कंधों पर शिक्षा का भार है, को इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। जैसा कि आप सभी को विदित है करीब 12 माह पहले हमारी सरकार बनी तब एक संकल्प के साथ हमारी सरकार ने काम शुरू किया कि आने वाले समय में हम हमारे प्रदेश को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा दें, हम बच्चों का भविष्य सुधारने का काम करें। इस दिशा में हमारी सरकार ने काम करना शुरू कर दिया है। हमारे संवेदनशील मुख्यमंत्री माननीय अशोक जी गहलोत ने शिक्षा विभाग का दायित्त्व मुझे सौंपा। मेरा सौभाग्य है कि मुझे शिक्षा विभाग का दायित्त्व मिला, मेरे पिताजी भी इसी विभाग से सेवानिवृत्त हुए। मुझे पता है कि विभाग में शिक्षक की भूमिका क्या होती है और उनकी समस्या क्या होती है। मुझे यह भी पता है कि शिक्षक की विभाग से क्या अपेक्षाएँ होती हैं, उन सब अपेक्षाओं और समस्याओं का निदान किस प्रकार किया जा सकता है जिससे शिक्षक अपने शिक्षा देने के कार्य को भली प्रकार पूर्ण निष्ठा से सम्पादित कर सके। मैंने जब विभाग में कार्यभार संभाला तब काफी चुनौतियाँ थीं, पहले लोग अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय के स्थान पर निजी विद्यालय में भिजवाना पसंद करते थे, परन्तु इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परीक्षा परिणामों में सरकारी विद्यालयों के बच्चों ने जिस प्रकार मैरिट में स्थान प्राप्त किया है, उससे निजी विद्यालयों में पढ़ाने वाले अभिभावक अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में प्रवेश दिलाने के लिए अग्रसर हो रहे हैं। हमें आगे भी अपने ये प्रयास जारी रखने हैं जिससे शिक्षा से वंचित समस्त बच्चों को विद्यालय से जोड़ने एवं अभिभावकों का सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास पैदा हो। सरकारी विद्यालयों का परीक्षा परिणाम अच्छा रहे जिससे अधिक से अधिक अभिभावक अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में भेजें। हमारे पास योग्य शिक्षक उपलब्ध हैं जो किसी भी बच्चे को योग्य बनाकार भारतीय प्रशासनिक सेवा तक के लिए तैयार कर सकते हैं। आप विद्यालय के बच्चों को अपने बच्चे समझें तथा विद्यालय को अपना विद्यालय समझें।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 53 एफ, करणपुर जिला गंगानगर कक्षा 12 कला वर्ग की छात्रा गीता जयपाल के 99.4 प्रतिशत एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय संगरिया विज्ञान वर्ग की छात्रा साक्षी भादू के 98.3 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर छात्राओं एवं संबंधित संस्थाप्रधानों को प्रशस्ति पत्र वितरित किए। इस दौरान जिला समान परीक्षा के श्री प्रदीप जैन, प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगाशहर, बीकानेर एवं श्री राजेश जोशी, अति. जिला शिक्षा अधिकारी, कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, बीकानेर को भी प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि हमने विद्यालयों में वार्षिक उत्सव योजना, विद्यालयों के लिए खेल उपकरण एवं विद्यालयों के इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए नाबार्ड एवं टीएडी से पैसा मांगा एवं हमें उक्त दोनों संस्थानों से धनराशि मिली भी है।

माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि यह आप सब लोगों का ही प्रयास है जिसके कारण आज क्वालिटी शिक्षा में हमारा प्रदेश दूसरे स्थान पर है, हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हमारा प्रदेश क्वालिटी शिक्षा के मामले में पूरे देश में प्रथम स्थान पर आएँ।

हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि गरीब से गरीब बच्चों को भी अच्छी शिक्षा कैसे मिले एवं वह आगे जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके

तथा गरीब का बच्चा भी आर.ए.एस. व आई.ए.एस. बन सके। आज हमारे बीच हिमांशु गुप्ता जी बैठे हैं, वे आईएएस टॉपर रहे हैं, उन्हें अच्छे शिक्षक मिले, इसी का परिणाम है कि आज वो हमारे विभागाध्यक्ष हैं।

मुझे बताया गया कि कर्मचारी सम्मान समारोह में काफी समय से विभाग के मंत्री जी नहीं आए। मुझे जब समारोह की जानकारी मिली तो मैंने तत्काल सम्मान समारोह एवं आप लोगों से संवाद का कार्यक्रम बना लिया जिससे आपके संभाग की समस्याओं से रूबरू होने का मुझे आज अवसर मिला।

हमने सभी जिला मुख्यालयों पर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए महात्मा गाँधी विद्यालयों की स्थापना की है।

मुझे विभिन्न शिक्षक संगठनों के माध्यम से विद्यालयों के समय के बारे में ज्ञापन मिले जिस पर हमने कार्यवाही करते हुए विद्यालयों का समय विद्यालय 24 तारीख से शुरू करने के आदेश पूर्व में प्रसारित कर दिए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे विभाग की महिला शिक्षक आवासीय प्रशिक्षण से परेशान हो रही थी, जिसका भी हमने समाधान करते हुए शिविरों को गैर आवासीय किया। क्योंकि विभाग के यह आवासीय शिविर दूसरे जिलों में होते थे।

हमारे शिक्षकों की मुख्य माँगों में पदोन्नति की माँग रहती थी, हमने समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर समस्त संवर्ग के शिक्षकों की डीपीसी कर पदस्थापन किया है।

मुझे खुशी हो रही है कि बीकानेर जिले के जिला कलेक्टर एवं बीकानेर के संभागीय आयुक्त अपने व्यस्त कार्यक्रम होने के बावजूद आज आप लोगों के संवाद कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं। हम सबका यह प्रयास है कि आप लोगों की समस्याओं को सुनकर उनका उचित समाधान निकाल सकें। आप लोगों के कंधों पर बच्चों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देना, बच्चों को पोषाहार देना, प्री-बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन करना, प्रश्न बैंक बनाना व उनकी बच्चों को तैयारी करवाना, जिससे अच्छे परिणाम प्राप्त हो सके। विभाग के शिक्षक सेवानिवृत्ति के बाद भी इस अभियान व शिक्षा के कार्य से जुड़े हुए हैं, वे सब साधुवाद के पात्र है। मैं इस मंच की ओर से ऐसे समस्त शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मैं अब आप लोगों से रूबरू होकर संवाद करूँगा, अतः आप एक-एक करके समस्याओं, सुझावों पर बोलने के लिए तैयार रहें। व्यवस्था में लगे हुए विभाग के कर्मचारियों से मेरा आग्रह है कि जो भी संस्थाप्रधान बोलना चाहे उन्हें माइक दे दें। आप लोग एक-एक करके अपना सुझाव व समस्या बताएँ।

डा. निर्मल सिंह ने माँग की कि प्रत्येक पीओ विद्यालय में सूचना सहायक का पद दिया जाए जिससे सूचना संधारण के कार्य को सुगमता से किया जा सके। बैठक में निर्देश दिए गए कि इस बिन्दु का निदेशालय स्तर पर परीक्षण कर उचित प्रस्ताव शासन को भिजवाने की कार्यवाही की जावे।

बैठक में एक बिन्दु प्रमुखता से उठाया गया कि चाईल्ड केयर लिव पर पुनर्विचार किया जावे। संस्था का परीक्षा परिणाम खराब होने पर प्रधानाचार्य की जवाबदेयता बढ़ जाती है। चाइल्ड केयर लिव से शिक्षण कार्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि यह बिन्दु सही है, इसे और व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है। इस संबंध में उचित प्रस्ताव दोनों निदेशालय तैयार कर राज्य सरकार को भिजवाए ताकि इस बिन्दु पर माननीय मुख्यमंत्री महोदय स्तर पर समुचित आदेश जारी करवाये जा सके।

एस.आई.क्यू.ई. सिस्टम के कारण शिक्षक को काफी परेशानी हो रही है। इस पैटर्न को बदलने की आवश्यकता है। बैठक में सभी संभागियों से इस पर राय चाही तथा सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि इस सिस्टम को तर्क संगत बनाने के लिए निदेशालय स्तर से आदेश जारी किए जाए।

हनुमानगढ़ व गंगानगर के संस्थाप्रधानों द्वारा बताया गया कि उनके यहाँ पर तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत का पद स्वीकृत है जबकि अधिकांश विद्यार्थियों ने पंजाबी विषय ले रखा है, संस्कृत शिक्षक पंजाबी पढ़ा नहीं सकता। ऐसे में इन दोनों जिलों में जहाँ-जहाँ पंजाबी विषय के अध्यापक की आवश्यकता है, वहाँ पंजाबी का शिक्षक दिया जावे। बैठक में चर्चा कर निर्णय लिया गया कि इन दोनों जिलों के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अपने जिलों के विद्यालयवार प्रस्ताव बनाकर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को भिजवाए ताकि स्टॉफिंग पैटर्न के तहत इस विषय के पदों का आवंटन किया जा सके।

शिक्षकों का अधिकतर समय मिड-डे-मिल की व्यवस्था करने में व्यतीत हो जाता है, शिक्षकों को इससे मुक्त रखा जाए। इस पर कहा गया कि आर.टी.ई. एक्ट में ऐसा प्रावधान है, फिर भी परीक्षण कर इसे दिखाया जाएगा।

विद्यालयों में पूर्व में एस.एम.सी. थी, जिसका सोसायटी एक्ट में रजिस्ट्रेशन भी करवा रखा है। अब एसडीएमसी बनाने से काफी परेशानी हो रही है। एसडीएमसी में सभी सदस्य एक साथ हों तथा अलग-अलग ऑटीपी आता है। दोनों का मर्ज करने का सुझाव आया। बैठक में दोनों को मर्ज करने के बारे में निर्णय लिया गया तथा निदेशालय इसका परीक्षण कर इस संबंध में आदेश जारी करें।

स्कूल की सोसायटी के लिए कॉ-ऑपरेटिव विभाग से 80 जी का प्रमाण पत्र की बाध्यता समाप्त की जाए क्योंकि इसमें समय बहुत लगता है। माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि ऐसी समस्या कोटा में भी सामने आई थी, इस पर विचार चल रहा है, समाधान कर दिया जाएगा।

एक संस्थाप्रधान द्वारा सुझाव दिया गया कि 8वीं और 10वीं बोर्ड परीक्षा साथ-साथ होती है जबकि 12वीं बोर्ड परीक्षा अलग होती है। इन परीक्षाओं के दौरान 9वीं व 11वीं के बच्चों की कक्षाएँ नहीं लग पाती। ऐसे में मेरा सुझाव है कि 9वीं व 11वीं के बच्चों की परीक्षाएँ भी उक्त परीक्षाओं के साथ करवा ली जाए। बिन्दु उचित माना गया तथा इसका परीक्षण निदेशालय स्तर से करने का निर्णय लिया गया।

विद्यालय में अंग्रेजी के व्याख्याताओं की कमी है तथा अधिकांश पद विज्ञान संकाय में रिक्त होने से हमारे परीक्षा परिणाम पर असर पड़ेगा। यह गंभीर विषय है, इस पर विभाग को कार्यवाही करनी है। निदेशालय इसका परीक्षण कर वैकल्पिक सुझाव और व्यवस्था सुनिश्चित करावें।

दुग्ध वितरण योजना की समीक्षा होनी

चाहिए। विद्यालय में किसी भी बच्चे को उल्टी किसी भी कारण से हो तो हमें हर समय दुग्ध की गुणवत्ता की चिंता लगी रहती है। यह सही है कि दुग्ध वितरण योजना की समीक्षा की जाए। निदेशालय स्तर पर इस योजना की समीक्षा की जाये।

एम.एम. स्कूल, बीकानेर के संस्थाप्रधान द्वारा बताया गया कि एम.एम. ग्राउंड के अधीन अंतर्राष्ट्रीय स्तर का स्वीमिंग पूल है, जिसका संचालन अब स्कूल के जिम्मे आ गया है, जिसका ठेका सात लाख में किया था, लेकिन मरम्मत के लिए बजट नहीं है। माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि स्वीमिंग पुल के ठेके का प्रकरण मेरे ध्यान में हैं, मैं इसे दिखवा रहा हूँ।

सार्दुल स्पोटर्स स्कूल में कोच व लेक्चरर के पद रिक्त है। माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि यह बिन्दु उनके संज्ञान में है, आप इस संबंध में माननीय शिक्षा निदेशक महोदय से व्यक्तिशः मिले।

महात्मा गाँधी विद्यालय, बीकानेर के संस्थाप्रधान द्वारा निवदेन किया गया कि उन्हें जो अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकें प्राप्त हुई है, उनमें ग्रामेटिकल मिस्टेक बहुत ज्यादा है, इसे दुरस्त करवाया जाए। आपकी समस्या वाजिब है, इसका परीक्षण करवाया जाएगा।

स्कूल में हैल्परों का मानदेय कम है। आपकी समस्या वाजिब है, इसका परीक्षण करवाया जाएगा।

एक संस्थाप्रधान द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर स्कीम से बस खरीदने का सुझाव दिया गया। विस्तृत चर्चा कर निर्णय लिया गया कि इस स्कीम से बस नहीं खरीद सकते, इस योजना का सरलीकरण करने का निर्णय लिया गया।

गंगानगर व हनुमानगढ़ में ग्राम पंचायत सहायक नहीं हैं तथा जहाँ पर हैं, वहाँ ग्राम पंचायत सहायक विद्यालयों में नहीं आते। बिन्दु उचित माना गया तथा इसका परीक्षण निदेशालय स्तर से करने का निर्णय लिया गया।

एक संस्थाप्रधान द्वारा बताया गया कि 2013 के बाद जितने भी स्कूल क्रमोन्नत हुए हैं, उनमें अंग्रेजी व्याख्याता का पद नहीं दिया गया है। बिन्दु उचित माना गया तथा इसका परीक्षण निदेशालय स्तर से करने का निर्णय लिया गया।

बाल सभा विभाग का एक अच्छा प्रयास है, चौपाल में महीने में एक के स्थान पर तीन माह में एक बार हो तो अच्छा हो। निदेशालय इसका परीक्षण करें।

फरवरी के बजाय मार्च माह में बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन हो। बैठक में सभी से इस बिन्दु पर राय माँगी गई, सभी एक मत से मार्च में बोर्ड परीक्षा आयोजित करवाने पर सहमत थे, घोषणा की गई कि इस बार की बोर्ड परीक्षाएँ मार्च माह में ही आयोजित होगी।

वार्षिक उत्सव कब आयोजित किया जाएगा। बोर्ड की परीक्षा के बाद आयोजित होगा, इस संबंध में निदेशालय से निर्देश जारी कर दिए जाएँगे।

शाला दर्पण में प्रभारियों के नाम अंकित है इसमें सह प्रभारी के नाम व प्रत्येक विद्यालय व कार्यालय के प्रभारियों के नाम भी अंकित किए जाये। बिन्दु उचित माना गया इस पर तत्काल कार्यवाही करें।

मोबाईल पर पाबंदी के आदेश जारी होने से विद्यालयों में इसका अच्छा प्रभाव पड़ा है, इसी तरह यदि शिक्षकों के मुख्यालय छोड़ने के संबंध में भी निर्देश जारी हो जाए तो अच्छा रहेगा। आपका सुझाव अच्छा है, निदेशालय इस संबंध में कार्यवाही करें।

विभाग के कुछ विद्यालय वन विभाग की जमीन पर बने हुए हैं इस कारण विद्यालय विकास में समस्या आ रही है। विद्यालय की भूमि डायर्वजन का प्रस्ताव भेजकर सबसे पहले भूमि डायर्वजन की कार्यवाही संबंधित कार्यालय से करवाई जावे।

महात्मा गाँधी विद्यालयों से नए स्वीकृत पद शाला दर्पण पर तो हैं, परन्तु आई.एफ.एम.एस. पर नहीं हैं। बिन्दु उचित माना गया तथा निदेशालय स्तर से उक्त सभी पदों को आई.एफ.एम.एस. पर करवाने की कार्यवाही करावें।

विज्ञान संकाय की डीपीसी समय पर या अग्रिम पदस्थापन हो जिससे शिक्षण व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव न पड़े। बिन्दु उचित माना गया तथा इसका परीक्षण निदेशालय स्तर से करने का निर्णय लिया गया।

माननीय मंत्री महोदय द्वारा बताया गया कि समस्त स्टॉफ की उपस्थिति एवं आवेदित अवकाश हेतु आवेदन ऑनलाइन किया जा रहा है। समस्त विद्यालयों में शाला दर्पण के माध्यम से यह व्यवस्था पूरे राज्य में एक साथ 01.01.2020 से लागू होगी।

जिला कलेक्टर महोदय ने विभाग के संवाद कार्यक्रम की प्रशंषा करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम आयोजित होने से शिक्षा विभाग को एक नई दिशा मिलेगी। मुझे आशा है कि हमारे मंत्री महोदय के निर्देशन में ऐसे आयोजन हो रहे हैं इससे विभाग को एक नई गति मिलेगी एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा तथा हमारा प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में नम्बर एक पर आने का अवसर प्राप्त होगा।

संभागीय आयुक्त महोदय ने कहा कि मुझे खुशी है कि मुझे ऐसे समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। शिक्षकों की समस्याओं के निस्तारण के लिए प्रशासन स्तर पर जो भी सहयोग अपेक्षित होगा, वह संबंधित को दिया जाएगा, ऐसा मैं आप सब को विश्वास दिलाता हूँ।

बैठक में श्री राजकुमार शर्मा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, बीकानेर द्वारा बैठक में आए हुए सभी अधिकारियों एवं संस्थाप्रधानों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

संयुक्त निदेशक
बीकानेर संभाग, बीकानेर

''लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें''

अगर आप परेशानियाँ देखेंगे तो हर जगह परेशानियाँ ही नजर आएँगी, समस्या तो हर काम में आती है, अगर समस्या के बारे में ही सोचते रहेंगे तो परेशानियाँ आप पर हावी हो जाएँगी और आप अपने लक्ष्य से भटक जाएँगे। अर्जुन की तरह केवल एक लक्ष्य पर नजर रखिए और भ्रमित करने वाले लोगों से बचिए। अपनी दिशा में आगे बढ़ते जाइए। आप जरूर कामयाब होंगे।

शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2019

मंत्रालयिक एवं सहायक कार्मिकों की श्रेष्ठता का गौरवमय सम्मान

❒ राकेश भाटी

शिक्षा विभाग के कार्यालयों की आधार भूत सरंचना में विशिष्ट योगदान देने वाले एवं विभाग की योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में नींव की ईंट के रूप में सहयोग देने वाले मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के लिए 16 दिसंबर 2019 का दिन एक मील के पत्थर के रूप में स्मरणीय रहा।

इस दिन प्रात: 10:00 बजे वेटरनरी ऑडिटोरियम हॉल, राजूवास, बीकानेर में 27 वाँ शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी पुरस्कार व सम्मोन समारोह 2019 का भव्य आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यटन एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की गरिमा को चार चाँद लगा दिए। उल्लेखनीय है कि इस आयोजन के 27 वर्षीय इतिहास में 21 वर्ष के बाद विभाग के शिक्षा मंत्री शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता में सुशोभित रहे श्रीमान हिमांशु गुप्ता निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। सम्मान समारोह के अन्य विशिष्ट अतिथियों में शामिल रहे अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्रीमती रचना भाटिया, वित्तीय सलाहकार माशि. श्री ब्रहमदत्त शर्मा एवं मुख्य लेखाधिकारी प्राशि. श्रीमती ज्योतिबाला व्यास, संयुक्त निदेशक (कार्मिक) श्रीमती नूतनबाला कपिला, उपनिदेशक (माशि.) श्री प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, संस्थापन अधिकारी श्री रूपचन्द जीनगर।

हर साल शिक्षा निदेशालय की स्थापना दिवस पर आयोजित किया जाने वाला सम्मान का यह ओजस समारोह शिक्षा विभाग के राज्य भर के कार्यालयों, स्कूलों में कार्यरत उन कार्मिकों को पुरस्कृत करता है जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन व जुनून से अपने पदीय दायित्वों के निर्वहन में विगत वर्षों में श्रेष्ठता के नए मानक स्थापित कर विभाग को नए आयाम दिए हैं।

शिक्षा विभाग की श्रीमती इंदिरा व्यास एवं सुश्री सरोज विश्नोई द्वारा तिलक लगाकर मुख्य अतिथि श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा जी का स्वागत किया गया। तत्पश्चात माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा एवं मंचस्थ अतिथियों के द्वारा समारोह का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात राजकीय बालिका महारानी उ.मा.वि. की छात्राओं द्वारा सरस्वति वंदना एवं अतिथियों के सम्मान में स्वागत गान किया गया। छोटी काशी के नाम से विख्यात बीकानेर में संस्थित निदेशालय के कार्मिकों द्वारा अतिथियों का सम्मान राजस्थानी परम्परा के अनुरूप साफा पहना कर किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय श्री हिमांशु गुप्ता द्वारा मुख्य अतिथि श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा का साफा पहनाकर एवं डॉ. जगदीश सहायक निदेशक द्वारा बैज लगाकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर विभाग की ओर से स्वागत भाषण निदेशालय के लोकप्रिय एवं अनुभवी वरिष्ठ कर्मचारी श्री कृष्ण चन्द्र व्यास, सहायक प्रशासनिक अधिकारी द्वारा दिया गया एवं पधारे हुए सभी अतिथियों व राज्य भर से सम्मानित होने वाले साथी कार्मिकों को बधाई व उपस्थित अतिथियों व आगन्तुकों का आभार एवं अभिनंदन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर श्री व्यास द्वारा सम्मान समारोह का प्रारंभिक परिचय दिया गया एवं माननीय मंत्री महोदय से मंत्रालयिक कर्मचारी सम्मान में नगद पुरस्कार स्वरूप सम्मानजनक राशि की घोषणा किए जाने का निवेदन किया गया।

राज्य स्तरीय इस सम्मान समारोह में इस बार 40 कार्मिकों को उनकी श्रेष्ठतम सेवाओं के लिए राज्य भर से चयनित किया गया। राजस्थान राज्य के सबसे बड़े शिक्षा विभाग के माला के ये मोती बारी-बारी से उपस्थित अतिथियों के कर कमलों से सम्मानित किए गए।

अपनी तरह के बिरले एवं भव्य स्तर के इस सम्मान समारोह में श्रेष्ठ कार्मिकों को सम्मानित करने का मंच क्रम चयन इस प्रकार रखा गया कि मंचस्थ अतिथि क्रमश: साफा, प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं श्रीफल सम्मानित होने वाले कार्मिक को भेंट करते हैं, तालियों की करतल ध्वनी से वेटरनरी का सभागार गुजांयमान रहता है। इस वर्ष सम्मान में नवाचार करते हुए कार्मिकों को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से हरिता को प्रोत्साहित करने के लिए पुष्पे गुच्छक/ पुष्प मालाओं के स्थान पर बेंबू प्लांट भी प्रतीक भेंट के तौर पर दिया गया।

इस भव्य अवसर पर राज्य भर से अलग-अलग स्थानों से सम्मानित होने वाले कार्मिक थे- श्री ओम प्रकाश बोहरा-सप्रअ, श्री अशोक कुमार व्यास-सप्रअ, श्रीमती पूर्णिमा व्यास-सप्रअ, श्री महेश कुमार खत्री-सप्रअ, श्री कैलाश सिंह कविया-व.स., श्री उत्तम भटनागर-व.स., श्री नवरतन सैनी-व.स., श्री घनश्याम सांखला-व.स., श्री कृष्णलाल-अप्रअ, श्री देवराज जोशी-सहायक कर्म., शिक्षा निदेशालय, बीकानेर, श्री नगेन्द्र चौहान-निजी सहायक, कार्या संयुक्त निदेशक उदयपुर, डॉ. उमेश शर्मा-व.स. स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल जैसलमेर, श्री कन्हैयालाल- सहायक कर्मचारी राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर, श्री शिव कुमार मेरोटा-सप्रअ, संयुक्त निदेशक, कोटा, श्री नरपत सिंह भाटी-व.स., संयुक्त निदेशक, पाली, श्री देश बंधु शर्मा-सप्रअ, कार्या. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, राजगढ, अलवर, श्री खुमान सिंह राव-सप्रअ, जिला शिक्षा अधिकारी-मुख्यालय, डूंगरपुर, श्री विनय भानु सिंह राव-अप्रअ, जिशिअ-मुख्या प्रतापगढ़, श्री अकील अहमद-सप्रअ, श्री अजय कुमार यादव-सप्रअ, जिशिअ-मुख्य, झालावाड़, श्री दिनेश गिरी गोस्वामी-सप्रअ, संयुक्त निदेशक, पाली, श्री सुमित गिरी -व.स., राउमावि,15 जेड, श्रीगंगानगर, श्री अशोक कुमार शर्मा-व.स., राउमावि, विशनगढ़, जयपुर, श्री राजेश जोशी-सप्रअ, मुख्य जिशिअ, पाली, श्री राकेश कुमार मोड़-

व.स., राउमावि, पुरुषार्थी, चित्तौड़गढ़, श्री इन्दर सिंह देवड़ा-सप्रअ, मुख्य जिशिअ, सिरोही, श्री नरेन्द्र कुमार टेलर-निजी सहायक, मुख्य जिशिअ, चित्तौड़गढ़, श्री ओम प्रकाश-जमादार, संयुक्त निदेशक, पाली, श्री बालकिशन व्यास-व.स., मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, मेड़ता सिटी, नागौर, श्री विजय सिंह कच्छावा-व.स. जिशिअ-मुख्य, जोधपुर, श्री बलजीत सिंह-सप्रअ, बागड़ राउमावि, पाली, श्री रतनलाल कीर-स.क., राउप्रावि, नूरमहल, चित्तौड़गढ़, श्री बाबूसिंह-स.क., रामावि, रूंध, सीरावास, अलवर, श्री दुर्गालाल प्रतिहार-सप्रअ, राउमावि, जयस्थौल, बूंदी, श्री रमेश चन्द्र उपाध्याय-सप्रअ, राउमावि, भासोर, डूंगरपुर, श्री मनीष त्रिवेदी-व.स., राउमावि, नांदशा, भीलवाड़ा, श्री रिखब सुराणा-व.स., राउमावि, खरवा, अजमेर, श्री मामराज शर्मा-सप्रअ, राबाउमावि, अमरसर, जयपुर, श्री सुदेश जैन-.व.स., राउमावि, सांगोद, कोटा, श्रीमती गीतांजली वर्मा-व.स., रारावतमल बोथरा बाउमावि, बीकानेर।

विशिष्ठ एवं श्रेष्ठ कार्मिकों के सम्मान के इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यटन एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा अपने अतिथि उद्‌बोदन में उक्त कार्मिकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें शिक्षा विभाग का गौरव बताया गया। उन्होंने कहा कि वे खुद गौरवान्वित अनुभव कर रहे है कि उन्हें राज्य भर से आए हुए श्रेष्ठ कार्मिकों को सम्मानित करने का मौका मिला। जिसका उपस्थित कार्मिकों द्वारा करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय द्वारा यह सुझाव भी दिया गया कि विभाग के वृहद स्वरूप को देखते हुए सम्मानित होने वाले कार्मिकों की संख्या में बढ़ोतरी की जानी चाहिए एवं साथ ही इस संख्या में महिलाओं की भागीदारी को भी बढ़ाया जाना चाहिए। उनके द्वारा यह भी सुझाव दिया गया कि आज के डिजीटल युग में पुरस्कार व सम्मान हेतु आवेदन ऑनलाइन आमंत्रित किए जाने चाहिए ताकि इसमें निष्पक्षता एवं पारदर्शिता प्रदर्शित हो। इस अवसर पर उनके द्वारा राज्य सरकार द्वारा जन हित में चलाई जा रही योजनाओं को भी रेखांकित किया गया। उन्होंने इस भव्य आयोजन के लिए निदेशक महोदय व उनकी टीम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उक्त सुझाव व इस अवसर को गरिमा प्रदान करने के लिए मंत्री जी का आयोजन समिति द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया एवं अध्यक्षीय उद्‌बोदन के लिए श्रीमान हिमांशु गुप्ता निदेशक मा.शि. से आग्रह किया गया। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्‌बोदन में श्रीमान हिमांशु गुप्ता, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा सम्मानित होने वाले कार्मिकों को बहुत-बहुत बधाई देते हुए उन्हें विभाग की नींव की ईंट की उपमा दी गई। उन्होंने मंत्रालयिक कार्मिकों की उपादेयता व प्रभावशीलता के संदर्भ में यह भी उल्लेखित किया कि विभाग के कार्मिकों के कठिन परिश्रम से किए गए कार्य की प्रशंसा व श्रेय अधिकारीगण को मिलता है। मंत्रालयिक कार्मिक हमेशा पृष्ठभूमि में कार्यरत रहते हुए सतत व निरंतर कर्मशील रहते है। उनके द्वारा कहा गया कि आपका कार्य पूरे राज्य में शिक्षा विभाग के कार्मिकों में मिशाल बने और आपकी प्रेरणा पाकर वे कार्य व अपने पदीय दायित्वों के प्रति अधिक सजग, श्रेष्ठ व उर्जावान बने ऐसे प्रयास अन्य कार्मिकों द्वारा भी किए जाने चाहिए।

उन्होंने आयोजन में सम्मिलित अधिकारी/कार्मिकों की भी प्रशंसा करते हुए उनके आयोजन को सराहनीय व श्रेष्ठ बताया। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष श्रीमती रचना भाटिया, अतिरिक्त निदेशक(प्रशासन) के उत्कृष्ट नेतृत्व एवं कुशल प्रबंधन में शिक्षा विभाग के कार्मिकों द्वारा उक्ति आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

अंत में बीकानेर की परम्परा व विभाग की गरिमा के अनुरूप निदेशालय के कार्मिकों द्वारा मंचस्थ आमंत्रित अतिथियों को अतिथि प्रतीक चिह्न भेंट स्वरूप प्रदान किए गए एवं राष्ट्रगान के पश्चात समारोह के औपचारिक समापन की घोषणा के साथ स्वरुचि भोज हेतु आमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति सम्मानित कार्मिकों व उनके स्वजनों, आगुन्तक अतिथियों तथा विभाग के कार्मिकों के लिए स्व रूचि भोज की व्यतवस्था माध्यमिक शिक्षा निदेशालय परिसर में की गई।

सम्मानित कार्मिकों व उनके स्वजनों, आगन्तुक अतिथियों एवं निदेशालय के कार्मिकों द्वारा उक्त स्वरूचि भोज का आनंद लिया गया।

सम्मान समारोह में प्रभावी एवं कलात्मक एंकरिंग शिक्षा सेवा के अधिकारी श्री सुभाष महलावत, जिला शिक्षा अधिकारी, पंयीयक कार्यालय, श्री दिलीप पड़िहार-सहायक निदेशक, श्री मदन मोहन मोदी एवं श्री मधुसूदन व्यास-व.स. द्वारा बारी-बारी से किया गया।

इसी के साथ वर्ष 2019 का यह विशिष्ट सम्मान व श्रेष्ठता का एक और पृष्ठ माननीय मंत्री जी गरिमामय उपस्थिति से शिक्षा विभाग के गौरवपूर्ण इतिहास की किताब में सुनहरे अक्षरों में जुड़ गया।

आने वाले वर्षों में सम्मान व श्रेष्ठता का यह दमकता व भव्य आयोजन और भी विशाल व ओजस पूर्ण रूप में अपनी माला में नए मोतियों के साथ प्रस्तुत होगा और नई पीढ़ी के युवा साथियों को पदीय दायित्वों के निर्वहन के श्रेष्ठ मानक स्थापित करने को हमेशा प्रेरित करता रहेगा, ऐसी आशा, विश्वास एवं कामना के साथ सतत ......।

वरिष्ठ सहायक,
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो. 9414011645

गाँधी विमर्श

उस त्याग को नमन

❒ देवेन्द्र पण्ड्या

जिसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जनसेवा रहा हो, जिसके वस्त्र जीवन भर साधारण ही रहे हों परन्तु अस्त्र-अहिंसा रूपी असाधारण अपनाए, जिसके आचार एकदम साधारण थे परन्तु विचार असाधारण थे, जिसके कार्य अभूतपूर्व रहे, सत्य और अहिंसा तथा ईश्वर में आस्था और विश्वास जिसकी ताकत रही हो, जिसका सर्वोदय में अटूट विश्वास और आस्था थी। जिसने सद्भावना की नाव में सवार होकर आजादी के लिए अँग्रेजी दासता की वैतरणी को पार कराया हो, स्वदेशी का भाव जिसका स्वाभिमान रहा हो, जिसने सामाजिक विकृत्तियों को उजागर करते हुए आजादी के बाद भी आजादी को बनाए रखने हेतु श्रम आधारित चारित्रिक शिक्षा व मानवीय मूल्यों को व्यावहारिक जीवन में अपनाने का संदेश दिया हो, उस महाप्राण महान आत्मा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को उनके निर्वाण दिवस पर कृतज्ञताभरी श्रद्धांजली अर्पित करने में सुख की अनुभूति होना और आँखों का नम होना सहज एवं स्वाभाविक है।

निःसन्देह पूज्य बापू त्याग की प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन व्यवहार ही त्याग की महिमा को परिलक्षित करता है। उनका विचार था कि **तृष्णा के त्याग का अर्थ ही कर्त्तव्य का ध्यान है तथा इसी को आधार बनाते हुए उन्होंने देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अपना कर्त्तव्य समझकर आजादी की राह पर प्रयाण किया। उनके अनुसार जीवन का सच्चा स्वाद लोभ के त्याग एवं परहित सेवा में निहित है।** परिग्रह की निवृत्ति ही त्याग है। त्याग का सम्बन्ध धर्म से है और हर भारतवासी का धर्म है आजादी। मात्र तीन दशक के समय के कुछ ही ऊपर ब्रह्मचर्य का जीवन प्रारम्भ कर देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्तकर लोकतंत्र की स्थापना हेतु गृहस्थ जीवन का परित्याग किया। एक गरीब महिला का आधी साड़ी धोकर सुखाना तथा पुनः धोई हुई आधी साड़ी पहने हुए शेष आधी साड़ी धोने के दृश्य को देखकर देश के हजारों गरीबों की दयनीय अवस्था का गाँधीजी ने एहसास करते हुए मात्र एक ही धोती में जीवन गुजारने का संकल्प साधते हुए उसे जीवन में व्यवहृत भी किया। इस प्रकार राष्ट्रहित के लिए व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सुख का त्याग बरबस ही पूज्य बापू के प्रति हमारे मन में श्रद्धा के भावों का स्फुरण करता है।

यहाँ पर उनके जीवन के एक प्रेरक प्रसंग का उल्लेख करना बड़ा ही सुखद लगता है। एक बार बापू से वार्तालाप के दौरान एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि, बापू अधिकतर लोग गाँधी टोपी में दिखाई देते हैं तथा चारों और गाँधी टोपी की महिमा का बखान हो रहा है परन्तु मैंने आपको कभी सफेद टोपी पहने हुए नहीं देखा। मुझे इसकी वजह समझ में नहीं आई। बापू ने प्रत्युत्तर में पूछा कि आप अपने सिर पर कौनसा वस्त्र धारण किए हैं? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि वह 18 हाथ का साफा है। बापू ने पुनः पूछा की इस अठारह हाथ के साफे में कितनी टोपियाँ बन सकती हैं? इस पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि लगभग 18 टोपियाँ बन सकती हैं। बापू ने एक प्रश्न और पूछा कि आप एक ही समय में कितनी टोपियाँ पहन सकते हैं? उत्तर में उस व्यक्ति ने केवल एक। इस पर बापू ने हँसते हुए कहा कि आपको केवल एक टोपी पहनने का अधिकार है परन्तु आपने अपने साफे में सत्रह और टोपियाँ छिपा रखी हैं। इस कारण 17 और व्यक्ति टोपी पहनना चाहते हुए भी टोपी पहनने से वंचित रह गए और मैं उन वंचित रहे 17 अभागे व्यक्तियों में से एक हूँ। इस प्रकार बापू ने अप्रत्यक्ष रूप से त्याग की महत्ता और आवश्यकता को हँसी मजाक में ही समझा दिया।

ईश्वर में आस्था एवं कर्म में विश्वास महात्मा गाँधी के जीवन की महानतम शक्ति थी। उनके द्वारा भारत की आजादी के लिए संघर्ष का मूल कारक भी यही था। क्योंकि **उनकी दृढ़ धारणा थी कि ईश्वर की सच्ची सेवा का सर्वोत्तम मार्ग मानव सेवा ही है।** निश्चय ही भारतीयों की खुशहाली हेतु देश को अर्पित अपनी सेवाओं से ईश्वर को खुश करने का उन्हें अन्तस से एहसास हुआ। उनके अनुसार ईश्वर का अस्तित्व मनुष्य के अन्तःकरण में अनुभव करने का विषय है। उनकी मान्यता थी कि ईश्वर और सत्य में विश्वास से विवेक बुद्धि जाग्रत होती है, धर्म का मार्ग प्रशस्त होता है तथा आदमी नैतिक आचरण को अपनाता है। गाँधीजी ने अहिंसा को अमोघ अस्त्र बनाते हुए भारत के सामाजिक जीवन में शुद्धीकरण का प्रयास किया। उन्होंने कई बार कहा कि मेरे लिए सत्य से परे कोई धर्म नहीं है।

श्रीमद्भगवद्गीता गाँधीजी की प्रिय पुस्तक थी। इसका अध्ययन उनके जीवन में एक नई प्रेरणा का स्रोत रहा। उन्होंने इसे नवाचार की एक प्रौढ़ मार्गदर्शिका तथा धार्मिक कोश के रूप में स्वीकार किया। अहिंसा, अपरिग्रह, समभाव तथा कर्म गीता के इन शब्दों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। वैसे तो उन्होंने अहिंसा का पहला पाठ अपने पिताजी के उनके प्रति किए गए व्यवहार से ही सीखा जब उनके द्वारा अपनी भूल को लिखित पत्र में पश्चाताप व्यक्त करते हुए उनसे क्षमा की प्रार्थना की थी। निःसन्देह पुत्र के पश्चाताप की आँच ने पिता के क्रोध को आँसुओं में बदल दिया। गाँधी स्वयं भी वेदना के आँसू बहा रहे थे। इस घटना ने उनके हृदय को शुद्ध कर दिया। आगे जाकर गीता अध्ययन से उन्हें अहिंसा के ज्ञान की विषद जानकारी प्राप्त हुई। गाँधीजी ने अपने इस अनुभव का लाभ सभी को पहुँचाने हेतु सलाह दी कि – **व्यक्ति को अपनी त्रुटि का पता चलते ही उसे मिटाने में थोड़ा भी समय नहीं खोना चाहिए।**

गाँधीजी का विचार था कि कर्म ही जीवन है। इसलिए उन्होंने सभी को कर्म की आवश्यकता एवं महत्ता को रेखांकित करते हुए जीवन में कर्मशील बनने की प्रेरणा दी। गीता में भी इसी बात को निम्न प्रकार कहा गया है।

नियतं कुरू कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि चते न प्रसिद्धयेदकर्मणः।।

(3-8)

गाँधाजी का विचार था कि कर्म से व्यक्ति गतिमान बना रहता है तथा व्यक्ति गलत मार्ग पर जाने से बचा रहता है। इसी कर्म की प्रेरणा को गीता में श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया है कि यदि मनुष्य ईश्वर में विश्वास रखते हुए कर्मफल की इच्छा न रखते हुए अपने कर्त्तव्य कर्म को करता रहे तो मैं उसका 'तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्' (9-22) वहन करूँगा। गीता में भगवान योग को कर्म का कौशल कहकर निरूपित किया है। गाँधीजी ने भी कर्म का त्याग नहीं अपितु कर्म के फल का त्याग की प्रेरणा दी। उनका सोच था त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

महात्मा गाँधी एक प्रयोगधर्मी व्यक्ति थे। उनके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यही था कि उन्होंने सदैव आदर्शों को अपने जीवन में व्यवहृत किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जो बात हमारे लिए अच्छी नहीं है उसे हम दूसरों के लिए व्यवहार में कैसे ला सकते हैं। **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'।** विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि **ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है।** बापू का सारा जीवन सादगी और स्वावलम्बन से भरा हुआ था। उन्होंने स्वावलम्बन पर भी कई प्रयोग किए। बापू अहिंसा के आधार पर विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था कायम करना चाहते थे। उन्होंने भारत जैसे विविध वर्णों वाले देश में मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को स्नेह, सहिष्णुता और भ्रातृत्व की नींव पर आधारित करने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास मानव प्रेम और सर्वधर्म समभाव का सन्देश बन गया। संक्षेप में महापुरुष अपने सिद्धान्तों पर सदैव दृढ़ रहते हैं।

उन्होंने भारत ही नहीं विश्व के सभी लोगों के लिए कर्म का मार्ग प्रशस्त किया तथा सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह व शान्ति को मानव कल्याण में व्यवहार्य बनाने का मूल्यवान संदेश दिया। उनके निर्वाण दिवस पर उस युग परिवर्तन के साक्ष्य एवं नवयुग के निर्माता के लिए महाकवि सोहनलाल द्विवेदी द्वारा कही गई सटीक पंक्तियों के साथ उन्हें सादर नमन एवं भावांजलि।

युग परिवर्तक, युग संस्थापक
युग संचालक, हे युगाधार
युग निर्माता, युग मूर्ति तुझे
युग-युग तक, युग का नमस्कार

प्रधानाचार्य (से.नि.), सिविल लाइन्स गढ़ी,
तहसील भवन के पीछे मु.पो. गढ़ी,
जिला-बाँसवाड़ा (राज.) 327022

गाँधी -विमर्श

विश्व की महान विभूति हैं-गाँधी

❒ शंभूलाल अग्रवाल

2 अक्टूबर, 2019 को महात्मा गाँधी के जन्म के 150 वर्ष पूरे हो गए हैं। 1869 में जन्मे गाँधी ने जीवन भर देश की आजादी के लिए संघर्ष किया और 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। आजादी के पश्चात साम्प्रदायिक दंगों को समाप्त करने के लिए खूब प्रयत्न किए। उनके प्रयत्न शायद हमें रास नहीं आए और हमारे में से एक ने उन्हें गोलियों से भून दिया और वो फरिश्ता 30 जनवरी, 1948 को भारत को अलविदा कहकर चल बसा।

आज देश की जानी-मानी हस्तियाँ, उनके समर्थक, विरोधी, नेता और राजनेता उनकी समाधि, राजघाट पर उन्हें पुष्पांजलि देकर, नतमस्तक होकर, हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। गाँधी के जन्मदिन और पुण्यतिथि पर ही लोग राजघाट नहीं जाते हैं बल्कि जब देश में विदेश से कोई बड़ा नेता, राष्ट्राध्यक्ष आता है तो वे भी राजघाट जाकर महान विभूति को पुष्पांजलि देकर यशोगान करते हैं।

हमारे देश में आजादी की लड़ाई लड़ने वाले कई देशभक्त हुए हैं जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर किया है। मेरे विचार से गाँधीजी उनसे किसी भी प्रकार कम नहीं थे। वो दूरदर्शी इन्सान थे, उन्हें मालूम था कि हम भारतवासी शक्तिशाली ब्रिटिश शासन का मुकाबला ताकत से नहीं कर पाएँगे, इसीलिए उन्होंने अहिंसा, सत्य और त्याग का रास्ता अपनाया। उन्होंने उपवास, अनशन और अहिंसक आन्दोलन कर अपने आप को कष्ट देकर दुश्मन के हृदय को परिवर्तन करने का सफल प्रयास किया। गाँधीजी और उनके अनुयायी इस मार्ग पर चलकर आज़ादी प्राप्त करने में सफल भी हुए।

गाँधी ने ज़िन्दगी भर आजादी के लिए प्रयत्न किए, उपवास और अनशन किए, यातनाएँ सही, जेल गए पर आज़ादी के बाद किसी भी पद की तमन्ना नहीं रखी। ऐसा त्यागी, तपस्वी आज़ादी के इतिहास में कौन हुआ है, सोचें। आज दुनिया का कोई भी नेता, राष्ट्राध्यक्ष, धर्म प्रवर्तक ऐसा नहीं है। जिसने विश्व व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त की है। उनके जन्म दिन को, संयुक्त राष्ट्र संघ ने अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, क्या यह हमारे भारत देश के लिए कम गर्व की बात है?

भारत में इनके समर्थक, विरोधी सब उनके नाम का सहारा लेकर मुश्किलों से बचते हैं और समस्याओं का सामना करते हैं। भारत में स्वच्छता अभियान की शुरूआत गाँधी जी के जन्म दिन 2 अक्टूबर से की गई। गाँधी के नाम और काम को स्मरण कर, उनका गुणगान कर उनको आचरण में लाकर विरोधी भी सम्बल पाते हैं और सफल होते हैं।

गाँधी आज हमारे बीच नहीं रहे पर उनके निस्वार्थ भाव से किए गए काम, उनके सत्य, अहिंसा और त्याग के सिद्धांत को हम यदि अपना लेते हैं और उन पर चलते हैं तो देश का हम बहुत बड़ा उपकार करेंगे।

उप प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
मातृ कृपा भवन, बाज़ार पोस्ट ऑफिस
गली, आबू रोड
मोः 9461631908

जयन्ती- विशेष

स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी एवं शैक्षिक विचार

❐ राकेश

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकता में विश्वनाथ दत्त एवं भुवनेश्वरी देवी के घर पर हुआ। पिता विश्वनाथ दत्त वकील थे माता भुवनेश्वरी देवी गृहिणी थी स्वामी विवेकानन्द का बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। बचपन में ही पिता नरेन्द्र को सदाचार की बाते बताते थे- कि ''जब तक हम सत्य तथा धर्म का पालन करते हैं तब तक किसी से डरने की जरूरत नहीं। धमकी के आगे कभी नही झुकना, आत्म गौरव मत छोड़ना एवं जाति के अभिमान के कारण अन्य जातियों से द्वेष नहीं करना। मानव कल्याण के लिए देश भक्ति आवश्यक है। विदेशी, देश को दास बना सकते हैं परन्तु सात्विक प्राचीन संस्कृति का अपहरण नहीं कर सकते।''

इसी प्रकार माता नरेन्द्र को रामायण, महाभारत तथा भारतीय गौरव की कहानियाँ सुनाया करती थी। इन्हीं सब सीखों के कारण नरेन्द्रनाथ दत्त में धीरे-धीरे राष्ट्र-वाद की भावना पनपी थी तथा उन्होंने कहा 'उठो जागो जब तक लगे रहो तब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए'

स्वामी विवेकानन्द का भारत के नव जागरण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके विचारों से ही भारत में राष्ट्रवाद को बल मिला तथा लोगों में राष्ट्रीयता की भावना बढ़ी। स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक राष्ट्रवाद था। स्वामी विवेकानन्द का सन्देश था।

1. साहसी बनो।
2. इस्पात की भुजाएँ बनाओ।
3. भारतीय होने पर गर्व करो।
4. अपनी आत्मा की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को जीत लो।
5. धार्मिक आधार पर ही शक्तिशाली राष्ट्रवाद बन सकता है।
6. बल जीवन है कमजोरी मृत्यु है।

स्वामी विवेकानन्द के संदेश में समाजवाद का तत्व भी मिलता है। उन्होंने कहा कि देश में अभी तक दरिद्रों के लिए कुछ नहीं किया हैं।

समाज का उच्च धनी वर्ग जीवित लाश की तरह है क्योंकि वे दरिद्रों के लिए कुछ नहीं करते। उनका मानना था कि दरिद्र ही भगवान है। राष्ट्र कुटियों में रहता है। इसलिए दरिद्रों की पूजा करनी चाहिए। इसी को दरिद्र नारायण का सिद्धांत कहते हैं। दरिद्रों को चार अभिशापों से दूर रहना चाहिए।

1. पुरोहितो का कर्मकाण्ड।
2. गरीबी।
3. अज्ञानता।
4. शोषण।

स्वामी विवेकानन्द ने स्वतंत्रता का केवल अर्थ भौतिक रूप में नहीं लिया, बल्कि उसमें मानसिक एवं आध्यात्मिक तत्व भी शामिल किए। स्वामी जी की आत्मा भी भारत माता के देदीप्यमान दर्शन से प्रज्वलित थी इसीलिए, उन्होंनें कहा कि जो सामाजिक कुरीतियाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता को रोकती हैं (जैसे जाति प्रथा) उन्हें तोड़ देना चाहिए। समाज में ऐसी संस्थाओं को बल मिलना चाहिए जो मनुष्य की भौतिक व आध्यात्मिक स्वतंत्रता को सुरक्षित व प्रेरित करें। निःसन्देह स्वामी विवेकानन्द ने उस स्वतंत्रता की कल्पना की जिसमें मनुष्य भौतिक रूप से स्वतंत्र होने के अलावा आध्यात्मिक रूप से भी स्वतंत्र हो। यही विचार गाँधी जी के चिन्तन में देखा जा सकता है।

इन विचारों ने हमारे देश की राष्ट्रीयता को नए ढंग से प्रभावित किया विवेकानन्द जी से पूर्व जो देश में राष्ट्रीयता थी और विवेकानन्द जी के बाद एक नई धारा प्रवाहित हुई जो स्वराज्य के रूप में बदल गई। ''प्रो. वी. पी. शर्मा ने लिखा है कि ऐसे समय पर जब राष्ट्र उदासीनता, निष्क्रियता और निराशा से पीड़ित था, उस समय स्वामी विवेकानन्द ने साहस और निर्भिकता के संदेश से देशवासियों को ललकारा।''

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार- स्वामी विवेकानन्द व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति को शिक्षा मानते थे तथा ज्ञान को मनुष्य का आवश्यक अंग मानते थे तथा उनका मानना था कि ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है। शिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति में वह क्षमता उत्पन्न करना है जिसके द्वारा अन्तर्निहित ज्ञान का उदय होता है। स्वामी जी का कथन था कि ''समस्त ज्ञान चाहे वह लौकिक है अथवा आध्यात्मिक मनुष्य के मन में है। बहुधा वह प्रकाशित न होकर ढका रहता है और जब अज्ञानता का आवरण धीरे-धीरे हटता जाता है तो हम कहते हैं हम सीख रहे हैं।'' जब आवरण पूरा हट जाता है तो मनुष्य सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हो जाता है। चकमक पत्थर के टुकड़े में अग्नि के समान ज्ञान मन में निहित है और सुझाव या उद्दीपक ही वह घर्षण है, जो उस ज्ञानाग्नि को प्रकाशित कर देता है। मनुष्य की आत्मा से ही सारा ज्ञान आता है। जो ज्ञान सनातन काल से मनुष्य के भीतर निहित है उसी को वह बाहर प्रकट करता है।

स्वामीजी के अनुसार शिक्षक के गुण- विषय का मर्मज्ञ हो, नवीन विषय की व्याख्या प्रस्तुत करने में समर्थ हो, उसका चित शुद्ध हो, मन में किसी प्रकार द्वेष नहीं हो तथा उसका चरित्र उज्ज्वल हो, व्यवहार सबके प्रति अच्छा हो। स्वामी जी के अनुसार विद्यार्थी वह है जिसमें विद्या ग्रहण की वास्तविक इच्छा हो, मन में परिश्रम की क्षमता रखता हो, उसमें विचार वाणी एवं कार्य की पवित्रता हो।

स्वामी जी के यह विचार कि मनुष्य की आत्मा से ही सारा ज्ञान आता है अत्यन्त क्रान्तिकारी हैं और यह हर्ष का विषय है कि आधुनिक मनोविज्ञान में इस तथ्य की ओर ध्यान दिया जा रहा है। स्वामी जी द्वारा वर्णित शिक्षा

का दूसरा तत्व यह कि अध्यापक विद्यार्थी को शिक्षा देना नहीं वरन् शिक्षा में सहायता पहुँचाना है। यह एक क्रान्तिकारी विचार है ओर इसका आधुनिक शिक्षा पर बहुत बड़ा प्रभाव है।

यह स्वामी विवेकानन्द की अनूठी देन है कि उन्होंने इतनी बड़ी बात को आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व कहा था। शिक्षा का यह तत्व कि बालक स्वयं अपने को शिक्षित करता है इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता और शिक्षक का यह दायित्त्व हो जाता है कि वे बालक को ऐसा वातावरण प्रस्तुत करें जिससे वह अपना विकास स्वाभाविक रूप से कर सके। इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का निम्नलिखित विचार मननीय है ''तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी तरह समर्थ हो, जैसे कि किसी पौधे को बढ़ाने में, पौधा अपना विकास स्वयं करता है उसी तरह बालक भी स्वयं को शिक्षित करता है। हाँ, तुम उसको अपने ढंग से आगे बढ़ने में सहायता दे सकते हो। तुम ही कुछ कर सकते हो, वह निषेधात्मक ही होगा, विधि-आत्मक नहीं। तुम केवल बाधाओं को हटा सकते हो और बस ज्ञान अपने स्वाभाविक रूप से प्रकट हो जाएगा। जमीन को कुछ पोली बना दो ताकि उसमें से उगना आसान हो जाए। उसके चारों और घेरा बना दो और देखते रहो कि कोई उसे नष्ट न कर दे। उस बीच से उगते हुए पौधे की शारीरिक बनावट के लिए तुम मिट्टी, पानी और समुचित प्रकृति के अनुसार जो भी आवश्यक हो ले लेगा। वह अपनी प्रकृति से ही सबको पचाकर बढ़ेगा। बस यही बालक की शिक्षा के बारे में है। बालक स्वयं अपने आपको शिक्षित करता है। शिक्षक ऐसा समझकर कि वह शिक्षा दे रहा है, सब कार्य बिगाड़ डालता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में अवस्थित है, उसे केवल जागृति, केवल प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही शिक्षक का कार्य है। हमें बालकों के लिए इतना करना है कि वे अपने हाथ, पैर, कान और आँखों के उचित उपयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीखें।''

'उठो जागो जब तक लगे रहो तब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए'

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा. विद्यालय उदावास, जिला-झुंझुनूं
मो: 9413547530

शैक्षिक वातावरण निर्माण

विद्यालय वातावरण का मूल्यांकन

❒ **वृद्धि चन्द गोठवाल**

विद्यालय केवल सीमेन्ट, ईंट एवं पत्थर का भवन ही नहीं है वरन यह एक प्रेरणादायक जीवन प्रदान करने वाला वातावरण है। जहाँ बालक को नव-जीवन मिलता है, वह शिक्षा पाकर फलता है और आगे बढ़ता है। जैसे किसी वृक्ष की श्रेष्ठता उसके द्वारा दिए गए फलों के आधार पर होती है, तो विद्यालय की गुणवत्ता और महिमा स्वच्छ वातावरण और अच्छी शिक्षा से आँकी जाती है। प्रायः अभिभावक शिक्षित लोगों से जानकारी लेते हैं कि श्रेष्ठ विद्यालय कौनसा है? मेरे बेटे को प्रवेश दिलाना है। इसका अर्थ है कि विद्यालय के वातावरण से बालक ज्ञानवान एवं चरित्रवान और आदर्श इंसान बन सके। किसी विद्यालय में जाएँ और विद्या मन्दिर होने का आभास नहीं हो तो, उसे कौन पसन्द करेगा? एक ऐसा विद्यालय जहाँ सत्रारम्भ में ही बालकों को प्रवेश सम्बन्धी नो वैकेन्सी का बोर्ड लगा दिया जाता है और एक दूसरा विद्यालय बालकों के प्रवेश हेतु बार-बार विज्ञापन प्रकाशित करे, इसका क्या आशय? कहना होगा विद्यालय के वातावरण से ही छात्र संख्या बढ़ती है और घटती है। विद्यालय का शिक्षण श्रेष्ठ हो, परीक्षा परिणाम गुणवत्ता पूर्ण रहता हो, आधुनिक साधन-सुविधाएँ हो और स्वच्छ सुन्दर वातावरण हो, नैतिकता एवं संस्कारों पर ध्यान दिया जाता हो, अनुशासन अच्छा हो, अभिभावक अपने बालकों को ऐसे विद्यालय में प्रवेश दिलाने का ध्यान लगाता है एवं बालक की पसन्द भी यही होती है। अर्थात् भौतिक एवं मानवीय गरिमामय वातावरण ही विद्यालय का मूल्यांकन है।

शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों को विद्यालय वातावरण को पवित्र बनाने में योगदान करना चाहिए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक समुदाय को शिक्षा प्रेमियों, भामाशाहों, जन-प्रतिनिधियों से आवश्यक सहयोग हेतु सम्पर्क एवं प्रयास करना चाहिए। विद्यालय के विकास एवं वातावरण को सुन्दर एवं प्रगतिशील बनाने में विद्यार्थी शिक्षक और अभिभावक सम्बन्ध आवश्यक और महत्त्वपूर्ण साबित होता है। मुझे तो उस प्रधानाध्यापक का आज भी स्मरण होता है और उनके स्वभाव से प्रेरणा भी मिलती है, जो नित्य विद्यालय की साफ-सफाई पर ध्यान लगाते थे। जहाँ कहीं दीवारों पर जाले अथवा गन्दगी एवं रंग-रोगन दिखता तो तत्काल साफ कराते। प्रधानाध्यापक की इस मनोवृत्ति एवं आदत से पुस्तकालय, ऑफिस, प्रयोगशाला, प्रार्थना स्थल, विद्यालय के प्रांगण स्वस्छता का परिचय देते। किसी व्यक्ति विशेष के कहने से नहीं, वरन विद्यालय वातावरण से सब नागरिक प्रभावित होने चाहिए। विद्यालय के मूल्याँकन की यही नींव है।

शिक्षण कार्य भी विद्यालय वातावरण की प्रशंसा का अभिन्न अंग है। विद्यालय की छवि में शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। नकारात्मक दृष्टिकोण एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के अभाव में विद्यालय का वातावरण आलोचना का शिकार हो जाता है। विद्यालय का प्रत्येक कार्यक्रम वातावरण को इंगित करना है। संस्कार एवं नैतिक शिक्षा के सर्वांगीण विकास में कर्त्तव्यनिष्ठा मुख्य होती है। जब समूचा राष्ट्र स्वच्छता अभियान में जुटा है तो शिक्षण संस्थाओं की भूमिका चहुँओर की छवि को निखारने में अत्यावश्यक है।

निष्कर्ष यह है कि विद्यालय चाहे प्राथमिक स्तर का हो अथवा उच्च शिक्षा का तथा ग्रामीण क्षेत्र का हो या शहरी, मानवीय दृष्टिकोण द्वारा बालकों को स्वच्छ वातावरण की प्रेरणा देना चाहिए। कहना होगा विद्यालय का वातावरण श्रेष्ठ है तो निःसन्देह शिक्षा का स्तर बढ़ेगा एवं राष्ट्र मजबूत होगा। यही सच्चा मूल्याँकन है।

पूर्व व्याख्याता
पो. कपासन, जि. चित्तौड़गढ़ (राज.) 312202
मो. 9414732090

हमारा संविधान

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के संविधान पर विचार

❒ सूर्य प्रताप सिंह राजावत

राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के सभापति और विभिन्न समितियों-नियम समिति, संचालन समिति, वित्त और कर्मचारी, राष्ट्रीय ध्वज के लिए तदर्थ समिति के अध्यक्ष थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 1962 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उनके जन्म दिवस को भारत में अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाया जाता है। **हम भारत के लोगों द्वारा संविधान को 26 नवम्बर 1949 को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसमर्पित किया गया।**

26 नवम्बर को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान पर अपने विचार रखे जो कि संविधान की आत्मा, सार व प्रारूप में शब्दों के चयन को समझने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनके विचारों के महत्त्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं।

सबसे पहला प्रश्न यह है कि यह **संविधान किस श्रेणी** का है। मैं स्वयं उस श्रेणी को कोई महत्त्व नहीं देता हूँ जो इस संविधान को दी जाएगी। चाहे आप उसे फेडरल संविधान कहें या एकात्मक, शासन तंत्र का संविधान कहें या और कुछ कहें। जब तक संविधान हमारे प्रयोजनों की पूर्ति करता है तब तक इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है। हमारे लिए यह कोई बन्धन नहीं है कि हम एक ऐसा संविधान रखें जो संसार के संविधानों की ज्ञात श्रेणियों के पूर्णतया अनुरूप हो। हमें अपने देश के इतिहास के कुछ तथ्यों को लेना पड़ेगा और इतिहास के तथ्यों जैसी इन वास्तविकताओं का इस संविधान पर कोई कम प्रभाव नहीं पड़ा है।

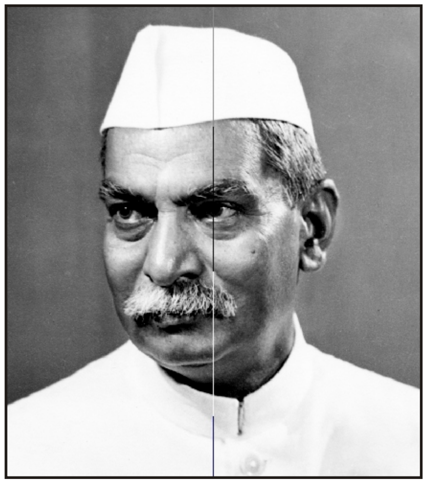

हम एक **गणराज्य** बना रहे हैं। भारत में प्राचीन काल में गणराज्य थे, पर यह व्यवस्था 2000 वर्ष पूर्व थी या इससे भी अधिक समय पूर्व थी और वे गणराज्य बहुत छोटे-छोटे थे। जिस गणराज्य की हम अब स्थापना कर रहे हैं उस गणराज्य जैसा गणराज्य हमारे यहाँ कभी नहीं था, यद्यपि उन दिनों में भी और मुगल काल में भी ऐसे साम्राज्य थे जो देश के विशाल भागों पर छाये हुए थे। इस गणराज्य का राष्ट्रपति एक निर्वाचित राष्ट्रपति होगा। हमारे यहाँ ऐसे बड़े राज्य का निर्वाचित मुखिया कभी नहीं हुआ जिसके अन्तर्गत भारत का इतना बड़ा क्षेत्र आ जाता है और यह प्रथम बार ही हुआ है कि देश के नागरिक को भी यह अधिकार मिल गया है कि वह इस महान राज्य के राष्ट्रपति या मुखिया के योग्य हो और बने जो आज संसार के विशालतम राज्यों में गिना जाता है।

हमने **वयस्क मताधिकार** की व्यवस्था की है जिसके द्वारा प्रान्तों में विधान-सभाओं और केन्द्र में लोक सभा का निर्वाचन होगा। कुछ लोगों ने इस बात के प्रति संदेह किया है कि क्या वयस्क मताधिकार बुद्धिमानी की बात होगी। यद्यपि मैं इसे एक ऐसे प्रयोग के रूप में देख रहा हूँ जिसके परिणाम के सम्बन्ध में आज कोई भी व्यक्ति भविष्यवाणी नहीं कर सकता है पर मैं इससे आश्चर्य चकित नहीं हुआ हूँ। मैं एक

ग्रामीण व्यक्ति हूँ और यद्यपि अपने कार्य के कारण मुझे बहुत अधिक समय तक नगरों में रहना पड़ा है परन्तु मेरी जड़ अब भी वहीं है। अत: मैं उन ग्रामीण व्यक्तियों से परिचित हूँ जो इस महान निर्वाचक-मंडल का एक बड़ा भाग होगा। मेरी सम्मति में हमारे इन लोगों में बुद्धि और साधारण ज्ञान है। उनकी एक संस्कृति भी है जिसको आज की आधुनिकता में रंगे हुए लोग चाहे न समझें, पर है वह एक ठोस संस्कृति। वे साक्षर नहीं हैं और पढ़ने लिखने का मंत्रवत् कौशल उनमें नहीं है। पर इस बात में मुझे रंचमात्र भी सन्देह नहीं है कि यदि उनको वस्तुस्थिति समझा दी जाए तो वे अपने हित तथा देश के हित के लिये उपक्रम कर सकते हैं। कुछ बातों में तो मैं वास्तव में उनको किसी भी कारखाने के श्रमिक से भी अधिक चतुर समझता हूँ जो अपने व्यक्तित्व को खो देता है और जिस यंत्र का उसे संचालन करना पड़ता है न्यूनाधिक रूप से वह उसी यंत्र का एक भाग बन जाता है। अत: मेरे मन में इस बात के प्रति कोई सन्देह नहीं है कि यदि उनको वस्तुस्थिति समझा दी जाए तो वे केवल निर्वाचन की बारीकियों को ही नहीं समझेंगे बल्कि बुद्धिमानी पूर्वक अपना मत भी देंगे और इसलिए इनके कारण भविष्य के प्रति मुझे कोई शंका नहीं है। अन्य उन लोगों के प्रति मैं यह बात नहीं कह सकता हूँ जो नारों द्वारा तथा उनके सामने अव्यावहारिक कार्यक्रमों के सुन्दर चित्र रखकर उन पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करें। फिर भी मेरा यह विचार है कि उनका पुष्ट साधारण ज्ञान वस्तुस्थिति को ठीक-ठीक समझने में उनकी सहायता करेगा। अत: हम यह आशा कर सकते हैं कि हमारे विधान-मंडलों में ऐसे सदस्य होंगे जो वास्तविकता से परिचित होंगे और जो वस्तुस्थिति पर यथार्थ दृष्टिकोण से विचार करेंगे।

संविधान में हमने एक **न्यायपालिका** की व्यवस्था की है जो स्वाधीन होगी। उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों को कार्यपालिका के प्रभाव से मुक्त करने के लिए इससे अधिक कुछ और सुझाव देना कठिन है। अवर न्यायपालिका को भी किसी बाह्य प्रभाव से मुक्त रखने का संविधान में प्रयास किया गया है। हमारा एक अनुच्छेद राज्य की सरकारों के लिए कार्यपालिका के कृत्यों को न्यायिक कृत्यों से पृथक करने के विषय को प्रस्तुत करने के कार्य को सरल कर देता है और उस दण्डाधिकारी न्यायालय को, जो आपराधिक मामलों पर विचार करता है, व्यवहार-न्यायालयों के आधार पर लाने के कार्य को सरल कर देता है।

कुछ विशेष विषयों को निपटाने के लिए हमारे संविधान में कुछ स्वाधीन अभिकरणों की योजना की गई है। अत: इसमें दोनों संघ और राज्यों के लिए लोक सेवा आयोगों की व्यवस्था की गई है और इन आयोगों को स्वतंत्र आधार पर रखा है जिससे कि कार्यपालिका से प्रभावित हुए बिना ये अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर सकें।

एक और स्वाधीन प्राधिकारी **नियंत्रण-महालेखा परीक्षक** है जो हमारी वित्त व्यवस्था की देखभाल करेगा और इस बात पर ध्यान रखेगा कि भारत या किसी भी राज्य के आगमों के किसी अंश का बिना समुचित प्राधिकार के किसी प्रयोजनों या मदों के लिए उपयोग न हो और जिसका यह कर्त्तव्य होगा कि वह हमारे हिसाब-किताब को ठीक रखे।

इस संविधान की दो अनुसूचियों में अर्थात् 5 और 6 अनुसूचियों में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण के लिए विशेष उपबन्ध रखे गए हैं। आसाम को छोड़कर अन्य राज्यों की जनजातियों और जनजाति-क्षेत्रों के विषय में जनजाति मंत्रणादात्री परिषद् के द्वारा जन-जातियाँ प्रशासन पर प्रभाव डाल सकेगी। आसाम की जनजातियों के और जनजाति क्षेत्रों के विषय में जिला परिषदों और स्वायत्तशासी प्रादेशिक परिषदों के द्वारा उनको अधिक व्यापक शक्तियाँ दे दी गई हैं। राज्य मंत्रालयों में एक मंत्री के लिए भी आगे और उपबन्ध है जिस पर जन-जातियों और अनुसूचित जातियों के कल्याण का भार होगा और एक आयोग उस रीति के बारे में प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा जिसके अनुसार इन क्षेत्रों पर प्रशासन किया जाता है। इस उपबन्ध का बनाना इस कारण आवश्यक था कि जनजातियाँ पिछड़ी हुई हैं और उनको रक्षा की आवश्यकता है और इस कारण भी कि अपनी समस्याओं को सुलझाने की उनकी अपनी ही रीति है और जन-जातिवत् जीवन बिताने का उसका अपना ढंग है। इन उपबन्धों ने उनको पर्याप्त संतोष प्रदान किया है। संघ और राज्यों के प्रशासी तथा अन्य कार्यों

24 जनवरी, 1950 का भी ऐतिहासिक महत्त्व

प्रथम महत्त्व-*डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने निर्णय लिया था कि जन-गण-मन और वन्देमातरम् को मिलेगा समान सम्मान और स्थान।*

द्वितीय महत्त्व-*संविधान के हिन्दी संस्करण का सभापति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा प्रमाणीकरण।*

तृतीय महत्त्व-*भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का निर्वाचन।*

चतुर्थ महत्त्व-*भारतीय संविधान सभा के माननीय सदस्यों ने हस्तलिखित संविधान, हिन्दी और अंग्रेजी की दो प्रतियों पर हस्ताक्षर किए। हस्तलिखित संविधान को आचार्य नंदलाल बोस ने अपनी कला से सजाया था। कला में भारतीय सभ्यता का चित्रण है।*

मूल संविधान में वैदिक काल के गुरुकुल का दृश्य रामायण से श्रीराम व माता सीता और लक्ष्मण जी के वनवास से घर वापस आने का दृश्य, श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरूक्षेत्र में दिए गए गीता के उपदेश के दृश्यों को दर्शाया गया। इसी प्रकार गौतम बुद्ध व महावीर के जीवन, सम्राट अशोक व विक्रमादित्य के सभागार के दृश्य मूल संविधान में मिलते हैं। इसके अलावा अकबर, शिवाजी, गुरुगोविन्द सिंह, टीपू सुल्तान और रानी लक्ष्मीबाई के चित्र भी मूल संविधान में है। स्वतंत्रता संग्राम के दृश्य को महात्मा गाँधी की दाण्डी मार्च से दर्शाया है। इसी प्रकार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का चित्र मूल संविधान में राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा भारत माता को आजाद कराते हुए के प्रयास का चित्रण मूल संविधान में मिलता है।

के सब रूपों में संघ और राज्यों में परस्पर शक्ति तथा प्रकार्यों के विभाजन संबंधी विषय को इस संविधान में बड़े विवरणपूर्ण ढंग से लिया गया है।

उन समस्याओं में से एक समस्या जिनके सुलझाने में संविधान सभा ने बहुत समय लिया देश के राजकीय प्रयोजनों के लिए भाषा सम्बन्धी समस्या है। यह एक स्वाभाविक इच्छा है कि हमारी अपनी भाषा होनी चाहिए और देश में बहुत सी भाषाओं के प्रचलित होने के कारण कठिनाइयों के होते हुए भी हम हिन्दी को अपनी राज भाषा के रूप में स्वीकार कर सके हैं जो एक ऐसी भाषा है जिसे देश में सबसे अधिक लोग समझते हैं। जब हम यह विचार करते हैं कि स्विट्जरलैंड जैसे एक छोटे से देश में तीन राजभाषाओं से कम राजभाषा नहीं हैं और दक्षिणी अफ्रीका में दो राजभाषाएँ हैं तो मैं इस विनिश्चय को एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण विनिश्चय के रूप में देखता हूँ। देश को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने के दृढ़ निश्चय की ओर सुविधा-क्षमता की भावना इस बात से प्रकट होती है कि वे लोग जिन की भाषा हिन्दी नहीं है उन्होंने स्वेच्छापूर्वक इसे राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया है। अब भाषा के आरोपण करने का प्रश्न ही नहीं है। अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी और मुस्लिम राज्य में फारसी कचहरी और राज की भाषाएँ थी। यद्यपि लोगों ने इन भाषाओं का अध्ययन किया और उनमें विशेष योग्यता प्राप्त की, पर कोई यह दावा नहीं कर सकता है कि उनको इस देश के अधिकांश लोगों ने स्वेच्छापूर्वक ग्रहण किया। अपने इतिहास में पहली बार इस समय हमने एक भाषा स्वीकार की है जिसका समस्त राजकीय प्रयोजनों के लिए सारे देश में प्रयोग होगा और मुझे यह आशा करने दीजिए कि यह उन्नत होकर एक ऐसी राष्ट्रीय भाषा का रूप धारण करे जिसमें सबको समान रूप से गौरव मिले और इसके साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्र को अपनी निजी भाषा की उन्नति करने की स्वतंत्रता ही नहीं होगी वरन् उसको उस भाषा को उन्नत बनाने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाएगा जिसमें उसकी संस्कृति और परम्परा पवित्र रूप से स्थापित है। व्यावहारिक कारणवश इस अन्तर्कालीन समय में अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य समझा गया और इस विनिश्चय से किसी को निराश नहीं होना चाहिए जिसको व्यावहारिक विचारों के आधार पर किया गया है। अब यह इस समूचे देश का कर्त्तव्य है और विशेष कर उनका जिनकी भाषा हिन्दी है कि इसको ऐसा रूप दें और इस प्रकार से विकसित करें कि यह एक ऐसी भाषा बन जाए जिसमें भारत की सामाजिक संस्कृति की पर्याप्त तथा सुन्दर रूप में अभिव्यक्ति हो सके।

हमारे संविधान की और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसमें किसी अधिक कष्ट के बिना संशोधन किया जा सकता है। यहाँ तक कि संवैधानिक संशोधन भी ऐसे कठिन नहीं हैं जैसे कुछ अन्य देशों में हैं और इस संविधान के बहुत से उपबन्धों का संशोधन तो साधारण अधिनियमों द्वारा संसद कर सकती है और संवैधानिक संशोधनों के लिए निर्धारित प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक नहीं है। इस समय एक ऐसा उपबन्ध रखा गया था जिसमें यह प्रस्थापित किया गया था कि इस संविधान के प्रवृत्त होने के बाद पाँच वर्ष तक इसमें संशोधन करना सरल बना दिया जाए पर इस कारण ऐसा उपबन्ध अनावश्यक हो गया कि इस संविधान में संविधानिक संशोधनों के लिए निर्धारित प्रक्रिया के बिना संशोधन करने के लिए अनेक अपवाद रख दिए गए हैं। समष्टि रूप से हम एक ऐसा संविधान बना सके हैं जो मेरा विश्वास है कि देश के लिए उपयुक्त सिद्ध होगा।

हमारे निदेशक सिद्धान्तों में एक विशिष्ट उपबन्ध है जिसको मैं बहुत महत्त्व देता हूँ। हमने केवल अपने लोगों की भलाई के लिए ही उपबन्ध नहीं बनाए हैं वरन् अपने निदेशक तत्वों में हमने यह निर्धारित किया है कि राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की उन्नति का, राष्ट्रों के बीच न्याय और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाए रखने का, अन्तर्राष्ट्रीय विधि और सन्धि बन्धनों के प्रति आदर बढ़ाने का और अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में मध्यस्थता द्वारा निबटारे के लिए प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा। संघर्षों से जर्जरित संसार में, एक ऐसे संसार में जो दो विश्व युद्धों के संहार के पश्चात् अब भी शान्ति और सद्भावना स्थापित करने के लिए शस्त्रीकरण में विश्वास कर रहा है, यदि हम राष्ट्रपिता की शिक्षाओं का सच्चे रूप में पालन करें और अपने संविधान के इस निदेशक तत्व पर चलें कि यह निश्चित है कि हम अवश्य ही एक महान् कार्य करने में सफल होंगे। इन कठिनाइयों के होते हुए भी जो हमें घेरे हुए हैं और एक ऐसे वातावरण के होते हुए भी जो हमारा मार्ग भली प्रकार रोक सकता है, हे ईश्वर! तू हमें इस मार्ग पर चलने की सद्बुद्धि और शक्ति दे। हम स्वयं अपने में और उस स्वामी की शिक्षाओं में विश्वास रखें जिसका चित्र मेरे सर पर टंगा हुआ है और केवल अपने देश की ही नहीं वरन् इस सारे संसार की आशाओं को हम पूरा करेंगे और केवल अपने देश के ही नहीं वरन् सारे संसार के सर्वोत्तम हितों के प्रति हम सच्चे सिद्ध होंगे।

ऐसी केवल दो खेद की बातें हैं जिनमें मुझे माननीय सदस्यों का साथ देना चाहिए। विधान मंडल के सदस्यों के लिए कुछ अहर्ताएँ निर्धारित करना मैं पसंद करता। यह बात असंगत हैं कि उन लोगों के लिए हम उच्च अहर्ताओं का आग्रह करें जो प्रशासन करते हैं या विधि के प्रशासन में सहायता देते हैं और उनके लिए हम कोई अहर्ता न रखें जो विधि का निर्माण करते हैं सिवा इसके कि उनका निर्वाचन हो। एक विधि बनाने वाले के लिए बौद्धिक उपकरण अपेक्षित हैं और इससे भी अधिक वस्तुस्थिति पर संतुलित विचार करने की स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने की सामर्थ्य की आवश्यकता है और सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि जीवन के उन आधारभूत तत्वों के प्रति सच्चाई हो। एक शब्द में यह कहना चाहिए कि चरित्रबल हो; वाह, वाह। यह संभव नहीं है कि व्यक्ति के नैतिक गुणों को मापने के लिए कोई मापदण्ड तैयार किया जा सके और जब तक यह संभव नहीं होगा तब तक हमारा संविधान दोषपूर्ण रहेगा। दूसरा खेद इस बात पर है कि हम किसी भारतीय भाषा में स्वतंत्र भारत का अपना प्रथम संविधान नहीं बना सके। दोनों मामलों में कठिनाइयाँ व्यावहारिक थीं और अविजेय सिद्ध हुई। पर इस विचार से खेद में कोई कमी नहीं हो जाती है।

अधिवक्ता
सचिव, श्री अरविन्दम सोसाइटी राजस्थान
45, सुरेन्द्रपाल कॉलोनी, न्यू सांगानेर रोड,
सोडाला, जयपुर-302019
मो: 9462294899

मैं दुनिया के सभी महान धर्मों में निहित मौलिक सत्य में विश्वास करता हूँ।
– महात्मा गाँधी

सुभाष जयन्ती

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के शिक्षा विषयक विचार

❒ विजय सिंह माली

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा', 'दिल्ली चलो', 'जय हिन्द' जैसे राष्ट्रवादी नारों से समूचे भारत को प्रेरित करने वाले देशभक्त शिरोमणि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने मातृभूमि की आजादी और उसकी समृद्धि को अपने जीवन का ध्येय बनाकर अहर्निश कार्य किया। सुभाषचन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी 1897 को प्रभावती देवी की कोख से हुआ। इनके पिता का नाम जानकी नाथ बोस था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कटक में हुई। ये जन्मजात देशभक्त थे। भारतीयों को 'ब्लैक मंकी' शब्द का प्रयोग करने वाले अंग्रेजी शिक्षक का प्रतिरोध करने से भी नहीं हिचकिचाए। प्रथम श्रेणी से बीए पास कर पिता की इच्छानुसार इंग्लैण्ड गए जहाँ आइ.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन देशभक्त सुभाष चन्द्र बोस ने आइ.सी.एस. की नौकरी को गुलामी का प्रतीक मानकर उसे ठोकर मार दी और आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े। असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। साईमन कमीशन के भारत आगमन पर विरोध किया। अपनी कार्यशैली से युवाओं में लोकप्रिय हो चुके बोस 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में भी वे पुनः अध्यक्ष चुने गए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के असहयोग व मतभेद के चलते उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी व 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की।

ब्रिटिश शासन ने नेताजी को पहले जेल में फिर घर में नजरबंद किया पर सुभाष बाबू वहाँ से निकल कर अफगानिस्तान-रूस होते हुए जर्मनी पहुँच गए वहाँ अंग्रेजों के विरोधी देशों के सहयोग से भारत की स्वतंत्रता का प्रयास किया। 1943 में वे जापान पहुँचे तथा आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व संभाला। 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के राउन हॉल में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को संबोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। 21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की जिसे

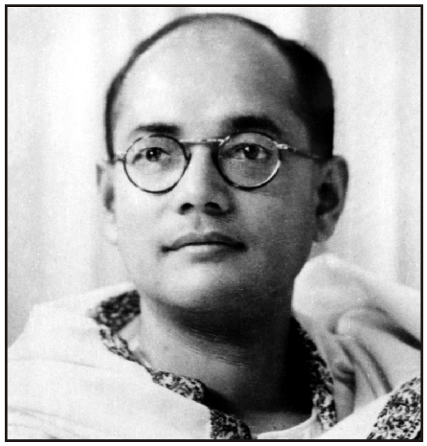

जर्मनी, जापान, इटली सहित कई देशों ने मान्यता दी। जापान ने अपने अधीन अंडमान-निकोबार द्वीप इस 'आजाद हिन्द सरकार' को प्रदान किए। नेताजी ने इन द्वीपों को नए नाम 'शहीद द्वीप' व 'स्वराज द्वीप' नाम दिया। 1944 में आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटिश सेना पर आक्रमण किया। 'कोहिमा युद्ध' में इस फौज के सैनिकों ने अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन किया। आजाद हिन्द फौज भारत में प्रवेश कर चुकी थी। लेकिन दुर्भाग्य से तभी हिरोशिमा-नागासाकी परमाणु विभीषिका के बाद जापान को पीछे हटना पड़ा। आजाद हिन्द फौज का पक्ष कमजोर हो गया। सुभाष बाबू को विमान से जापान जाना पड़ा।

आज सुभाषचन्द्र बोस हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके विचार व कार्य हमारे लिए प्रेरक व अनुकरणीय है। नेताजी ने भारत की आजादी के चिंतन के साथ ही साथ उसकी खुशहाली का भी चिंतन किया था। नेताजी ने भारतीय शिक्षा को लेकर भी समय-समय पर विचार व्यक्त किए। नेताजी एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। उनका शिक्षा शास्त्री रूप खोज का विषय है।

नेताजी के शिक्षा विषयक विचार इस प्रकार है-

1. नेताजी आवश्यक समझते थे कि शिक्षा किसी स्तर की क्यों न हो, इसके माध्यम से छात्रों में उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावना उत्पन्न की जाए। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि विद्यार्थियों में राष्ट्रीय संवेग को दृढ़कर दिया जाय तो देश के सर्वांगीण विकास में उनकी रुचि रहेगी और वे कुछ भी कार्य करेंगे, अन्तः प्रेरणा से करेंगे।
2. देश की शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में नेताजी इस स्थिति को आवश्यक समझते थे शीघ्र देश की निरक्षर जनता को साक्षर बनाया जाए। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं लिखा है-फिर हमारे सामने निरक्षरता की भयानक समस्या है और देश के कई भागों में 90 प्रतिशत तक निरक्षरता है लेकिन सुलझाने के लिए यह कोई कठिन समस्या नहीं है। यदि शासन आवश्यक निधि का प्रावधान करे तो यह समस्या सुलझाई जा सकती है।
3. देश की भावात्मक एकता के लिए नेताजी प्राथमिक शिक्षा के प्रांगण से ही बालक-बालिकाएँ को तैयार करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि इस अवस्था में डाले गए संस्कार गहरे होते है और जीवन में अधिक समय तक वे साथ देते हैं। नेताजी छात्र-छात्राओं को इस प्रकार की शिक्षा देना चाहते थे जिससे नैसर्गिक रूप से उनकी अधिकाधिक क्षमताओं का विकास कर सके। सन् 1925 में मांडले जेल से नेताजी ने कलकत्ता के एक समाज सेवी मित्र हरिचरण बागची को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने प्राथमिक शिक्षा विषयक विचार व्यक्त किए है- इस पत्र के आलोक में हम नेताजी के विचार को इन बिन्दुओं में समाविष्ट कर सकते हैं-

i. बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों का विकास करना ही प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।
ii. प्राथमिक स्तर पर केवल नए तथ्यों की जानकारी ही देनी चाहिए, उन पर सैद्धांतिक ज्ञान नहीं लादना चाहिए।
iii. बच्चों की सृजनात्मकता, मौलिकता और वैयक्तिकता के विकास के लिए यथेष्ट

अवसर देने चाहिए।

iv. बच्चों की रुचियों को जाग्रत करना चाहिए।
बच्चों को अवधान केन्द्रित करने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

v. प्राथमिक शिक्षा की विधियों में शारीरिक श्रम को स्थान देना चाहिए।

vi. बच्चों को नया ज्ञान कहानियों के माध्यम से देना चाहिए।

vii. खेल पद्धति द्वारा बच्चों को सिखाना चाहिए।

viii. शिक्षा देने में सहायक उपकरणों का प्रचुर उपयोग करना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में नेताजी का विचार था कि यह शिक्षा किशोरवय की आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए। वे पाठ्येतर क्रियाकलापों खेलकूद, बागवानी, स्काउटिंग, सैन्य प्रशिक्षण पर बल देते थे उनका कथन था कि छात्रों की शक्तियों का सम्बन्धित विकास होना चाहिए। विद्यार्थियों की एक सभा में अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान कहा था छात्र जीवन में हमें अपने शरीर, चरित्र और बुद्धि को दृढ़ बना लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कह सकता हूँ कि हमारा विकास त्रिकोणात्मक होना चाहिए अर्थात हमारे शरीर, हमारी बुद्धि और हमारे संवेगों का विकास इस प्रकार हो कि हम संतुलित मानव बन जाएं। माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में नेताजी का दूसरा विचार यह था कि छात्रों को सौद्देश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए वे उस स्थिति को अच्छा नहीं समझते थे कि बिना कोई उद्देश्य निर्धारित किए सभी छात्र किताबी ज्ञान प्राप्त करने जाएं और आगे चलकर देश के सामने बेकारी की समस्या खड़ी कर दें। दक्षिण पूर्व एशिया में माध्यमिक शिक्षा का संचालन करते समय नेताजी ने छात्रों के लिए व्यावसायिक परामर्श की व्यवस्था की थी।

नेताजी अधिक लोगों के लिए उच्च शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। वे विश्वविद्यालयी छात्रों से समाज व देश के प्रति उत्तरदायित्व पूर्व व्यवहार तथा विशिष्ट विषयों के वैज्ञानिक अध्ययन की अपेक्षा करते थे। नेताजी पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए या परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के लिए शिक्षा के हिमायती नहीं थे। वे जीवन के लिए और व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के पक्षपाती थे वे समाजसेवा व नेतागिरी के लिए भी प्रशिक्षण की सेवा व नेतागिरी के लिए भी प्रशिक्षण की महत्ता प्रतिपादित करते थे।

नेताजी का मानना था कि शिक्षा नामधारिणी कोई भी व्यवस्था उस समय तक संभव नहीं हो सकती जब तक कि अध्यापक के पास उपयुक्त व्यक्तित्व नहीं है। नेताजी के अनुसार अध्यापक को हर वस्तु अपने विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से देखनी पड़ेगी।

नेताजी ने अपने देश में कैसी शिक्षा हो इसका विचार ही नहीं किया अपितु जब आजाद हिन्द सरकार की गठन किया तो दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में बसे भारतीयों के बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था की इस हेतु आवश्यक प्रशिक्षण देने हेतु अध्यापकों के प्रशिक्षण विद्यालय भी खोले। नेताजी इस केन्द्रित शिक्षा को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में क्रियान्वित करना चाहते थे।

उपर्युक्त विचारों के विहंगावलोकन के बाद हम इस निष्कर्ष पर हैं कि शिक्षा का कोई ऐसा स्तर या स्वरूप नहीं है जिसका चिंतन नेताजी ने नहीं किया। यदि हम नेताजी की 'भारत केन्द्रित' शिक्षा के विचार कणों को प्रस्तावित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थान देकर क्रियान्वित करते हैं तो भारत का भाग्योदय होगा और भारत पुनः विश्वगुरु के रूप में सबका मार्गदर्शन करेगा।

प्रधानाचार्य
रा.बा.उ.मा.वि. सादड़ी (पाली)
मो: 9829285914

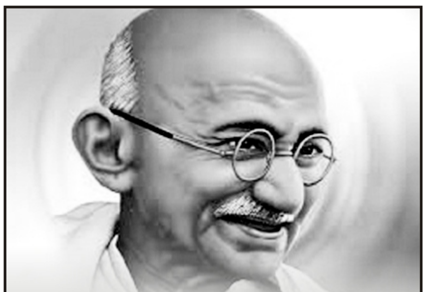

आप मुझे जंजीरों में जकड़ सकते हैं, यातना दे सकते हैं, यहाँ तक की आप इस शरीर को नष्ट कर सकते हैं, लेकिन आप कभी मेरे विचारों को कैद नहीं कर सकते।

-महात्मा गाँधी

गाँधी महाप्रयाण

❒ वेद प्रकाश कुमावत

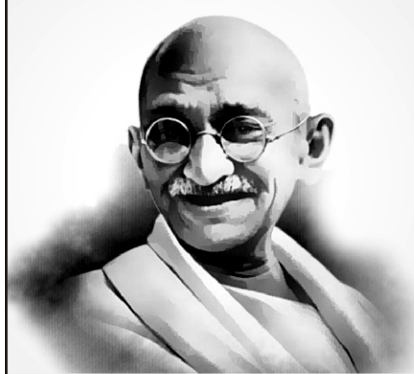

इतिहास का अविस्मरणीय दिवस,
महामानव पर प्राणाघात हुआ।
जन-भावों को खण्डित कर,
विधि-विधान उलट दिया।।
हुआ अस्त असमय,
विश्व क्षितिज पर चमकता रवि।
कराह उठी मानवता,
हुए शोकमग्न जल-थल-नभ-
दिशा सभी।।
विश्व-बंधुत्व के अग्रदूत
मानवता के त्राण,
प्रजा के देव तुम्ही।
अश्रुपूरित नयनों से अर्पित श्रद्धाजंलि,
करते जग के जीव सभी।।
गाँधी की कृतज्ञ ये महामही,
प्राणी यशोगान तुम्हारा गाते हैं।
कलियुग की दिव्य विभूति को,
हो नतमस्तक शीश नवाते हैं।।
होते जो मनुजों में श्रेष्ठ,
लोकदेव वही कहलाते हैं।
देव पूजे जाते स्वधर्म में,
लोकदेव सर्वधर्म में पूजे जाते हैं।।
बुझ न सकी अमर ज्योति,
स्मरण कर्मवीर का दिला रही।
देशप्रेम की ओर उन्मुख कर,
पथ पथिकों को दिखा रही।।

अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-द्वितीय
लूणकरनसर जिला-बीकानेर
मो.नं.-9829485108

विवेकानन्द जयन्ती

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन

❐ चैनाराम सीरवी

'मानव के भीतर अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।'

–स्वामी विवेकानन्द

12 जनवरी 1863 ईस्वी को जन्मे नरेन्द्र दत्त 25 वर्ष की अवस्था में कषाय वस्त्र धारण कर स्वामी विवेकानन्द हो गए। देश में नवजागरण लाने के लिए उन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। देश के पतन के कारणों एवं जीवन के सभी पक्षों और समस्याओं पर गहराई से विचार किया।

स्वामी जी ने शिक्षा को ज्ञान का पर्याय मात्र न मानकर जीवन निर्माण मनुष्य के विकास का एवं चरित्र के गठन का साधन माना है। यदि शिक्षा व जानकारी एक ही वस्तु होती तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े संत और विश्वकोश के विषय बन जाते। उन्होंने कहा कि शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता का विकास है।

विवेकानन्द के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मानव का निर्माण होना चाहिए। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए। जिससे मानव अपना जीवन निर्वाह कर सकें। अतः शिक्षा का अंतिम ध्येय मानव का विकास करना है। यही शिक्षा वास्तविक है।

शिक्षा का संप्रत्यय– स्वामी जी ने शिक्षा का अर्थ बताते हुए लिखा कि 'शिक्षा से मेरा तात्पर्य आधुनिक प्रणाली की शिक्षा से नहीं, वरन ऐसी शिक्षा से है जो सकारात्मक हो और जिसमें स्वाभिमान तथा श्रद्धा के भाव जागे, विचारों में श्रद्धा की झलक दिखाई दें। केवल पुस्तकें पढ़ा देने से कोई लाभ नहीं है। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो। मानसिक शक्ति बढ़े। बुद्धि का विकास हो और देश के बालक आत्मनिर्भर बनें। प्रत्येक व्यक्ति में स्वभाव सहित कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ होती हैं। शिक्षा द्वारा इन विशिष्ट प्रवृत्तियों का विकास हो और अभिव्यक्त करना होता है। स्वामी जी के शब्दों में बालक स्वयं अपने आप को शिक्षित करता है। शिक्षक ऐसा समझकर कि वह शिक्षा दे रहा है। सब कार्य बिगाड़ डालता है। संपूर्ण ज्ञान मनुष्य के अंदर निहित है। केवल प्रबोधन की आवश्यकता है। इसी का नाम शिक्षा है।

चारित्रिक शिक्षा– विवेकानन्द मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसका चरित्र मानते हैं। मनुष्य के चरित्र में विभिन्न प्रवृत्तियों का समावेश है। जैसे–जैसे सुख और दुख उसकी आत्मा के सामने आते हैं। उन पर विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रभाव छोड़ जाते हैं। इन संस्कारों के परिणाम को ही मनुष्य का चरित्र कहा जाता है। भारत में वर्तमान समय में मूल्यों में गिरावट आ रही है। जिसके परिणामस्वरूप चारों तरफ लूटमार, मारपीट, चोरी–डकैती का बोलबाला बढ़ रहा है। इसका कारण भारत के लोग चरित्रवान नहीं आध्यात्मिकता द्वारा चरित्र का गठन किया जा सकता है। इससे व्यक्ति कर्मशील होंगे और देश का विकास होगा।

उन्होंने कहा कि जब ज्ञान का भंडार हमारे अन्दर है तो स्वाभाविक है कि शिक्षा स्वयं ही प्राप्त की जा सकती है। वास्तव में कभी किसी व्यक्ति ने किसी दूसरे को नहीं सिखाया। शिक्षक बालक को शिक्षा नहीं देता बल्कि शिक्षक के मार्गदर्शन से बालक स्वयं सीखता है। यह सीखना आंतरिक और बाह्य प्रेरणा से प्राप्त होता है। आत्मा के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। बालक की आत्मा ही उसकी सबसे बड़ी शिक्षक है। ज्ञान कोई वस्तु नहीं है जो शिक्षक के द्वारा बालकों को दिया जा सके। ज्ञान अनुभव और क्रिया के साथ–साथ बढ़ता है। समाज की कोई ऐसी समस्या नहीं है जो शिक्षा द्वारा हल न हो जाए।

बालक पर अनेक संस्कार पड़ते हैं जो बाद में उसकी आदत बन जाते हैं। आदत ही स्वभाव बन जाता है। सभी बुरी आदतें अच्छी आदतों द्वारा समाप्त की जा सकती हैं। विवेकानन्द ने कहा कि हमेशा अच्छे कार्य करो और मन में नैतिक विचार करो। कमजोर संस्कार व निम्न संस्कार इसी से कम किए जा सकते हैं। स्वामी जी की नैतिक शिक्षा कभी एकांगी न होकर पूर्णतया समग्रात्मक थी। जो शारीरिक शिक्षा, नैतिक मूल्यों की शिक्षा आदि अध्यात्म पर आधारित रही क्योंकि मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में शक्तिशाली व्यक्ति ही अपनी सही दिशा तय करने में सक्षम होता है।

बालक स्वयं शिक्षा– शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी प्रकार असमर्थ हो जैसे कि किसी पौधे को बढ़ाने में। पौधा अपनी प्रकृति का विकास अपने आप ही कर लेता है। उसी प्रकार बालक स्वयं अपने को शिक्षित करता है। शिक्षा का कर्तव्य उनको अवसर प्रदान करना। उनके मार्ग में आई समस्याओं का निराकरण करना। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह इस प्रकार का वातावरण बनाए जिससे बालक अपने विवेक और इंद्रियों की सहायता से संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। शिक्षक को यह भी नहीं समझना चाहिए कि वह बालक को शिक्षा दे रहा है। उसके द्वारा यह समझना एक बड़ी भूल है क्योंकि जब तक बालक की रुचि शिक्षा प्राप्त करने की नहीं है तो उसे शिक्षक शिक्षा नहीं दे सकता। शिक्षक को यह सोचकर शिक्षा देनी चाहिए कि बालक की अंतरात्मा में समस्त ज्ञान निहित हैं। केवल आवश्यक है उसकी अंतरात्मा को जाग्रत करने में उसका सही मार्गदर्शन करने की यही शिक्षक का कर्तव्य है कि बालकों के इंद्रियों का उचित मार्गदर्शन करे।

वैज्ञानिक शिक्षा– विवेकानन्द ने शिक्षा की सूक्ष्मता के ऊपर भी अपने विचार व्यक्त किए। इनके अनुसार हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो। बुद्धि का विकास हो। बालक अपने पैरों पर स्वयं खड़ा हो सके। इसके लिए आवश्यकता है कि हम विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्र होकर अपने निज के ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन करें। हमें तकनीकी शिक्षा के साथ–साथ उद्योगों पर आधारित शिक्षा भी प्राप्त करनी होगी। जिससे हम स्वावलंबी बन सकें। दुख के समय के लिए थोड़ा धन भी एकत्र कर सकें।

भाषा की समस्या वर्तमान समय की मुख्य समस्या है। विवेकानन्द जी अंग्रेजी भाषा की उपयोगिता स्वीकार करते हैं। वे भारतीय भाषाओं की उपेक्षा के घोर विरोधी थे। अंग्रेजी भाषा के साथ भारत की अन्य भाषाओं विशेषतः संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। स्वामी जी के साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने विज्ञान की शिक्षा के लिए अंग्रेजी की महत्ता स्वीकार की। विज्ञान के ज्ञान के लिए अंग्रेजी आवश्यक है क्योंकि कुछ ऐसे तकनीकी शब्द होते हैं कि उनका हिन्दी रूपांतरण ठीक नहीं बैठता। उनका कहना था कि वैज्ञानिक अध्ययन में अंग्रेजी की महत्ता स्वीकार होगी क्योंकि जो भी वैज्ञानिक कार्य हो रहे हैं उनकी भाषा अंग्रेजी है। अतः सामान्यजन के लिए भी अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिए। इसके साथ अपनी मातृभाषा संस्कृति तथा मानवीय मूल्य का ज्ञान आवश्यक है। जिससे हम अपने को प्रत्येक समाज में समायोजित कर सकते हैं।

विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में उपयोगिता– स्वामी विवेकानन्द ने पाश्चात्य तथा प्राच्य संस्कृतियों के बीच समन्वय स्थापित करने का मार्ग का अनुसरण किया। वह निश्चित रूप से भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के विचारों से ओतप्रोत हैं क्योंकि दोनों पक्षों से ही जीवन का सही विकास होगा। अन्यथा जीवन निराशा से आक्रांत होकर नष्ट हो जाता है। संघर्ष की तैयारी में सफलता प्राप्त करता है। रचनात्मक दृष्टि अपनाकर जीवन देश और समाज को आत्मनिर्भर एवं समृद्ध बनाता है। जिससे भारतीय मौलिकता से संबंध समग्रता एकाग्रता अनासक्ति सत्यता मर्यादा, त्याग, कल्याण और परोपकारी की भावना सन्निहित रहती हैं। वर्तमान युग संक्रांति का युग है संक्रांति काल में भविष्य का स्वरूप निर्धारित होगा। यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो और गौरवशाली भारत का निर्माण हो तो इसमें हमें अपनी शिक्षा समस्या को सुलझाने में नई शिक्षा योजना के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिंतन को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करना चाहिए। उनके सुझावों को अपनाना चाहिए।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. जावाल, सिरोही
मो: 9983449410, 8005733193

हमारे स्वतंत्रता सेनानी

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी विजय सिंह पथिक

❐ रामगोपाल राही

राजस्थान में स्वतंत्रता के लिए जगह–जगह आंदोलन व संघर्ष हुआ था। देश भर में क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध ईंट से ईंट बजा दी थी। राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों तथा सशस्त्र क्रांतिकारियों में विजय सिंह पथिक का नाम अग्रणीय है।

क्रांतिकारी विजय सिंह पथिक जी ने तत्कालीन अंग्रेजों के समर्थकों से जोरदार संघर्ष किया था। वस्तुतः स्वतंत्रता सेनानी पथिक जी ने भोली–भाली प्रदेश की जनता को अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने का साहस प्रदान किया था। पथिक जी की प्रेरणा एवं सहयोग से मेवाड़ के लोग बिजोलिया और बेगूं आंदोलन चला सके थे।

दरअसल संघर्ष कर रहे पथिक जी ने उस समय अपने त्याग से राजस्थान के जनमानस में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। समझा जाता है कि राजस्थान में पथिक जी जन जागृति व चेतना के दूत बनकर प्रकट हुए थे। राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों में कहा जाता है विजय सिंह पथिक का नाम प्रथम व सर्वोपरि है। उत्तर प्रदेश से आए पथिक जी ने शचीन्द्र सान्याल के साथ अपना क्रान्तिकारी जीवन आरंभ किया था। तत्कालीन महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने पथिक जी को अपने दल का सदस्य बनाया था। इस दौरान पथिक जी ने अजमेर के रेलवे वर्कशॉप में नौकरी करते हुए अस्त्र–शस्त्र बनाना, उनकी मरम्मत करना सीख लिया था। यहाँ कई लोगों को उन्होंने संगठन का सदस्य बनाया था। राजस्थान में सशस्त्र क्रांति के क्रम में क्रांतिकारी केशरी सिंह बारहठ, खारवा के ठाकुर गोपाल सिंह, भाई मुकुल बालमुकंद, बलिदानी प्रतापसिंह से संपर्क करके पथिक जी ने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति का सूत्रपात किया। पर कोई कारण रहा कि क्रांति नहीं हो सकी। क्रांति असफल हो जाने पर अंग्रेजों ने इन्हें ठाकुर गोपाल सिंह के साथ टाटगढ़ के किले में नजरबंद कर रखा था।

अंग्रेज हुकूमत चाहती थी, इन्हें गिरफ्तार कर लाहौर भेजा जाए पर अंग्रेजों के षडयंत्र की भनक व पूरी जानकारी का पता पथिक जी को लग गया। ऐसे में पथिक जी अपनी सोची समझी रणनीति से तत्परता से साधु का वेश धारण कर जंगल में निकल गए। वहाँ से पैदल चलते हुए किसी सुरक्षित स्थान खोजते रहे। मगर जहाँ भी रुके वहाँ सुरक्षा खतरे में नजर आई ऐसे में आगे बढ़ते–बढ़ते वे चित्तौड़ के पास ओछड़ी गाँव में रुके इन्होंने यह जगह सुरक्षित मान अज्ञातवास यहीं बिताया।

मेवाड़ के बिजोलिया आंदोलन की गूँज देशभर में थी इन्होंने साधु सीताराम की सलाह पर बिजोलिया आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। उधर सरकारी दमन चक्र भी काफी तेज हो गया। मेवाड़ प्रशासन और सरकार ने पथिक जी को पकड़ने की बहुत कोशिश की मगर पकड़ नहीं सके। आंदोलन सफल रहा।

महात्मा गाँधी के निर्देशानुसार पथिक जी ने राजस्थान केसरी अखबार निकाला मगर स्वतंत्रता सेनानी जमनालाल बजाज के विचार नहीं मिलने से इन्हें यह अखबार बंद करना पड़ा। बाद में पथिक जी ने अजमेर में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की, नवीन राजस्थान नामक अखबार निकाला। बाद में रामनारायण चौधरी, हरी भाई, माणिक्य लाल वर्मा, लादूराम जोशी, प्रेमचंद भील, शोभा लाल गुप्त तथा और भी लोग इनके राजस्थान सेवा संघ में शामिल हुए। इन सक्रिय स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मिलित हो जाने से इनके संगठन की शक्ति काफी बढ़ गई। सिरोही मेवाड़ अलवर तथा बूंदी में हुए आंदोलन इनके नेतृत्व में सफल हुए बिजोलिया आंदोलन में आशातीत सफलता मिली थी। इस आंदोलन में प्रदेशभर में नवीन साहस व नवीन चेतना का संचार हुआ। बाद में बेगू आंदोलन में भी सफलता मिली। संघर्ष में सक्रिय पथिक जी को पकड़ने के लिए सरकार दिन रात अथक प्रयास करती रही। आखिर सरकार ने अपने अथक प्रयासों से पथिक जी को गिरफ्तार कर लिया और पाँच साल के लिए जेल में डाल दिया।

5 साल बाद जेल से छूटने के बाद यह कुछ समय एकाकी रहे। बाद में इन्हें राजपूताना मध्य भारत कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। यह पुनः सक्रिय हुए इसी दौरान नमक सत्याग्रह में सक्रियता पर इन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। पथिक जी का जीवन संघर्षों व जेल में ही गुजरा। बाद में जेल से छूटने पर यह आगरा गए वहाँ से नव संदेश अखबार निकाला। इसके कुछ दिनों बाद ही 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन छिड़ गया। पथिक जी को अपनी कर्म स्थली राजस्थान लौट के आना पड़ा।

दीर्घ संघर्षो के चलते लम्बे संघर्ष के बाद देश स्वतंत्र हुआ। पथिक जी स्वतंत्रता उपरांत कुछ साल ही रहे।

ऐसे कई स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने संघर्ष और त्याग से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। राजस्थान में स्वतंत्रता सेनानियों में कई नाम है जन जागरण करने वाले अर्जुन लाल सेठी, माणक लाल वर्मा, जमनालाल बजाज, गोकुलभाई भट्ट, मांगीलाल, भौगीलाल पांडया, शोभाराम, सागरमल, गोकुल असावा, बालमुकुंद बिस्सा, मोतीलाल तेजावत, कालीबाई, गोपाल सिंह खरवा, रामकरण जोशी, नानूराम शर्मा, केसरी सिंह बारहठ इनके बारे में तो समझा जाता है कि उनका पूरा परिवार ही स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहा। राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों में और भी कई नाम हैं।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
वार्ड-4, पो. लाखेरी, बूँदी (राज.)-323615
मोः 9982491518

तुम्हें अन्दर से बाहर की तरफ विकसित होना है। कोई तुम्हें पढ़ा नहीं सकता, कोई तुम्हें आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुम्हारी आत्मा के अलावा कोई और गुरु नहीं है।

-स्वामी विवेकानन्द

परीक्षा समसामयिक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास

❒ हरीश कुमार वर्मा

बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय के आकर्षक व सुन्दर पर्यावरण एवं भौतिक, शैक्षिक, मानवीय संसाधनों के द्वारा ही संभव है। बालक का मूल्यांकन हम विद्यालय में परीक्षा प्रणाली के द्वारा ही करते है, वह परीक्षा चाहे प्रायोगिक मौखिक व लिखित होती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि बालक को निरन्तर अध्ययशील रहना पड़ता है। परीक्षा के टेस्ट, अर्द्धवार्षिक, प्रायोगिक, प्री-बोर्ड तथा वार्षिक व बोर्ड परीक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करने के बाद हो वह कक्षा दस व बारह उत्तीर्ण कर पाता है। परीक्षा प्रणाली के अलावा कुछ घटक ऐसे है, जो अभिप्रेरणा व मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है, जैसे- शिक्षकों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना है, अभिभावक, समाज के नागरिक एवं घर-परिवार को सकारात्मक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण जो कि समय-समय पर बालकों को प्रभावित व प्रोत्साहित करता है।

नकारात्मक विचार, प्रताड़नाएँ, ईर्ष्या, स्वार्थपरक दृष्टिकोण बालकों के परिणाम में बाधक सिद्ध होते हैं। विद्यालय में कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत प्रायोगिक कार्य सहशैक्षिक पद्धतियों से शिक्षण, पाठ्यक्रम नवाचार क्रियात्मक अनुसंधान एवं नवीन शोध आधारित शिक्षण बालकों को परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए सहायक सिद्ध होता है।

बोर्ड की कक्षाओं में मेरिट स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यालय के शिक्षकों एवं संस्थाप्रधान की प्रमुख भूमिका रहती है। विद्यालय में शिक्षण के अलावा बालक को घर पर नियमित 6 से 8 घण्टे नियमित स्वाध्याय करना अति आवश्यक है। लिखित कार्य, व्यक्तिगत नोट्स तैयार करना, सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी है, ई-पाठ्यक्रम की तैयारी, कक्षा में विशेष शिक्षण आदि घटक बालकों को अपने श्रेणी में विशेष स्थान प्राप्त कराने में सहायक हो सकते है। अतः

इन पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

मेरिट में स्थान प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर गिनी-चुनी संस्थाओं को ही मिल पाता है। यदि प्रत्येक विद्यालय, कक्षा दस व बारह के विद्यार्थियों को उच्चतम श्रेणी व मेरिट में स्थान दिलाने के लिए विशेष प्रयास करे तो निश्चित ही सफलता मिल सकेगी। बालकों को हम कक्षा में, पूर्ण एकाग्रता से शिक्षण कार्य करावें, उसको व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करें, गत वर्षों में बोर्ड के प्रश्न-पत्रों को हल करवाते, समय-समय पर अतिरिक्त कक्षाओं द्वारा शिक्षण कराना, अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके भी बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि की जा सकती है।

मेरिट में स्थान प्राप्ति हेतु 13 सूत्रीय कार्यक्रम-

1. कक्षा 10 व 12 की बोर्ड परीक्षा में मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को स्वयं अपनी नियमित दिनचर्या बनाकर अध्ययन करना चाहिए। अपने अध्ययन को सुव्यवस्थित कर शैक्षिक वातावरण बनाकर 6 से 8 घण्टे स्वाध्याय कर सकें।
2. कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकगण भी अपनी-अपनी कक्षा के सर्वश्रेष्ठ, प्रतिभावान बालकों की सूची बना लेवें और उन्हें व्यक्तिगत रूप से समय-समय

पर मार्गदर्शन प्रदान करे।

3. कक्षा 9 से 11 में वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित होते ही स्वयं संस्थाप्रधान, सर्वोच्च प्राप्तांक लाने वाले बालकों के माता-पिता को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित करे तथा ग्रीष्मकाल में पृथक से अध्ययन हेतु अभिप्रेरित करें।
4. विद्यालय में समस्त विषयाध्यापक भी कठिन विषयों के लिए भी कक्षा 9 व 11 के बालकों को पृथक से उनकी सूची बनाकर कठिनाइयों का निराकरण करें।
5. प्रतिभावान विद्यार्थियों के माता-पिता को, विद्यालय में, प्रार्थना स्थल, पूर्व-जयंती, सार्वजनिक समारोह तथा अभिभावक सम्मेलन में आमंत्रित कर प्रशंसा पत्र प्रदान करें। छात्रों की विभिन्न कठिनाइयों के सम्बन्ध में परस्पर चर्चा कर उन्हें निरन्तर आगे बढ़ाने के लिए सुझाव प्रदान करें।
6. प्रतिवर्ष माह जुलाई या सत्र के प्रारम्भ में चयनित श्रेष्ठ बालकों की सूची बनाकर, उनकी लिखित परीक्षा लेकर आगे की पढ़ाई हेतु सकारात्मक सुझाव एवं स्वाध्याय हेतु अभिप्रेरित भी करें।
7. प्रत्येक विषयाध्यापकों को पाठ की इकाई अध्ययन के पश्चात उस ईकाई से सम्बन्धित, वस्तुनिष्ठ, लघुत्तरात्मक, अतिलघुत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों का निर्माण कर उन्हें, कक्षा में बालकों की सहायता से हल कराया जाना चाहिए।
8. बालकों में प्रश्नों को भली प्रकार समझकर, सटीक एवं प्रभावशाली भाषा में उत्तर देने की कला का विकास करना चाहिए, स्वयं अध्यापक को उदाहरण स्वरूप कुछ प्रश्नों को कक्षा में आदर्श उत्तर के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, ताकि बालक शीघ्र ही अपना मनोबल बढ़ा सके। निबन्धात्मक प्रश्न में प्रत्येक भाग पृथक-पृथक परिच्छेदों में उत्तर देने का अभ्यास छात्रों को कराना चाहिए।
9. प्रत्येक जाँच परीक्षा, अर्द्धवार्षिक परीक्षा, प्री-बोर्ड परीक्षा में मेधावी छात्रों के प्राप्तांकों की समीक्षा कर जिन विषयों में अपेक्षाकृत कम प्राप्तांक है, उन्हें विशेष मार्गदर्शन प्रदान करावे एवं कठिन परिश्रम द्वारा समय-समय पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा स्वयं अध्यापक प्रदान करें।
10. प्रतिभावान चयनित छात्रों को गत 5 वर्षों के बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्रों को हल कराके बिन्दुवार उत्तर लिखने का भी अभ्यास कराना चाहिए ताकि परीक्षा में उत्तर लिखने की कला व तकनीकी का स्वतः विकास हो सकें।
11. प्रतिवर्ष माह जुलाई से ही, कक्षा में प्रतिभावान छात्र/छात्राओं को अपनी उपस्थिति शत-प्रतिशत सुनिश्चित करें। आकस्मिक कारणों से यदि ऐसे छात्र कक्षा में उपस्थित नहीं पाए तो, विषयाध्यापक का दायित्व है कि उन्हें अतिरिक्त समय प्रदान कर, उस अवधि में पढ़ाए गए प्रकरणों को पुनः समझाने का प्रयास करें। क्योंकि बोर्ड परीक्षा में किसी एक प्रश्न को छोड़ देने या उसका गलत उत्तर देने पर, अंक काटे जाते है तथा छात्र की वरीयता भी प्रभावित होती है।
12. प्रतिभावान विद्यार्थियों के घर पर अध्ययन कक्ष में समस्त पाठ्य सामग्री, सामान्य ज्ञान वृद्धि हेतु आवश्यक पुस्तकें, दैनिक समाचार पत्र तथा स्वयं की स्वाध्याय की दिनचर्या लिखित में एक कैलेण्डर के रूप में अंकित करावें। घर के सभी सदस्य एवं विद्यालय के शिक्षक सभी मिलकर बालक को व्यक्तिगत रूप से अभिप्रेरित करें, ताकि स्वयं बालक अपने आप मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए तैयार कर सकें।
13. विद्यालय में संस्थाप्रधान अपने कक्ष में प्रतिभावान बालकों की सूची को प्रदर्शित करें तथा गत 5 वर्षों में जिले में मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले बालकों को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभा से अपने विद्यालय के बालकों को अवगत कराए। साथ ही चर्चा-परिचर्या से बालकों को लाभान्वित करने का प्रयास करें।

यदि आप मेरे पास आकर किसी और की बुराई करते है तो मुझे कोई संदेह नहीं कि आप दूसरों के पास जाकर मेरी भी बुराई करते रहेंगे।

-स्वामी विवेकानन्द

कक्षा 10-12 में मेरिट हेतु कुछ टिप्स

1. पाठ्य पुस्तकों एवं संदर्भ पुस्तकों से बालक स्वयं, पूर्व में ही लिखकर अपने नोट्स तैयार करें।
2. स्वयं का मनोबल बनाए रखें, अतिविश्वास से दूर रहे।
3. समय पर नियंत्रण रखें, परीक्षा में प्रश्न पत्र के 3 घण्टे में समय को आवश्यकतानुसार उत्तर लिखने के लिए पूर्व में ही विभाजन कर लें।
4. स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन, एकाग्रसित एवं परिश्रम पर पूर्ण भरोसा रखें।
5. घर के वातावरण को स्वाध्याय के अनुकूल बनावें।
6. स्वयं का लक्ष्य (टारगेट) बनाकर पूर्व तैयारी प्रारम्भ करें।
7. कठिन विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
8. एकाग्रचित्त होकर, पूर्ण आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई में जुट जाए।
9. चिन्ता नहीं, पढ़ाई करें। असफलता की आशंका का त्याग करें।
10. अपने गुरुजनों से समय-समय पर मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करें। अपनी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें।
11. माता-पिता-अभिभावक की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं बुजुर्गों की मंगल कामनाएँ सदैव, बालक को मेरिट में स्थान दिलाने में लाभान्वित करती है।

उपर्युक्त टिप्स एवं सूत्र लेखक की प्रयोजना है। इसकी क्रियान्विति स्वयं बालक एवं विद्यालय के शिक्षकों की सूझबूझ का परिचायक सिद्ध होगी। अन्य प्रयास भी बालक को मेरिट में स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकेंगे। विद्यालय में कुशल प्रबन्धन प्रशासन व संस्थाप्रधान अपने श्रेष्ठतम प्रयत्नों से संस्था की सौरभ को चहुँओर फैलाने में सार्थक हो सकेगा।

आइए, हम बच्चों के साथ उपर्युक्त टिप्स को शेयर कर उन्हें परीक्षाओं में उत्तम अंक दिलाने में भागीदार बनें।

पूर्व प्राचार्य
15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे, मनवाखेड़ा रोड, हिरणमगरी, सेक्टर-4 उदयपुर (राज.)
मो: 9982045522

परीक्षा समसामयिक

बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें

❒ राजकुमार तोलंबिया

सामान्यतया बोर्ड परीक्षा का नाम सुनते ही बच्चे घबरा जाते हैं। सभी छात्रों में बोर्ड परीक्षा को लेकर चिंता बनी रहती है। बोर्ड परीक्षा कोई ऐसी परीक्षा नहीं, जिसमे आप अपना अच्छा प्रदर्शन ना कर पाए। बस आवश्यकता है शुरू से योजना बनाकर कुछ सामान्य टिप्स अपनाकर आप बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं।

तो आइए आज हम उन सभी बिंदुओं पर चर्चा करेंगे जिनको अपनाकर छात्र आगामी बोर्ड सीबीएसई, आरबीएसई की बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित कर सकेंगे:-

(1) योजना बनाकर संतुलित अध्ययन करें:-अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए योजना बनाकर पढ़ना फायदेमंद रहता है। इसके साथ साथ यह भी तय करें कि पहले किस विषय को या किस टॉपिक को पढ़ा जावे। कठिन टॉपिक को छोटे-छोटे भागों में बाँटकर समझने का प्रयास करें। आवश्यकता हो तो विषय विशेषज्ञों की सहायता भी ले। इससे वे सारे टॉपिक क्लियर हो जाएँगे, जिनसे परीक्षा में अधिकतम प्रश्नों के आने की संभावना हो।

(2) हमेशा सकारात्मक सोच बनाए रखें:-आपके मन में सकारात्मकता या निर्मल भाव रखें ताकि नकारात्मक भाव मन में प्रवेश न कर सकें। यदि नकारात्मक विचार आते हैं तो मन उसी गुथमगुत्थी में उलझा रहता है व पढ़ने में भी मन नहीं लग पाता है। अतः सकारात्मक सोच बनाए रखें, क्योंकि सकारात्मक सोच से अच्छे विचारों की उत्पत्ति होती है। सकारात्मक विचार हमेशा आपको पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करने में मदद करेंगे।

(3) एकाग्रता:-अधिकतम छात्रों की यह शिकायत होती है कि पढ़ते समय उनका मन एकाग्र नहीं हो पाता है।परीक्षा में सफलता के लिए ध्यान को एकाग्र करना ही होगा। यदि आपका ध्यान इधर-उधर की बातों में बँट जाएगा तो आपको एक टॉपिक को तैयार करने में भी काफी समय लग जाएगा। तेज गति से पढ़ने से ध्यान केंद्रित रहता है। पाठ का सारांश पढ़ें। पढी हुई बातों को आंख बंद करके मन में दोहराने का प्रयास करें यानि मनन करें।

(4) महत्त्वपूर्ण एवं अधिक अंक वाले बिंदुओं पर अधिक ध्यान देवें:- वे टॉपिक जिनके बोर्ड परीक्षा में अधिक अंक आने की संभावना हो, उन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यदि अधिक अंक भार वाले टॉपिक की तैयारी की जाए, तो कम समय में तैयारी कर परीक्षार्थी अधिक अंक अर्जित कर सकते हैं।

(5) नियमित तैयारी पर विशेष ध्यान:- यदि आप अच्छी तरह से सभी विषयों की तैयारी करते हैं, तो यह आपके तनाव को काफी कम करता है। यदि आप अपनी तैयारी में नियमितता लाते हैं, तो कम समय में सभी विषयों को कवर किया जा सकता है। यदि आपके पास समय कम हो तो मॉडल प्रश्न पत्रों के माध्यम से तैयारी करना अधिक फायदेमंद रहता है। क्योंकि मॉडल प्रश्न पत्रों के माध्यम से कम समय में अधिकतम पाठ्यक्रम को कवर किया जाकर अधिकतम अंक अर्जित करने में मदद मिलेगी।

(6) लिखने की गति सीमा को बढ़ाना:- पुराने प्रश्न पत्रों को निर्धारित समय में हल करने का प्रयास करें। इससे आप की गति सीमा बढ़ेगी, साथ ही आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा व वास्तविक परीक्षा के दौरान समय प्रबंधन करना आसान हो जाएगा।

(7) जागरूकता के साथ अध्ययन करें:- अधिक पढ़ने मात्र से अधिक अंक प्राप्त हो जाएंगे, यह जरूरी नहीं। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए जागरूक रह कर अध्ययन करना भी आवश्यक हैं। पुराने प्रश्न पत्र एवं मॉडल प्रश्न पत्रों के अध्ययन से प्रश्नों की प्रकृति का पता लगाकर उन प्रश्नों को अच्छे से तैयार करें, जिनके परीक्षा में आने की अधिकतम संभावना हो।

(8)रटने के बजाय समझ कर याद करें:- यदि कोई विद्यार्थी रटने की जगह समझ कर याद करने का प्रयास करता है, तो उसे लंबे समय तक याद रहेंगे। कई बार होता यह है कि छात्र द्वारा रटे हुए सवाल परीक्षा में बदलकर आ जाते हैं,जिनका जवाब रटने वाले छात्रों को समझ में नहीं आता है और वे घबरा जाते हैं। यदि आप समझ कर याद करेंगे तो परीक्षा में उस टॉपिक से संबंधित सभी प्रकार के प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो जाते हैं।

(9) सुबह जल्दी उठने की आदत डालें:- जल्दी उठने की आदत डालोगे तो आपके पास अन्य काम को करने का अतिरिक्त समय मिल जाएगा, जिससे आपके पास अध्ययन हेतु समय में वृद्धि हो जाएगी। वैसे सुबह के समय को अध्ययन के लिए सर्वश्रेष्ठ समय कहा गया है,परंतु बहुत से छात्रों की आदत रात के समय पढ़ने की होती है और बहुत से छात्र दिन में पढ़ाई करते हैं सुबह, शाम व दिन में अपने मूड के अनुसार कभी भी पढ़ सकते हैं जिस समय को आप सहज महसूस करें।

(10) मूल्यांकन:-समय-समय पर अपना मूल्यांकन करते रहे कि आपने जो पढ़ाई की है, वह आपको याद है या नहीं एवं अपनी प्रगति के मूल्यांकन के आधार पर कमजोर विषयों पर अधिक ध्यान दें। जिन विषयों में आपकी पकड़ हैं, उनका भी दोहरान करें उन्हें हल्के में ना लें।

अंत में निम्न कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर परीक्षार्थियों का ध्यान केंद्रित करना चाहूँगा-

1. छात्र बोर्ड परीक्षा को साधारण (स्थानीय) परीक्षाओं की तरह लें।
2. पाठ के सारांश पढ़ें।
3. पूर्व निर्धारित नोट्स से तैयारी करें ।
4. स्पीड से पढ़े ताकि आपकी एकाग्रता बनी रहे।
5. परीक्षा कक्ष में 15 मिनट पूर्व पहुँचने का प्रयास करें।
6. अपना प्रवेश पत्र व परीक्षा में उपयोगी सामग्री अवश्य साथ ले जावें।
7. प्रश्न पत्र को शांत मन से पढ़ें।
8. आपकी लिखावट स्वच्छ व सुंदर हो तथा पठनीय हो।
9. साथ में प्रस्तुतीकरण का ढंग प्रभावी होना चाहिए।
10. आवश्यक एवं सटीक उत्तर देने का प्रयास करें।
11. जल्दबाजी बिल्कुल ना करें, हड़बड़ाहट से बचे, पूरे आत्मविश्वास से प्रश्न पत्र हल करें।
12. सामाजिक विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र के परीक्षार्थी आँकड़ों को अद्यतन कर लें।
13. जीव विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र के परीक्षार्थी डायग्राम एवं रेखा चित्रों का प्रयोग आवश्यकतानुसार करें।
14. लेखाशास्त्र के छात्र कार्यशील टिप्पणी व फुटनोट का प्रयोग अवश्य करें।
15. सामाजिक विज्ञान एवं भूगोल के परीक्षार्थी राजस्थान, भारत एवं विश्व के मानचित्र अच्छे से तैयार कर लें।
16. यदि विद्यार्थी द्वारा रफ कार्य किया जाता है तो उसे काट कर उस पर रफ कार्य अवश्य अंकित करें।

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, मन लगाकर मेहनत करें, सफलता आपके कदमों को चूमेगी। आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

व्याख्याता वाणिज्य
(राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त)
उच्च माध्यमिक विद्यालय बस्सी,
जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)-312022
मो. 9929254777

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2020

1. **हितकारी निधि से चिकित्सा व्यय मद में सहायता प्रदान करने बाबत संशोधित आदेश।**
2. **शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयो में Gandhi 150 logo के उपयोग के सम्बन्ध में।**
3. **निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।**

1. हितकारी निधि से चिकित्सा व्यय मद में सहायता प्रदान करने बाबत संशोधित आदेश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/मा/हिनि/ 28129/ चिकित्सा/2019-20 दिनांक 10.12.2019 ● निदेशक, समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा संकुल, जयपुर ● निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक) ● समस्त डाईट प्राचार्य ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● विषय :- हितकारी निधि से चिकित्सा व्यय मद में सहायता प्रदान करने बाबत संशोधित आदेश।

हितकारी निधि से शिक्षा विभागीय कार्मिकों को चिकित्सा व्यय मद से पूर्व में 5000/- रुपये तक की सहायता नियमों एवं शर्तानुसार प्रदान की जाती रही है, अब इस सहायता राशि को आदेश जारी होने के दिनांक से अधिकतम 20,000/- रुपये निम्न नियमों एवं शर्तों के अनुसार प्रदान की जा सकेगीः-

01 शिक्षा विभागीय कार्मिक जो वर्ष 2018-19 से नियमित अंशदाता है, उन्हें यह सहायता राशि प्रदान की जा सकेगी।

02 शिक्षा विभाग के कार्मिक या उनके आश्रित को असाध्य रोग, गंभीर प्रकृति की बीमारी अथवा लम्बे समय तक चिकित्सालय में भर्ती रहने की स्थिति में सहायता देय होगी।

03 कार्मिक को राज्य सरकार द्वारा नियमों के अनुसार चिकित्सा व्यय पुनर्भरण होने के बाद ऐसी राशि जिसका पुनर्भरण राजकीय नियमों में नही हो सका हो उस राशि में से शेष रही राशि अधिकतम 20,000/- तक की सीमा में सहायता देय होगी।

04 चिकित्सा सहायता प्राप्त करने हेतु कार्मिक को जिस राशि का भुगतान राज्य सरकार के नियमों में नहीं हुआ है, उनके मूल वाउचर, डॉक्टर पर्ची, चिकित्सक द्वारा प्रमाणित हो प्रस्तुत करने होंगे।

05 गंभीर प्रकृति/असाध्य रोग अथवा लम्बे समय तक चिकित्सालय में भर्ती होने का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा।

06 यह लाभ सेवाकाल में एक बार ही देय होगा।

● **उप निदेशक** (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

हितकारी निधि
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी-निधि (राजस्थान शिक्षा विभाग, बीकानेर) से बीमारी पर **वित्तीय सहायता प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र)**

1. कर्मचारी का नाम ....
2. कर्मचारी का पद एवं पदस्थापन स्थान ....
3. कर्मचारी का स्थाई पता ....
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाईल नम्बर ....
   कर्मचारी की Employee ID संख्या
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण
   पासबुक के प्रथम पृष्ठ की प्रति
   (प्रमाणित) या निरस्त चैक ....
6. हितकारी निधि अंशदान वित्तीय वर्ष 2018-19 से
   ई.सी.एस. एवं शिड्यूल की प्रति संलग्न करें।.................
7. रोगी का नाम ....
8. रोगी का कर्मचारी से सम्बन्ध ....
9. रोगी का रोग ग्रस्त होने का स्थान ....
10. रूग्णता प्रमाण पत्र (संलग्न करें) ....
11. चिकित्सालय का नाम जहाँ रोगी का
    ईलाज कराया गया है/चल रहा है। ....
12. रोगी के अस्पताल में रहकर ईलाज कराने की अवधि ....
13. रोगी की परिचर्या पर कुल व्यय ....
14. उक्त व्यय में से कितना व्यय चिकित्सा परिचर्या नियमों के अन्तर्गत प्रतिपूर्ति हुआ। ....
15. चिकित्सक से प्रमाणित विपत्र जिसका नियमों में पुनर्भरण नहीं हुआ हो। (संलग्न करें) ....

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में से कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी-निधि, शिक्षा-विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा यह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर मय पद
एवं कार्यरत स्थान

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय/सी.बी.ई.ओ.) एवं संस्थाप्रधान से अग्रेषित करवाया जाना है

प्रमाणित किया जाता है कि प्रार्थी/प्रार्थिनी द्वारा प्रस्तुत विवरण सही

है इनका हितकारी निधि वार्षिक अंशदान .... बिल संख्या .... दिनांक .... टी.वी. नम्बर .... टी.वी. दिनांक .... द्वारा कटौती की गई है। अतः प्रार्थना पत्र अध्यक्ष, हितकारी-निधि, शिक्षा-विभाग, बीकानेर को सहायता हेतु अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

स्थान :

दिनांक :

हस्ताक्षर जिला शिक्षा अधिकारी/ सी.बी.ई.ओ. (मुख्यालय) (मोहर)	हस्ताक्षर कार्यालयाध्यक्ष/ संस्था प्रधान (मोहर)

2.शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयो में Gandhi 150 logo के उपयोग के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4418(68)/विविध/2018 दिनांकः 18.12.2019 ● संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, संभाग स्तरीय शिक्षा संकुल बीकानेर/जयपुर/अजमेर/कोटा/जोधपुर/उदयपुर/पाली/भरतपुर/चूरू ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक ● विषयः शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयो में **"Gandhi 150 logo"** के उपयोग के सम्बन्ध में। ● प्रसंगः प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग (अनुभाग-1) पत्र क्रमांक प.10 (1)प्रसु/अनु-1/2012 दिनांक 13.11.2019

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती वर्ष के अवसर पर राज्य सरकार से प्राप्त आदेश के क्रम में विभाग के समस्त राजकीय दस्तावेजों यथा सरकारी वेबसाइट, ई-मेल, राजकीय स्टेशनरी, कलेण्डर, सरकारी विज्ञापनों एवं विज्ञापन सामग्री, डिजिटल हस्ताक्षर, अ.शा.पत्रों आदि में **"Gandhi 150 logo"** का उपयोग किया जाना है। यह logo संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट http://gandhi.gov.in. से डाउनलोड/कॉपी कर उपयोग किया जा सकता है।

अतः समस्त सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपने एवं अपने अधीनस्थ समस्त कार्यालयों में समस्त राजकीय दस्तावेजों में **"Gandhi 150 logo"** का उपयोग आवश्यक रूप से सुनिश्चित करें।

● **संयुक्त निदेशक** (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/200 दिनांकः 23.12.2019 ●समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में। ●प्रसंगः समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांकः 13.11.2019, 26.11.2019 एवं 12.12.2019

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक निर्देश पत्रों द्वारा निदेशालय के तत्वावधान में बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' की क्रियान्विति से सम्बन्धित निर्देश प्रेषित कर क्षेत्राधिकार में सुनिश्चित पालना हेतु निर्देशित किया जा चुका है। संदर्भित कार्य योजना में उल्लिखित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री के अन्तर्गत कक्षा-10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षा से सम्बन्धित विषयें के प्रश्न बैंक (बोर्ड पैटर्न के अनुरूप) विभाग की आधिकारिक वेबसाइट (लिंकःhttps://bit.ly/2peFaODE) तथा 'शाला दर्पण पोर्टल' के Home Page पर Circulars TAB पर सहजता से उपलब्ध है। इसी के साथ कक्षा-10 एवं 12 की गत वर्षो की बोर्ड परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की विषयवार उत्तर पुस्तिकाओं की स्केन प्रतियाँ भी उपलब्ध करवाई गई है।

माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा से सम्बन्धित उपर्युक्त अध्ययन/शैक्षिक सामग्री क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षा-2020 में प्रविष्ट होने जा रहे विद्यार्थियों के उपयोगार्थ उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित करें तथा इसका उपयोग सम्बन्धित विषयाध्यापकों द्वारा भी कक्षा शिक्षण के दौरान परीक्षा में बेहतर परिणाम के उद्देश्य से विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ करवाया जाना सुनिश्चित करावें। उक्त क्रम में क्षेत्राधिकार में विभिन्न स्तरों पर अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा अग्रांकित निर्देशों की पालना की सुनिश्चितता करावें:-

1. **PEEO:-** समस्त PEEO पंचायत परिक्षेत्र के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना में प्रदत्त समस्त निर्देशों की पालना हेतु विभाग की आधिकारिक वेबसाइट/ शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्ध शिक्षण/ अध्ययनोपयोगी सामग्री बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के उपयोगार्थ डाउनलोड की जानी सुनिश्चित करेंगे।
2. **CBEO:-** समस्त CBEO क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उक्त सामग्री डाउनलोड कर नियमित उपयोग की सुनिश्चितता हेतु सम्बधित PEEO को तत्काल पाबन्द करेंगे। ब्लॉक क्षेत्राधिकार के विद्यालयों का निरीक्षण कर स्वयं भौतिक रूप से निर्देशों की पालना की वस्तुस्थिति के अनुरूप वांछित कार्यवाही मौके पर ही निष्पादित करेंगे।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना में किसी भी स्तर पर उदासीनता/लापरवाही की स्थिति पाए जाने पर सम्बन्धित के विरुद्ध तत्काल विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की जाए।

● **(हिमांशु गुप्ता)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

माह : जनवरी, 2020	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01-01-2020	बुधवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती		
03-01-2020	शुक्रवार	जयपुर	12	हिन्दी (अनिवार्य)		परीक्षामाला
04-01-2020	शनिवार	उदयपुर	12	भौतिक विज्ञान		परीक्षामाला
06-01-2020	सोमवार	जोधपुर	12	रसायन विज्ञान		परीक्षामाला
07-01-2020	मंगलवार	बीकानेर	12	भूगोल		परीक्षामाला
08-01-2020	बुधवार	जयपुर	12	अंग्रेजी (अनिवार्य)		परीक्षामाला
09-01-2020	गुरुवार	उदयपुर	12	इतिहास		परीक्षामाला
10-01-2020	शुक्रवार	जोधपुर	12	जीव विज्ञान		परीक्षामाला
11-01-2020	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस), कॅरियर डे		
13-01-2020	सोमवार	जयपुर	12	राजनीति विज्ञान		परीक्षामाला
14-01-2020	मंगलवार	उदयपुर	12	हिन्दी साहित्य		परीक्षामाला
15-01-2020	बुधवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	मकर संक्रांति (उत्सव)		
16-01-2020	गुरुवार	बीकानेर	12	अर्थशास्त्र		परीक्षामाला
17-01-2020	शुक्रवार	जयपुर	10	विज्ञान		परीक्षामाला
18-01-2020	शनिवार	उदयपुर	10	गणित		परीक्षामाला
20-01-2020	सोमवार	जोधपुर	12	गणित		परीक्षामाला
21-01-2020	मंगलवार	बीकानेर	12	व्यवसाय अध्ययन		परीक्षामाला
22-01-2020	बुधवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान		परीक्षामाला
23-01-2020	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस-उत्सव		
24-01-2020	शुक्रवार	जोधपुर	10	हिन्दी		परीक्षामाला
25-01-2020	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	गणतंत्र दिवस		
27-01-2020	सोमवार	जयपुर	8	गणित		परीक्षामाला
28-01-2020	मंगलवार	उदयपुर	10	संस्कृत		परीक्षामाला
29-01-2020	बुधवार	जोधपुर	8	हिन्दी		परीक्षामाला
30-01-2020	गुरुवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	शहीद दिवस, बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती-उत्सव		
31-01-2020	शुक्रवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन		परीक्षामाला

● **निदेशक शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर**

शिविरा पञ्चाङ्ग

जनवरी-2020					
रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

कार्य दिवस-28, रविवार-04 (12 जनवरी-बाल सभा, 26 जनवरी-गणतंत्र दिवस), अवकाश-01, उत्सव-06 ● 02 जनवरी-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **04 जनवरी**-सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में), PTM-III का आयोजन। **08 से 10 जनवरी**-राज्य स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (RSCERT)। **12 जनवरी**-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर (रविवार), केरियर डे के उपलक्ष्य में। **15 जनवरी**-मकर सक्रान्ति (उत्सव)। **23 जनवरी**-सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। **25 जनवरी**-सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। **26 जनवरी**-गणतंत्र दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)। **30 जनवरी**-शहीद दिवस (प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन)(महात्मा गाँधी पुण्य तिथि) बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। ● **नोट-1.** द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन-CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

शैक्षिक नवाचार

रसायन विज्ञान : ट्रिक आधारित शिक्षण

❒ बृजेश कुमार सिंह

शैक्षिक नवाचार-1

वर्तमान शिक्षा सत्र 2019-20 नव-सृजन का सत्र है, माननीय शिक्षा मंत्री श्रीमान् गोविन्द सिंह जी डोटासरा एवं हमारे शिक्षा निदेशक महोदय का प्रयास शिक्षा जगत में अधिकतम नवाचारों को सम्मिलित करने का है जिनके माध्यम से शिक्षण कार्य को रोचकतापूर्ण बनाया जा सके ताकि अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो सके। मैं माननीय निदेशक महोदय की मंशा के अनुरूप कई वर्षों से छोटी-छोटी ट्रिक्स रूपी नवाचारों से अध्यापन कार्य करा रहा हूँ जिसके प्रतिफलस्वरूप 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम देने में सफल रहा हूँ, साथ ही गुणात्मक परिणाम भी प्रस्तुत है कुछ सरल ट्रिक्स-

1. जब हम d-block तत्वों की प्रथम श्रेणी [3d श्रेणी] के तत्वों का इलेक्ट्रॉनिक विन्यास करते हैं तो छात्र-छात्राएँ प्रायः गलती करते हैं अतः इस कमी को दूर करने के लिए निम्न ट्रिक्स अपनायी जा सकती है-

सर्व प्रथम 1 से 10 तक अंक लिखें उनमें 4, 9 के अंकों को हटाकर उनके स्थान पर 5 एवं 10 जोड़ें

1 , 2 , 3 , ④̸ , 5 , 6 , 7 , 8 , ⑨̸ , 10

1 , 2 , 3 , 5 , 5 , 6 , 7 , 8 , 10 , 10

[Sc , Ti , V , Cr , Mn , Fe , Co , Ni , Cu , Zn]

यही संख्या 3d कक्षक में आने वाले electrons की संख्या का सूचक है

जैसे- $_{21}Sc=[_{18}Ar]3d^1 4s^2$

1	2	3	5	5	6	7	8	10	10	3d ē
Sc	Ti	V	Cr	Mn	Fe	Co	Ni	Cu	Zn	
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

$_{28}Ni=[_{18}Ar]3d^1,4s^2$

श्रेणी में 4s में शेष e भर दे

($_{18}$Ar एवं 3d में ēs भरने के बाद शेष ē, 4s में भरे जिसमें 1 या 2 electron आते हैं)

2. इसी प्रकार द्वितीय श्रेणी [4d श्रेणी] के संक्रमण तत्वों का विन्यास इसी आधार पर किया जा सकता है-

यह श्रेणी Y से प्रारम्भ होकर Cd तक होती है

इसमें भी 1 से 10 तक अंक लिखकर उसमें से 3 एवं 9 के अंकों को हटाकर 10, 10 के अंकों का समावेश करते हैं।

Ex- 1 , 2 , ③̸ , 4 , 5 , 6 , 7 , 8 , ⑨̸ , 10

1 , 2 , 4 , 5 , 6 , 7 , 8 , 10 , 10 , 10

1	2	4	5	6	7	8	10	10	10
Y	Zr	Nb	Mo	Tc	Ru	Rh	Pd	Ag	Cd
39	40	41	42	43	44	45	46	47	48

किसी भी तत्व को विन्यास करते समय $_{36}$Kr के बाद 4d में ē को उपर्युक्त संख्या के आधार पर भरते हैं, शेष e को 5s में भर देते हैं।

जैसे- Ag का विन्यास

$_{47}Ag=[_{36}Kr]4d^{10},5d^1$

3. संक्रमण तत्वों को तृतीय श्रेणी [5d श्रेणी] तत्वों का विन्यास करते समय भी यही अंक [1से 10 तक] लिखकर 8 का अंक हटाकर 10 का अंक जोड़ते हैं

1 , 2 , 3 , 4 , 5 , 6 , 7 , ⑧̸ , 9 , 10

1 , 2 , 3 , 4 , 5 , 6 , 7 , 9 , 10 , 10

यही अंक 5d कक्षक में ē की संख्या के सूचक है

1	2	3	4	5	6	7	9	10	10
La	Hf	Tq	W	Re	Os	Ir	Pt	Au	Hg
57	72	73	74	75	76	77	78	79	80

जैसे- $_{57}La=[_{54}Xe]5d^1 6s^2$

Hf से 4f कक्षक भी प्रारम्भ हो जाता है

$_{72}HF=[_{54}Xe]4F^{14}5d^2,6s^2$

$_{78}Pt=[_{54}Xe]4F^{14}5d^9,6s^1$ शेष बचे electrons को 6s में भर दें।

4. संक्रमण तत्वों की अन्तिम चतुर्थ श्रेणी (6 d श्रेणी) के तत्वों का इलेक्टॉनिक विन्यास निम्न प्रकार किया जा सकता है-

1 से 10 तक लिखकर 9 के अंक को हटाना है एवं 10 का अंक जोड़ना है।

1 , 2 , 3 , 4 , 5 , 6 , 7 , 8 , ⑨̸ , 10

1 , 2 , 3 , 4 , 5 , 6 , 7 , 8 , 10 , 10

1	2	3	4	5	6	7	8	10	10
Ac	Rf	Db	Sg	Bh	Hs	Mt	Ds	Rg	Uub
89	104	105	106	107	108	109	110	111	112

Ex-$_{89}Ac=[_{86}Rn]6d^1,7s^2$

Rf से पहले ē 5f में आते हैं

$_{104}Rf=[_{86}Rn]5f^{14},6d^2,7s^1$

$5f^{14}$ एवं 6d में electrons भरने के उपरान्त शेष electrons, 7s में भर दें।

शैक्षिक नवाचार-2

1. **फास्फोरस के OXO acid**

फास्फोरस के OXO acid को याद करने में प्रायः छात्र-छात्रा गलती करते है इन्हें याद करने के लिए निम्न युक्ति अपनाई जा सकती है-

HOOPHP इस शब्द में प्रत्येक अक्षर का शाब्दिक अर्थ निम्न है-

हूपएचपी {
H = Hypo
O = Ortho
P = Pyro

H:P:O = 312, 313, 314, 425, 426, 427

HPO [312] = H_3PO_2
313 = H_3PO_3
314 = H_3PO_4
425 = $H_4P_2O_5$
426 = $H_4P_2O_6$
427 = $H_4P_2O_7$

नामकरण में 2 बार us, 1 बार ic, 1 बार us, 2 बार ic के रूप में लिखते हैं। क्षारीयता

H_3PO_2	H	Hypo phosphoric acid	us	1
H_3PO_3	O	Ortho phosphoric acid	us	2
H_3PO_4	O	Ortho phosphoric acid	ic	3
$H_4P_2O_5$	P	Pyro phosphoric acid	us	2
$H_4P_2O_6$	H	Hypo phosphoric acid	ic	2
$H_3P_2O_7$	P	Pyro phosphoric acid	ic	4

शैक्षिक नवाचार-3

HNO_3 के ऑक्सीकारक गुण :- प्रायः धातुओं का ऑक्सीकरण HNO_3 से करते हैं तो प्राय परीक्षार्थियों से गलती होती है सर्वप्रथम HNO_3 का सान्द्र एवं तनु रूप निम्न प्रकार विघटित होता है।

$$2\ HNO_3\,(Conc.) \rightarrow H_2O + 2NO_2 + [O]$$

$$2\ HNO_3\,(Dil.) \rightarrow H_2O + 2NO + 3[O]$$

अधातुओं का ऑक्सीकरण :- (सान्द्र HNO_3 से)

S सल्फर, आयोडीन, कार्बन एवं फास्फोरस का ऑक्सीकरण होता है इन्हें क्रम से C-S I P [सी. सिप] के रूप में लिखते हैं-

C-CO_2, में S-H_2SO_4 में I_2-HIO_3, P_4-H_3PO_4 में ऑक्सीकृत होता है HNO_3 के अणुओं की संख्या के 4,6,10,20 के आधार पर क्रियाएँ पूर्ण करने में सरलता होती है सभी क्रियाओं में NO_2 एवं H_2O उप उत्पाद के रूप में बनते हैं।

$$C + 4\ HNO_3 \rightarrow CO_2 + 4\,NO_2 + 2\,H_2O$$

$$S + 6\ HNO_3 \rightarrow H_2SO_4 + 6\,NO_2 + 2\,H_2O$$

$$I_2 + 10\ HNO_3 \rightarrow 2HIO_3 + 10\,NO_2 + 4\,H_2O$$

$$P_4 + 20\ HNO_3 \rightarrow 4H_3PO_4 + 20\,NO_2 + 4\,H_2O$$

धातुओं का ऑक्सीकरण :- HNO_3 सान्द्र एवं तनु दोनों रूपों में Cu,Ag,Zn,Fe से क्रिया करता है सम्बधित नाइट्रेट बनाता है सान्द्र HNO_3 के साथ NO_2, तनु HNO_3 के साथ NO उप. उत्पाद बनता है परन्तु इनके साथ तनु HNO_3 से NO_2 बनता है।

इनकी क्रियाओं को इस सरल युक्ति द्वारा पूर्ण किया।

तत्व	Conc HNO_3 के अणु	Dil HNO_3 के अणु	Dil HNO_3 के साथ तत्व केअणु
Ag	2	4	3
Cu	4	8	3
Zn	4	10	4
Cr, Al			No Reaction

Ex-

$$Ag + 2\,HNO_3\,(conc) \rightarrow Ag\,NO_3 + NO_2 + H_2O$$

$$3\,Ag + 4\,HNO_3\,(Dil) \rightarrow 3\,Ag\,NO_3 + NO + 2H_2O$$

शैक्षिक नवाचार-4

1. एकक कोष्ठिकाओं को सममिति के आधार पर सात समूहों में वर्गीकृत किया जाता है जिनमें कोष्ठिकाओं की संख्या, विमा की स्थिति एवं कोण के मानों में प्राय परीक्षार्थी गलतियाँ करते हैं उसको दूर करने का सरल उपाय इस प्रकार है

(a) सातों कोष्ठिकाओं को इस प्रकार क्रम से लिखें - घनीय(Gh), हि.समलवांक्ष(Ds), विषम्वांक्ष(V), षट्कोणीय(Sh), त्रिकोणीय(T), एकानताक्ष(A), त्रिनतांक्ष(T)

(b) एकक कोष्ठिका के प्रकारों को क्रम से लिखें

1. आद्य एकक कोष्ठिका 1
2. अन्तः केन्द्रित कोष्ठिका 2 इनकी संख्या प्रत्येक में
3. फलक केन्द्रित कोष्ठिका 3 3241121 के आधार
4. अंत्य/आधार केन्द्रित कोष्ठिका 4 पर रहेगी।

इनकी विमाओ को 1=5, 2=4,3=6,7 के अनुसार लिखें

(c) कोण $[\alpha,\beta,\gamma]$ के मानो को $3\times\alpha=\beta=\gamma=90°$ [3 बार],

$1\times\alpha=\beta=90°,\ \gamma=120°$ $2\times\alpha=\beta=\gamma\neq90°$,

$1\times\alpha\neq\beta\neq\gamma\neq90°$

जैसे-

			विमा	कोण	
1	Gh	3	a=b=c	$\alpha=\beta=\gamma=90°$	3=आद्य,अन्तः,फलक
2	Ds	2	a=b≠c	-do-	2=आद्य,अन्तः
3	V	4	a≠b≠c	-do-	
4	Sh	1	a=b≠c	$\alpha=\beta=90°$, $\gamma=120°$	4=आद्य,अन्तः,फलक,3
5	T	1	a=b=c	$\alpha\beta\neq\gamma\neq90°$	1=आद्य
6	A	2	a≠b≠c	-do-	
7	T	1	a≠b≠c	$\alpha\neq\beta\neq\gamma\neq90°$	

शैक्षिक नवाचार-5

1. संकुलन क्षमता

12^{th} बोर्ड परीक्षा में तीन प्रकार की संरचनाओं में संकुलन क्षमता ज्ञात करवायी जाती है

(A) सरल घनीय संरचना में संकुलन क्षमता

(B) अन्त्य केन्द्रित घनीय संरचना में संकुलन क्षमता

(C) षट्कोणीय निविड संरचना में संकुलन क्षमता

इन तीनों संरचनाओं में संकुलन क्षमता सरलता से निम्न प्रकार निकाली जा सकती है।

(A) **<u>सरल घनीय संरचना में संकुलन क्षमता</u>** :- इस संरचना में

परमाणु की त्रिज्या ⇒ $r = \frac{a}{2}, a = 2r$

घन का आयतन ⇒ $a^3 = (2r)^3 = 8r^3$

सरल एकक कोष्ठिका में 1 परमाणु होता है

अतः आयतन = $\frac{4}{3}\pi r^3$

संकुलन क्षमता= $\frac{4/3\,\pi r^3}{8r^3} \times 100 = \mathbf{52.33\%}$

(B) **<u>अन्त्य केन्द्रित घनीय संरचना में संकुलन क्षमता</u>** :-

(bcc) इस संरचना में

परमाणुओं की त्रिज्या ⇒ $r = \frac{\sqrt{3}}{4}a, a = \frac{4r}{\sqrt{3}}$

घन का आयतन ⇒ $a^3 = (4r/\sqrt{3})^3 = 64r^3/3\sqrt{3}$

इसमें परमाणुओं की कुल संख्या = 2

अतः आयतन = $2\times\frac{4}{3}\pi r^3$

संकुलन क्षमता= $\frac{2\times 4/3\,\pi r^3}{\frac{64r^3}{3\sqrt{3}}} \times 100 = 67.98\%$

(C) **<u>षट्कोणीय निविड संरचना में संकुलन क्षमता</u>** :-

(hcp fcc) इस संरचना में

परमाणु की त्रिज्या ⇒ $r = \frac{a}{2\sqrt{2}}, a = 2\sqrt{2}r$

घन का आयतन ⇒ $a^3 = (2\sqrt{2}r)^3 = 8\times 2\sqrt{2}r^3$

इसमें परमाणुओं की संख्या = 4

गोले का आयतन = $\frac{4}{3}\pi r^3$

अतः आयतन = $4\times\frac{4}{3}\pi r^3$

संकुलन क्षमता= $\frac{4\times\frac{4}{3}\pi r^3}{16\sqrt{2}\,r^3} \times 100 = 74.02\%$

प्राध्यापक (रसायन विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बस्सी, जिला-चितौड़गढ़
मो: 9414800527

आप जैसे विचार करेंगे, वैसे आप हो जाएँगे, अगर अपने आपको निर्बल मानेंगे तो आप निर्बल बन जाएँगे और यदि जो आप अपने आपको समर्थ मानेंगे तो आप समर्थ बन जाएँगे।

-स्वामी विवेकानन्द

मॉर्डन शिक्षा

राज्य शैक्षिक प्राधिकारी संस्था : आर.एस.सी.ई.आर.टी.

❐ **तेजपाल उपाध्याय**

राज्य शैक्षिक प्राधिकारी संस्था-आर.एस.सी.ई.आर.टी. के चारों ओर पर्वतमालाएँ, शिखरों पर बादलों का मुकुट धारण किए और हरीतिमा की चादर ओढ़े सुशोभित है। नीचे की ओर कई छोटी-बड़ी झीले हैं, जो पर्वतमालाओं से आने वाली जल धाराओं को अपने अंक में समेट लेती है। ऊर्जा से परिपूर्ण लहरें जब झीलों में उछल कूद करती है, तो प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है। इसी प्राकृतिक छटा के बीच बसा है, राजस्थान का सुन्दर शहर-उदयपुर। जहाँ स्थापित है, राज्य की शैक्षिक प्राधिकारी संस्था आर.एस.सी.ई.आर.टी. (राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद) जहाँ सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में शैक्षिक विषयों पर चिंतन-मनन होता है, शिक्षा परक विषयों पर अनुसंधान किया जाता है, शैक्षिक नवाचारों पर कार्य होता है। इसी अनुशंषा के आधार पर राज्य सरकार द्वारा राज्य में शैक्षिक परिवर्तन लागू किए जाते हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता युक्त शिक्षा के उन्नयन हेतु 1960 के दशक में (एस.आई.ई.) इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन की स्थापना की गई। इसके पश्चात शिक्षा से संबंधित विभिन्न इकाइयाँ जो भिन्न-भिन्न स्थानों पर चल रही थी को एक छत के नीचे लाने के उद्देश्य से 11 नवम्बर, 1978 को एस.आई.ई.आर.टी. (State Institute of Educational Research and Training) की स्थापना की गई। तत्पश्चात केन्द्र सरकार के मंत्रालय एमएचआरडी (Ministry of Human Resource Development) के निर्देशानुसार एस.आई.ई.आर.टी. का पुनर्गठन 14 अगस्त 2018 को आर.एस.सी.ई.आर.टी. (Rajasthan state Council of Educational Research and Training) के रूप में किया गया।

पुनर्गठन के उद्देश्य

- अनुभव आधारित शिक्षकों व प्रशिक्षकों के पद सृजित होने से प्रभावी क्रियान्वयन व गुणवत्तायुक्त शैक्षिक उन्नयन हो सकेगा।
- वर्तमान कार्यक्षेत्र कक्षा 1 से 8 से बढ़कर पुनर्गठन के पश्चात कक्षा 1 से 12 तक का क्षेत्राधिकार विस्तारित हो जाएगा।
- जिलास्तर पर शैक्षिक कार्य हेतु स्थापित जिलास्तरीय यूनिट (डाइट) का परिषद के साथ बेहतर समन्वय हो सकेगा।
- भारत सरकार से अकादमिक मदों व अन्य सुविधाओं हेतु अधिकतम वित्तीय व तकनीकी सहायता प्राप्त हो सकेगी।

पुनर्गठन की उपयोगिता

- राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता बढ़ेगी।
- राष्ट्रीय स्तर के नीतिगत निर्णय व नीतियों की राज्य स्तर पर

क्रियान्विति की गति बढ़ेगी।

- पुनर्गठन के पश्चात परिषद का सीधा नियंत्रण राज्य सरकार का होगा जिससे परिषद् का सीधा संवाद व पत्राचार हो सकेगा।

परिषद के कार्य एवं दायित्व

- परिषद विद्यालय शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या व मूल्यांकन प्रक्रिया की शैक्षिक प्राधिकारी संस्था के रूप में कार्य करना।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा से कक्षा 12 तक पाठ्यक्रम आधारित सामग्री विकसित करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण एवं सम्बन्धित गतिविधियों का सुचारू रूप से संचालन करना।
- अंतर विभागीय समन्वय स्थापित करना।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की प्रभावी शैक्षिक सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करना।

परिषद के अन्य उत्तरदायित्व

- राज्य सरकार, प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय एवं समग्र शिक्षा के लिए शैक्षिक सलाहकार के रूप में कार्य करना।
- विद्यालय स्तर पर गुणात्मक उन्नयन के लिए प्रमुख नोडल एजेन्सी का कार्य करना।
- अन्य शैक्षिक अभिकरणों को विशेषज्ञ सेवाएँ उपलब्ध कराना।

परिषद की संरचना

- एस.आई.ई.आर.टी. में 9 विभाग थे, जबकि एस.सी.ई.आर.टी. में पुनर्गठन के पश्चात 6 विभाग बनाए गए है, जो निम्न प्रकार कार्य करते है-
- **प्रभाग-1 पाठ्यचर्या सामग्री, निर्माण एवं मूल्यांकन प्रभाग** (Curriculam, material development and evolution) गणित एवं विज्ञान शिक्षण, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, भाषा शिक्षा, मापन एवं मूल्यांकन।
- **प्रभाग-2 शैक्षिक सर्वेक्षण अनुसंधान एवं नीति परिप्रेक्ष्य प्रभाग-**(Education Survey, resarch and policy prospective) नवाचार एवं नीति परिप्रेक्ष्य शिक्षा सर्वेक्षण एवं अनुसंधान
- **प्रभाग-3 व्यावसायिक शिक्षण शिक्षा एवं आधार प्रभाग-** (Professional Education and Foundation) सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षा प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास
- **प्रभाग-4 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सेवा प्रभाग-** (Information and communication Technology services Division) तकनीकी सहायता कम्प्यूटर शिक्षा, दीक्षा पोर्टल, रेडियो-प्रसारण, शाला सिद्धी (यह प्रभाग अजमेर में संचालित है।)
- **प्रभाग-5 सर्वांगीण विकास एवं सामाजिक न्याय प्रभाग-** (Holistic development and social justice Division) समावेशी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, जीवन कौशल क्वालिटी एजुकेशन एवं प्रोजेक्ट सेल।
- **प्रभाग-6 आयोजना प्रबंधन एवं वित्त प्रभाग** (Planning, Management and finance Division) शिक्षा योजना, प्रशासनिक अनुभाग, पुस्तकालय एवं प्रलेख साइबर सिक्योरिटी, डिजिटिलाइजेशन ऑफ कन्टेट।

सहयोग एवं समन्वय- परिषद् विभिन्न अभिकरणों, विभागों व संस्थाओं से निम्न प्रकार समन्वय एवं सहयोग करके प्रभावशाली निर्णय एवं कार्यों की क्रियान्विति करती है।

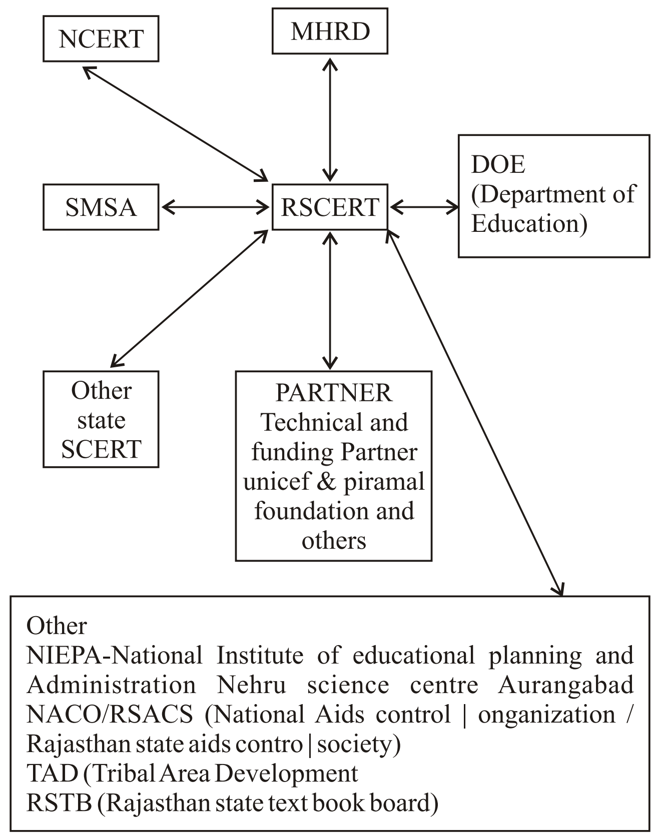

राज्य में आर.टी.ई. 2009 की धारा 29(1) क्रियान्विति की तहत राज्य द्वारा निर्मित नियम-2011 भाग सं.-7 के बिंदु संख्या 22 के अनुसार आर.एस.सी.ई.आर.टी. को राज्य की शैक्षिक प्राधिकारी संस्था घोषित किया गया है। यद्यपि पुनर्गठन की प्रक्रिया जारी है फिर भी परिषद अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजस्थान में शैक्षिक गुणात्मक उन्नयन के लक्ष्य प्राप्ति के लिए कटिबद्ध है।

प्रोफेसर-I
(प्रशासन एवं प्रबंधन)
आर.एस.सी.ई.आर.टी., उदयपुर

शैक्षिक भ्रमण

अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2019-20

(दिनांक 22.10.2019 से 31.10.2019 तक)

❒ **बंशीधर गुर्जर**

अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण का विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक महत्त्व है। बालक विद्यालय की चार दीवारी से निकलकर देश के विभिन्न भागों मैं शैक्षिक व अन्य जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है। इन भ्रमण कार्यक्रमों से बालक का सर्वांगीण विकास होता है। शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्राओं का उद्देश्य विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से जोड़ने, विद्यार्थियों के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना, राज्य एवं देश के परिवेश, भौगोलिक व प्राकृतिक स्थिति, स्थापत्य कला, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थलों की व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध करवाना होता है। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजथान, बीकानेर के पत्रांक दिनांक 09.09.2019 के अनुसार कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों के लिए दिनांक 22.10.19 से 31.10.19 तक अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम किया गया। इस शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम में सम्भागियों के चयन के लिए निर्देश जारी किए गए। जिसके अनुसार छात्र-छात्रा के गत वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत, प्रतियोगिताओं में सहभागिता तथा खेलकूद आदि में भाग लेने वालो को प्राथमिकता से इन भ्रमण कार्यक्रम में वरीयता दी गई।

डॉ राधाकृष्णन शिक्षा संकुल परिसर से जयपुर संभाग के अन्तर राजकीय शैक्षिक भ्रमण शिविर को माननीय शिक्षा राज्य मंत्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर श्री प्रदीप जी बोरड, आयुक्त, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, अतिरिक्त आयुक्त श्री हरभान मीणा, श्री बंशीधर गुर्जर संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर, श्री रतन सिंह जी यादव, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जयपुर तथा शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। इस मौके पर माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदय ने कहा कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालक, बालिकाओं को शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रमों से बच्चों को देश में स्थित विभिन्न स्मारकों, भवनों, ऐतिहासिक इमारतों को देखने का मौका मिलेगा तथा बच्चों में आपस में प्रेम से हिल-मिलकर समूह में रहने की शिक्षा भी मिलेगी, जो वर्तमान समय की आवश्यकता है। शैक्षिक भ्रमण शिविर मे जाने वाले समस्त बालक-बालिकाओं को निर्बाध व सफल यात्रा के लिए माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने शुभकामनाएँ दी।अतिथियों द्वारा दिनांक 22.10.2019 को विद्यार्थियों को यात्रा की शुभकामनाओं देकर यात्रा को शिक्षा संकुल परिसर, जयपुर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया।

इस यात्रा हेतु प्रत्येक जिले से कुल दो विद्यार्थियों (कक्षा 11 व 12 से एक-एक विद्यार्थी) का चयन किया गया था। इस प्रकार राज्य के सभी 33 जिलों से कुल 66 विद्यार्थियों के, राज्य के 09 मण्डलों से प्राप्त हुई, परन्तु स्वास्थ्य एवं अन्य कारणों से 11 विद्यार्थी यात्रा में शामिल नहीं हो सके तथा शेष 55 विद्यार्थियों के द्वारा यात्रा का लाभ लिया गया। यात्रा में सभी 09 मण्डलों से प्रत्येक से एक मण्डल प्रभारी,

यात्रा प्रभारी तथा एक सहायक कर्मचारी सहित कुल 11 कार्मिक भी यात्रा में शामिल हुए। राजस्थान के अतिरिक्त देश के तीन अन्य राज्यों (उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा दिल्ली) के ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के पश्चात् दिनांक 31.10.2019 को सफलतापूर्वक यात्रा पूर्ण हो कर जयपुर पहुँची।

प्रथम दिवस (दिनांक 22.10.2019) माननीय शिक्षा राज्य मंत्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा तथा श्री प्रदीप जी बोरड, आयुक्त, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् द्वारा शैक्षिक भ्रमण की यात्रा के लिए हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया गया। हरी झण्डी के पश्चात बस द्वारा मोती डूँगरी गणेश मन्दिर जयपुर में दर्शन किए जो एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है। एक किले के परिसर में बना यह मन्दिर जयपुर शहर के अच्छे दृश्यों में से एक है। मोती डूँगरी गणेश मन्दिर के पश्चात यात्रा भरतपुर, राजस्थान के लिए बस द्वारा रवाना हुई। सायंकाल गायत्री रिसोर्ट भरतपुर में आवास व्यवस्था की गई।

द्वितीय दिवस (दिनांक 23.10.2019)– योग, प्रार्थना, अल्पाहार पश्चात् यात्रा केवलादेव घना अभयारण्य जो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-11 के समीप स्थित है पहुँची। यह अभयारण्य विश्व प्रसिद्ध पक्षी विहार के लिए विख्यात है, जहाँ सैकड़ों प्रकार के पक्षी प्रतिवर्ष आते हैं। इस अभयारण्य को 1985 में 'विश्व धरोहर' घोषित किया गया है। इसका नाम केवलादेव शिव मन्दिर के नाम पर रखा गया है। भरतपुर के शासक महाराज सूरजमल (1726 से 1736) ने यहाँ अजान बाँध का निर्माण करवाया। विद्यार्थियों ने केवलादेव में मनोरंजन किया एवं लुत्फ उठाया तथा कई जानवरों एवं पक्षियों को देखा व जानकारी हासिल की। यात्रा लोहागढ़ दुर्ग (किला) के लिए रवाना हुई। दुर्ग का निर्माण महाराजा सूरजमल ने 19 फरवरी 1733 ई. में करवाया था। यह भारत का एक मात्र अजेय दुर्ग है। इस दुर्ग को कोई भी नहीं जीत सका। इसलिए नाम लोहागढ़ दुर्ग पड़ा। 1765 ई. जवाहर सिंह इस दुर्ग के शासक थे। 1806 ई में फतेह बुर्ज का निर्माण किया गया। यह

ऐतिहासिक जानकारी विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्धक रही।

भरतपुर पैलेस के संग्रहालय मे 581 पत्थर की मूर्तियाँ, 861 स्थानीय कला और प्राचीन शस्त्र हैं। विद्यार्थियों को प्राचीन संग्रहालय मे पत्थर की मूर्तियों की कलाकारी, पुरानी तोप एवं पीतल की घण्टियाँ देखने को मिली, जो बहुत ही आकर्षित, मनभावन और चिरस्मरणीय लगी।

यात्रा का अगला पड़ाव फतेहपुर सीकरी था। यह उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में स्थित है। सम्राट अकबर ने 1571 में मुगल साम्राज्य की राजधानी के रूप में शहर की स्थापना की थी। यहाँ दिवान-ए-खास, बुलन्द दरवाजा, पाँचमहल, ख्वाबगाह, जोधा बाई का महल, शेख सलीम चिश्ती के पुत्र की दरगाह, शाही

मस्जिद, अनूप तालाब जो कि वर्तमान में आगरा से 41 कि.मी. दूर हैं। फतेहपुर सीकरी का निर्माण मुगल सम्राट अकबर ने कराया आदि दर्शनीय स्थल है। चतुर्दिक पत्थर की बहुत बारीक काम की सुन्दर जाली लगी हुई है। श्वेत पत्थरों में खुदी विविध रंगवाली फूलपत्तियाँ, नक्काशी की कला सर्वोत्कृष्ट हैं। तत्पश्चात् यात्रा वृन्दावन के लिए प्रारम्भ हुई। वृन्दावन में स्थित प्रेम मन्दिर का विद्यार्थियों ने अवलोकन किया। प्रेम मन्दिर वृन्दावन का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मंदिर का शिलान्यास 14 जनवरी 2001 में किया गया। इस मन्दिर का दृश्य अलौकिक एवं यादगार रहा है।

तृतीय दिवस (दिनांक 24.10.2019)– तृतीय दिवस को यात्रा रमणरेती एवं गोकुल धाम हेतु रवाना हुई। यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण ने ग्वाल बालों के साथ गायें चराई और रेत के मैदान में मित्रों के साथ बचपन गुजारा। मथुरा में कृष्ण के जन्म के समय वासुदेव की बेड़ियाँ खुल गई थी तब वासुदेवजी भगवान कृष्ण को गोकुल में नंद राय में छोड़ आए थे। रमणरेती गोकुलधाम के पश्चात् दल आगरा के लिए रवाना हुआ। विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है जिसे आगरा के ताजमहल के नाम से जाना जाता है। आगरे का ताजमहल आज सम्पूर्ण विश्व का ताज बन गया है। ताजमहल को मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की याद में इसका निमार्ण कार्य 1631 ई. में आरम्भ कराया था, करीब 22 वर्ष के बाद 1652 ई. में यह बनकर तैयार

हुआ। ताजमहल सफेद संगमरमर का बना है इसमें चार मीनार है तथा बीच में एक गुंबद है। इसके नीचे शाहजहाँ और मुमताज महल की कब्र है ताजमहल के सामने एक बगीचा बना हुआ है।

चतुर्थ दिवस (दिनांक 25.10.2019)– गोकुल मठ धाम के बाद श्री कृष्ण जन्मभूमि मन्दिर परिसर मथुरा का मुख्य स्थान देखा । भगवान कृष्ण इसके केन्द्र बिन्दु है। श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर जेल कक्षनुमा आकार में बना हुआ है, जिसमें उनके मामा कंस द्वारा उनकी माता देवकी और पिता वासुदेव को कैद करने के बाद भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। कृष्ण जन्म भूमि में स्थित कृष्ण गुफा, गीता भवन एवं झाकियाँ अति सुन्दर है। विद्यार्थी कृष्ण जन्मभूमि को देख कर बहुत हर्षित हुए। कृष्ण जन्मभूमि देखकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस किया। कृष्ण गुफा की अलौकिक झांकियाँ अति सुन्दर एवं मर्मस्पर्शी रही। श्रीकृष्ण जन्म भूमि स्थल देखकर दल को जिमकॉर्बेट, उत्तराखण्ड के लिए रवाना किया गया। जिमकॉर्बेट उत्तराखण्ड की दूरी अधिक होने के कारण रास्ते में रूककर

दोपहर के भोजन का आनन्द लिया तत्पश्चात् यात्रा को आगे के लिए रवानगी दी। रात्रि में विश्राम प्रेमदीप होटल काशीपुर में किया।

पंचम् दिवस (दिनांक 26.10.2019)– काशीपुर से प्रात: भोजन के पश्चात् जिमकॉर्बेट, उत्तराखण्ड के लिए विद्यार्थियों ने प्रस्थान किया। जिमकॉर्बेट, भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान है। यह उत्तराखंड नैनीताल जिले के रामनगर के पास स्थित है। इसका नाम जिमकार्बेट रखा गया। यह एक गौरवशाली पशु विहार है। यह रामगंगा की पातली दून घाटी में 1318.54 वर्ग किमी में बसा हुआ है। जिमकार्बेट व्याघ्र संरक्षित क्षेत्र भी है। कार्बेट टाइगर रिजर्व क्षेत्रों में ही पर्यटन गतिविधि की अनुमति दी जाती है जिससे विविध वन्यजीवों को देखने का मौका मिलता है। कार्बेट नेशनल पार्क में पहाड़ी, घास मैदान, झील आदि है। वन में साल (वृक्ष) पीपल, रोहिणी और आम के पेड़ है। शेर, हाथी, भालू, बाघ, सूअर, हिरण, चीतली, नीलगाय, चीता आदि वन्य प्राणियों की संख्या अधिक है। वन में अजगर, साँप भी

निवास करते हैं। विद्यार्थियों ने इस उद्यान की 25 से 30 किलोमीटर दूरी का सफर जिप्सी में बैठकर आनन्द लिया एवं विभिन्न वन्य जीव को देखकर खुशी जाहिर की। पी.जी. कॉलेज उत्तराखण्ड नैनीताल में सायं के भोजन के पश्चात् हरिद्वार के लिए रवानगी ली। हरिद्वार में दिनांक 26.10.2019 एवं 27.10.2019 को रात्रि विश्राम एवं आवास जोधपुर भवन हरिद्वार में किया।

षष्ठम् दिवस (दिनांक 27.10.2019)– विद्यार्थियों ने गंगा स्नान एवं गंगा मन्दिर के दर्शन किए। भगवान विष्णु के चरणों में प्रकट हुई गंगा जब हरिद्वार में आई, तब वह देवताओं के लिए श्रेष्ठ तीर्थ बन गयी। प्रचलित मान्यता है कि यहाँ धरती पर भगवान विष्णु आए थे, धरती पर विष्णु के पैर पड़ने के कारण इस स्थान को 'हरि की पौड़ी' कहा गया है। हरिद्वार में इसके पश्चात् मनसा देवी मन्दिर के दर्शन हेतु दल रवाना हुआ। हरिद्वार में 'हरि की पौड़ी' में शाम की गंगा आरती बहुत ही आकर्षक होती है विद्यार्थियों ने गंगा आरती देखकर बहुत आनन्द लिया। श्री राम आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार का मुख्य केन्द्र शांतिकुंज है। धार्मिक, आध्यात्मिक गतिविधियों का एक कार्य स्थल है। यहाँ का निमार्ण एवं व्यवस्था सभी श्रेणी के दर्शकों के मन

को मोहित करते हैं। गायत्री चेतना का विश्व विस्तार शांति कुंज से ही होता है। शांतिकुंज की जानकारी विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद है। हरिद्वार गंगा आरती के पश्चात् दीपावली का त्योहार विद्यार्थियों ने जोधपुर भवन में धूम-धाम से मनाया गया। सामूहिक रूप में दीपावली का त्योहार हर्षोल्लास से विद्यार्थियों ने मनाया।

सप्तम् दिवस (दिनांक 28.10.2019)- दिनांक 28.10.2019 को ऋषिकेश के लिए विद्यार्थियों के दल ने रवानगी ली। उत्तराखण्ड में समुद्र तल से 1360 फीट ऊँचाई पर स्थित ऋषिकेश सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। लक्ष्मण झूला, राम झूला, गीता भवन, परमार्थ निकेतन प्रसिद्ध है। गंगा, यमुना, सरस्वती नदी का यहाँ संगम होता है। यहाँ गीता भवन, परमार्थ निकेतन, सत्संग भवन आदि विद्यार्थियों को गाइड के मार्गदर्शन मे जानकारी प्रदान की गई। गाइड द्वारा सभी मन्दिरों के दर्शन एवं विद्यार्थियों को दी गई जानकारी लाभप्रद रही। गीता प्रेस गोरखपुर की एक शाखा है। सायं काल भोजन के पश्चात् ऋषिकेश से देहरादून के लिए प्रस्थान किया।

अष्टम दिवस (दिनांक 29.10.2019)- देहरादून प्रात: चाय नाश्ते के पश्चात् देहरादून घूमने के लिए विद्यार्थियों का दल रवाना हुआ। देहरादून पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। देहरादून चिड़ियाघर को जिसे मालसी डियर पार्क भी कहते हैं। इसमें थ्रीडी थियेटर भी बना हुआ है। फनपार्क में झूले, फिसलन पट्टी एवं कई कार्टून है। कई प्रकार के पक्षी मोर, सन पैरेट, पैरेट, उल्लू, लव बर्डपैरेटस, बजरीगर तोते, शुतुरमुर्ग आदि देखकर विद्यार्थी प्रसन्न हुए। यहाँ मनोरंजन उद्यान मछलीघर भी देखने लायक है। यह उद्यान 25 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर भव्य रूप से फैला हुआ है। धरती के नीचे पानी की धारा बहना और फिर कुछ दूरी पर जाकर प्रकट होना प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यधिक सुन्दर लगता है। यह गुफा चारों तरफ से पहाडियों से घिरी हुई हैं। विद्यार्थियों ने इस गुफा को देखकर प्रसन्नता जाहिर की। सहस्त्रधारा गंधक झरना त्वचा की बीमारियों की चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से थोड़ी दूर पर पहाड़ी के अन्दर प्राकृतिक रूप से तराशी गई द्रोण गुफाएँ हैं। मन्दिर में शिवलिंग एवं गुफा भी बनी हुई है। इसे ही सहस्त्रधारा कहते हैं। बहते हुए झरने का सुन्दर नजारा एवं

आनन्द विद्यार्थियों ने लिया।

नवम् दिवस (दिनांक 30.10.2019)- नई दिल्ली में गोकुल नगर जनपथ कर्नाट पैलेस के पास में संसद भवन है। संसद भवन में भारत की संसदीय कार्यवाही होती है। यह परिसर सजावटी लाल पत्थर की दीवारों तथा लोहे के विशाल दरवाजों से घिरा हुआ है। संसद का निमार्ण 1921-1927 के दौरान किया गया। यह एक विशाल वृत्ताकार भवन है। जिसका व्यास 560 फुट, घेरा 533 मीटर है लगभग छ: एकड़ में फैला हुआ है। संसद भवन में 12 दरवाजें है। केन्द्रीय कक्ष, विशाल वृत्ताकार ढाँचा है यह विश्व के शानदार गुबंदों में से एक है। भारत की संविधान सभा की बैठक (1946-49) इसी कक्ष में हुई थी। लोकसभा, राज्यसभा एवं केन्द्रीय कक्ष को प्रायोगिक तौर से विद्यार्थियों ने जाकर देखा, स्टाफ के सदस्य के द्वारा कक्षों की जानकारी प्रदान की गई। विद्यार्थियों को स्टाफ के द्वारा दी गई जानकारी लाजवाब, ज्ञानवर्धक रही। संसद भवन को देखकर विद्यार्थियों ने खुशी जाहिर की एवं यह भ्रमण यात्रा अविस्मरणीय रहेगी। संसद भवन अवलोकन के पश्चात् राष्ट्रीय पुलिस स्मारक हेतु रवाना किया। राष्ट्रीय पुलिस

मेमोरियल चाणक्यपुरी नई दिल्ली 11 में स्थापित है। डी.आई.जी. पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा विद्यार्थियों को राष्ट्रीय पुलिस स्मारक के बारे में जानकारी प्रदान की गई एवं राष्ट्रीय सेवा की भावना के बारे में जागरूक किया। राष्ट्रीय पुलिस स्मारक में भारत के केन्द्रीय एवं राज्य पुलिस बलों के 34,844 पुलिस कर्मियों को याद करता है, जो देश की आजादी के बाद से राष्ट्रीय सेवा में शहीद हुए है। नई दिल्ली के चाणक्य पुरी क्षेत्र स्थित 6.12 एकड़ में पुलिस स्मारक फैला हुआ है। राष्ट्रीय पुलिस स्मारक बीच में 30 फीट मोनोलीथ स्लेब ग्रेनाइट से 238 टन का बना हुआ है। राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय बहुत सुन्दर अद्वितीय बना हुआ है। जो 5 गैलेरी एवं 1600 वर्ग मीटर में बना हुआ है। शहीद हुए पुलिस केन्द्रीय कर्मियों एवं राज्य के पुलिस सेना के बारे

में विद्यार्थियों को जानकारी मिली। राष्ट्रीय पुलिस स्मारक का भ्रमण कराने से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय सेवा की भावना जाग्रत हो सके। इसी उद्देश्य से विद्यार्थियों को पुलिस स्मारक का भ्रमण कराया गया। इसके पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा छतरपुर भवन दिल्ली में दिनांक 30.10.2019 को रात्रि विश्राम किया गया।

दशम् दिवस (दिनांक 31.10.2019)- दिनांक 31.10.2019 को प्रात: विद्यार्थियो को नाश्ता करवाने के पश्चात् छतरपुर मन्दिर के दर्शन हेतु दल को रवाना किया। इसमें देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित है। मन्दिर का दृश्य अलौकिक था तत्पश्चात् छतरपुर भवन से विद्यार्थियों का दल बस द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में देवनारायण मन्दिर में रूककर विद्यार्थियों को दोपहर का भोजन करवाया गया। विद्यार्थियों ने देवनारायण मन्दिर के दर्शन किए। साय: काल 6:30 पर राजकीय राजस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय बजाज नगर शिक्षा संकुल परिसर में दल पुन: सकुशल लौटा। विद्यालय में सायं काल भोजन एवं रात्रि विश्राम की व्यवस्था की गई। दिनांक 01.11.2019 प्रात: मण्डल प्रभारी के साथ विद्यार्थी सुविधानुसार अपने गन्तव्य स्थान के लिए रवाना हुए।

संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा जयपुर संभाग जयपुर

महिला सशक्तीकरण

आत्मरक्षा की टिप्स

❒ आशा रानी सुमन

देश में महिलाओं पर अत्याचारों का ग्राफ बढ़ता जा रहा हैं। बहुत सी वारदातें हो रही हैं। ऐसी, घटनाएँ घटित हो रही हैं जिससे महिलाएँ स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं। पिछले एक दशक से देश में बालिकाओं और महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधो में तीव्र वृद्धि देखी गई है। इसमे से अधिकांशत: किशोरी बालिकाओं में से 10-14 व 15-19 वर्ष के आयु वर्ग में होती हैं।

अब सवाल उठता है कि हम महिलाएँ स्वयं को कैसे सुरक्षित रखें, स्वयं की रक्षा कैसे करें इस पर मैं कुछ जानकारी व सुरक्षा टिप्स आपको दूंगी। इसके लिए शिक्षा विभाग एवं जिला प्रशासन स्कूलों और कॉलेजों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण दे रहा है फिर भी हमें हमेशा सतर्क रहना होगा।

1. किसी अनजान पुरुष के साथ अकेले में कहीं न जाएं। ऐसे हालात से उन्हें अपने आप से दूर ही रखना चाहिए।
2. सभी महिलाओं को आत्मरक्षा की तकनीकें सीखनी चाहिए जिससे विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में किसी तरह की परेशानी महसूस ना हो।
3. अप्रिय स्थिति की संभावना में जल्द ही कोई ठोस कदम उठा लेना चाहिए जैसे अंधेरे में हो तो प्रकाश में आएं, सुनसान जगह से भीड़ में आए, तेज आवाज में चिल्लाएँ व आत्मरक्षा की तकनीकों का प्रयोग करें।
4. महिलाओं को स्वयं को पुरुषों से कम नहीं समझना चाहिए चाहे, शारीरिक क्षमता हो या मानसिक क्षमता।
5. महिलाओं को इन्टरनेट या किसी भी अन्य माध्यम से किसी अनजान व्यक्ति से बातचीत करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। निजी विवरण कभी न दें।
6. महिलाओं को घर से बाहर जाते समय मिर्च स्प्रे, ब्लेड, सैफ्टी पिन, पेन, छोटा चाकू आदि हमेशा साथ रखना चाहिए। जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल करें।
7. अपने आप को विपरीत परिस्थिति में घिरता देख इमरजेंसी नम्बर या परिजन को कॉल व मैसेज करें।
8. अनजान जगह, होटल में अपनी सुरक्षा पहले ही सुनिश्चित कर लें।
9. बैड टच होने पर पहली बार में ही ना कहें।
10. विपरीत परिस्थिति में तेज आवाज में चिल्लाएँ, वार करने वाले का ध्यान व नजर दूसरी तरफ करें।
11. अंधेरे व सुनसान जगह में अकेले जाने से बचें। अप्रिय स्थिति की संभावना में कोई बहाना बना कर वहाँ से निकलने का प्रयास करें।
12. आत्मविश्वास के साथ चलें। अकेले व खाली बस, जीप, ट्रक मे यात्रा न करें।
13. अपने परिजन, पुलिस, इमरजेंसी नम्बर याद रखें एवं सभी महिलाओं एवं बालक-बालिकाओं को निम्न हैल्पलाइन नम्बरों के बारे में जानकारी होना आवश्यक है जिससे वे स्वयं की मदद तो कर ही सकते हैं साथ ही आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की मदद भी कर सकते हैं-

हैल्प लाइन	फोन नम्बर
चाइल्ड हैल्पलाइन	1098
महिला गरिमा हैल्पलाइन	1090, 1091
पुलिस नियंत्रण कक्ष	100
फायर बिग्रेड	101
एम्बुलेंस हैल्पलाइन	102
मेडिकल हैल्पलाइन	108
राजस्थान निर्भया हैल्पलाइन	1800-1200-020
राजस्थान महिला आयोग	0141-2779001-4
राष्ट्रीय महिला आयोग	0111-23219350

14. बेटियाँ अपनी सुरक्षा के लिए स्कूल स्तर पर गरिमा पेटिका में अपनी शिकायत लिख सकती हैं जिसे गुप्त रखा जाएगा।
15. स्कूल के नोटिस बोर्ड पर पुलिस थाने के नम्बर दर्ज होते हैं आप नि:संकोच अपनी बात उनसे भी कह सकते हैं।
16. सभी शिक्षण संस्थाओं, कार्यालयों में आंतरिक शिकायत समिति बनाई जाती है जिसकी महिला सदस्य को बेटियाँ ही नही अन्य महिला स्टाफ भी शिकायत दर्ज करा सकती हैं।

इस तरह कुछ सुरक्षा टिप्स अपना कर हम महिला अपराध के बढ़ते मामलों पर काबू पा सकते हैं और महिलाएँ भी अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हुए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के विकास में अपना योगदान दे सकती हैं।

अध्यापिका, आत्मरक्षा प्रशिक्षक
रा.उ.प्रा.वि. खरखड़ा, राजगढ़ (अलवर)
मो. नं. 9928676691

नवाचार

उपस्थिति बढ़ाने के लिए नई पहल

❒ विकास तिवाड़ी

नवाचार (नव+आचार) अर्थात नया विधान का अर्थ किसी उत्पाद प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन लाने से है। नवाचार के अंतर्गत यदि कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है, जैसे कोई नई विधा, नया तरीका, नई तकनीक या फिर नया प्रयोग। प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन एक जीवंत गतिशील एवं आवश्यक प्रक्रिया है जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के प्रति और अधिक व उपयोगी तथा सार्थक बनाती है इन्हीं सब से नवचेतना और उत्सुकता का संचार होता है। इसकी प्रक्रिया विकासवादी और नवगत्यात्मक होती है। परिवर्तन और नवाचार एक दूसरे के पारस्परिक पूरक या पर्याय है **'नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र नहीं है वरन किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है।'** व्यक्ति और समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकूल बनाने के लिए शैक्षिक विधाओं में नवाचार ने अपनी उपयोगिता और सार्थकता स्वयं सिद्ध कर दी है।

ट्रायटेन के अनुसार- 'शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता बल्कि उन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित तरीके से इन्हें प्रयोग में लाना होता है ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाए रख सके।'

इस प्रकार नवाचार एक नवीन विचार है, एक व्यवहार है अथवा वस्तु या फिर कोई नया तरीका है जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है। नवाचार की परिस्थितियाँ हर क्षेत्र में अलग-अलग अर्थ बताती है। इनके प्रयोग के हर तरीके भी अलग-अलग रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं।

प्रोफेसर उदय पारिख एवं टी.पी. राव ने नवाचार को कुछ इस तरह परिभाषित किया है- 'किसी उपयोगी कार्य के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता है' सभी कार्य ऐसे होते हैं जो पहले कहीं न कहीं किसी न किसी के द्वारा पूर्व में किए जा चुके हैं परन्तु आपने पूर्व में किए कार्य को यदि अपनी नई रचनात्मक शैली प्रदान की है तो यही प्रयास नवाचार बन जाता है।

हमारे सामने एक बात आती है कि नवाचार की आवश्यकता क्यों है तत्सम्बन्ध में रॉबर्ट मर्डोक के कथन में कहा जा सकता है कि 'दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है अब बड़े-छोटों को हरा नहीं पाएँगे अब जो तेज है वो धीमे को हराएँगे।' यदि हमें अपने छात्रों की उन्नति करनी है तो हमें छात्रों का नामांकन, उपस्थिति और ठहराव बढ़ाने के साथ ही साथ रोचक शिक्षण की पद्धतियों में परिवर्तन लाना ही होगा। जिस प्रकार आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है ठीक उसी प्रकार आज शिक्षण पद्धतियों में बदलाव छात्रों को विद्यालय लाने के तरीकों में परिवर्तन लाजिमी है। शिक्षकों का मधुर बर्ताव छात्रों के प्रति सुखद व सकारात्मक व्यवहार शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं।

जगजाहिर है कि कुछ बदलाव करने के लिए, समाज की बेहतरी के लिए जो ठोस कदम उठाए जाते हैं जो नवाचार प्रयोग में लाए जाते हैं आरंभ में उनके लिए कठिन मेहनत तो करनी पड़ती है साथ ही कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इसका आशय ये कतई नहीं कि हम नई पद्धतियों को न स्वीकारें, क्योंकि अंत में सफलता मिलनी तय है नवाचार में। निश्चित है कि या तो सफलता मिलेगी नहीं तो नया अनुभव तो अवश्य ही मिलेगा जो आगामी रणनीति में उपयोगी होगा। हमें परंपरागत विधियों को अतिरिक्त नवीन विधाओं को अपनाना होगा क्योंकि परिवर्तन सार्वभौमिक सत्य है। महान वैज्ञानिक डार्विन का यह नियम कि 'प्रकृति उन्हीं को जीने का अधिकार देती है जो जीवन संघर्ष में सफल होते हैं' लगभग सभी जगह लागू होता है इसलिए स्वयं के अस्तित्व की खातिर हमें नवाचार स्वीकारने ही होंगे।

विद्यालयों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया प्रभावी रूप से सम्पन्न करने में सबसे महत्त्वपूर्ण होती है विद्यार्थियों की उपस्थिति। विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए वैसे तो सरकार ने अनेक छात्र कल्याणकारी योजनाएँ संचालित कर रखी है फिर भी प्रायः अधिकांश जगह ये देखने में आता है कि विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति संतोषजनक नहीं रहती। इसमें सुधार के लिए नवाचार के कुछ तरीके बेहतर हो सकते हैं। इस हेतु विद्यालय में निम्न श्रेणियों में पुरस्कार वितरित किए जा सकते हैं। जिनका वितरण साप्ताहिक अथवा शनिवारीय बाल सभा में अथवा प्रार्थना सभा में या किसी विशेष पर्व या सामुदायिक बाल सभा में किया जा सकता है। पुरस्कार के रूप में बालकों को शैक्षणिक सामग्री स्वयं के द्वारा विद्यालय स्टाफ के द्वारा अभिभावकों के द्वारा अथवा भामाशाहों के सहयोग से दी जा सकती है।

साप्ताहिक सर्वाधिक नियमित विद्यार्थीः- इसके अंतर्गत विद्यालय में हर शनिवार को बालसभा के दौरान अथवा सामुदायिक बालसभा में ऐसे छात्रों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिनकी साप्ताहिक उपस्थिति सर्वाधिक रही हो। एक से अधिक ऐसे छात्र होने पर लक्की ड्रा के माध्यम से भी निर्णय किया जा सकता है या फिर सभी समान उपस्थिति वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जा सकता है। साथ ही ऐसे छात्रों के नाम विद्यालय के सूचना पटल पर प्रदर्शित करना चाहिए। जो प्रक्रिया साप्ताहिक सर्वाधिक उपस्थित छात्रों के साथ अपनायी गई है वही सर्वाधिक मासिक उपस्थिति के संबंध में दोहराई जा सकती है कि जिस छात्र की उपस्थिति माह में सर्वाधिक होगी उसे शाला प्रबंधन समिति की मासिक बैठक में अथवा वृहद् सामुदायिक बालसभा में पुरस्कृत किया जाए, जिससे सभी विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

जन्म लेगी और विद्यालय की उपस्थिति में इजाफा होगा।

सर्वाधिक स्वच्छ व गणवेशः- इस श्रेणी के अंतर्गत हम नियमित विद्यालय आने वाले ऐसे विद्यार्थी जो स्वच्छता के साथ विद्यालय आते हैं साथ ही विद्यालय की पूर्ण गणवेश को प्रतिदिन व्यवस्थित रूप से धारित करते हैं ऐसे बालक-बालिकाओं को हम सम्मानित कर सकते हैं इससे अन्य बालक-बालिकाओं को भी नियमित विद्यालय में स्वच्छ तथा गणवेश में आने की प्रेरणा मिलेगी।

कक्षाकार्य एवं गृहकार्य नियमित करने वालेः- इस श्रेणी में हम विद्यालय में नियमित एवं समय पर कक्षा कार्य एवं गृह कार्य करके लाने वाले बालक-बालिकाओं को चयनित करेंगे एवं इन्हें यथा समय पर पुरस्कृत करें ताकि इन बालक-बालिकाओं का हौंसला बढ़े साथ ही अन्य बालक-बालिकाओं को प्रेरणा मिलेगी जिससे वे समय पर एवं नियमित कक्षा कार्य और गृहकार्य करेंगे।

मासिक भ्रमण- ये मानवीय प्रवृत्ति होती है कि व्यक्ति एक ही स्थान या एक ही कार्य से नीरसता महसूस करने लगता है हमारे विद्यार्थी भी इस सहज प्रक्रम से अछूते नहीं रह सकते। उनको इससे बचाने के लिए जरूरी है कि कुछ नयापन दिया जावे इससे हम छात्रों को आसपास के खेत-खलिहान, पार्क, पुराने किले, पोखर, तालाब आदि का अवलोकन भ्रमण कराएँ इसके लिए पृथक से राशि की आवश्यकता भी नहीं होगी क्योंकि भ्रमण हमें स्थानीय स्थलों का करवाना है इससे उनको आसपास की जैव विविधता, परिवेश, पर्यावरण की जानकारी मिल जाएगी व मन भी प्रसन्न हो जाएगा और हमारे विद्यालय की उपस्थिति भी बढ़ जाएगी।

नवाचारों के माध्यम से हम विद्यालय में बालकों की उपस्थिति में इजाफा कर पाएँगे और विद्यालय में स्वस्थ एवं शैक्षिक वातावरण का निर्माण भी कर सकेंगे जिसमें रहकर बालक-बालिकाएँ अध्ययन करने के साथ-साथ अपना सर्वांगीण विकास कर सकेंगे।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय,
रावण का टीला, दौसा (राज.)
मोः 9950584164

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण में ईको क्लब की भूमिका

❒ विष्णु कुमार गुप्ता

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित नेशनल ग्रीन कोर 'ईको क्लब' पर्यावरण के क्षेत्र में एक अनूठा कदम है। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की कर्मनिष्ठा एवं विश्वसनीयता को देखते हुए यह दायित्व इस संगठन को सौंपा है। राज्य के समस्त जिलों में 'ईको क्लब' नाम से यह योजना संचालित है। सर्वप्रथम इसे माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में शुरू किया गया। बाद में कुछ चयनित उच्च प्राथमिक स्कूलों को भी इसमें जोड़ा गया। वर्तमान में प्रत्येक जिले में 250 ईको क्लब संचालित है। जो पर्यावरण के क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित कर अपनी भूमिका अदा कर रहे है।

इस योजना का प्रमुख उद्देश्य विद्यालय के बालक-बालिकाओं को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाकर पर्यावरण सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों से जोड़ना है ताकि वे विद्यालय और आसपास के क्षेत्र में ऐसी गतिविधियाँ आयोजित करके पर्यावरण के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकें। प्रत्येक इको क्लब को इस हेतु 5000 रुपये की राशि आर्थिक सहायता के रूप में दी जा रहीं है। जिससे विद्यालयों में इको क्लब प्रभारी के नेतृत्व में सफल एवं सराहनीय गतिविधियों का आयोजन किया जाता है तथा उसकी सूचना जिला मुख्यालय पर भेजी जाती है उसके आधार पर सम्बन्धित इको क्लब प्रभारी को स्काउट संगठन के स्टेट चीफ कमिश्नर द्वारा प्रस्तावित प्रशस्ति-पत्र एवं शील्ड प्रदान कर जिला स्तर पर सम्मानित भी किया जाता है।

पर्यावरण सुधार के क्षेत्र में यह एक सरकारी योजना तो है ही, साथ ही साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक पुनीत कार्य भी है। आप और हम पर्यावरण के प्रति संवेदना रखते हुए इसके संरक्षण में सक्रिय योगदान दे तो इससे अच्छा पुनीत एवं भलाई का कार्य और क्या हो सकता है। विद्यालयों में जब से यह योजना लागू की गई है, उद्देश्यों के अनुरूप ही बालक-बालिकाओं में अपेक्षित परिवर्तन भी होते नजर आ रहे है। उनमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता आई है और पर्यावरण के महत्त्व को समझने लगे है। विद्यालयों के बालक-बालिकाएँ अपने शैक्षिक कार्य के अलावा निम्न प्रकार गतिविधियाँ करते नजर आ रहे है जो पर्यावरण के क्षेत्र में सफल साबित हो रही है।

- विद्यालय परिसर में अधिकाधिक वृक्षारोपण कर परिसर को हरा-भरा किया जा रहा है।
- विद्यालयों में पोस्टर, निबन्ध एवं नारा लेखन आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।
- विद्यालय स्तर पर सेमिनार एवं वार्ताओं का आयोजन किया जा रहा है फलस्वरूप बालक-बालिकाएँ प्राकृतिक असंतुलन एवं पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याओं एवं उनसे हुए परिणामों को समझने लगे है।
- गर्मी की ऋतु में पक्षियों के पानी पीने हेतु परिन्डे एवं दाना चुगने हेतु चुग्गा पात्रों की व्यवस्था की जा रही है।
- बालक-बालिकाएँ ऊर्जा संरक्षण की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर ऊर्जा बचत में योगदान दे रहे हैं।
- विद्यालय में पोलीथीन थैलियों का बहिष्कार कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।
- विद्यालय परिसर को स्वच्छ रखने एवं कचरे का निस्तारण हेतु कम्पोस्ट पीट एवं सोख्ता गड्डों का निर्माण किया जा रहा है।
- विद्यालय परिसर के बालक-बालिकाओं को प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण की जानकारी हेतु प्रकृति भ्रमण, वन्य जीव पार्क, बाग-बगीचे आदि स्थानों का अवलोकन करवाया जा रहा है।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में वर्षा जल संरक्षण एवं पुनर्भरण की विभिन्न विधियों की जानकारी दी जा रही है।

उपर्युक्त गतिविधियाँ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय योगदान है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय मेघड़दा (रायपुर), पाली
मोः 9414848022

संस्मरण

मेरा अपना विद्यालय

❒ रामगोपाल प्रजापति

आज से पचास वर्ष पूर्व सन् 1969 में मैंने रा.मा.वि. बायतु (बाड़मेर) से सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण की, यह मेरी नियमित विद्यार्थी के रूप में अंतिम परीक्षा थी, इसके बाद सारी परीक्षाएँ मैंने सेवा में रहते हुए स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में उत्तीर्ण की। मैंने राजकीय मिडिल स्कूल बायतु में सन 1964 में कक्षा षष्टम् में प्रवेश लिया था, विद्यालय में मात्र चार पक्के कमरे थे, जिनमें एक प्रधानाध्यापक कक्ष था, बाकी तीन कमरों में छटी, सातवीं व आठवीं की कक्षा लगती थी। कक्षा एक से पाँच के विद्यार्थी पेड़ों की छाया के नीचे बैठते थे। सभी कक्षाओं के विद्यार्थी नीचे जमीन पर दरियों पर ही बैठते थे। बाल सभाएँ प्रत्येक शनिवार को मध्यावकाश के पश्चात अनिवार्यतः होती थी, उस काल खंड में यही एक मात्र मनोरंजन का साधन था इसमें विद्यार्थी व अध्यापक बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते थे। स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस की रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे एवं ये आमजन में बहुत लोकप्रिय थे। ये सांस्कृतिक कार्यक्रम आधी रात के बाद प्रातः चार बजे तक चलते थे जिनमें लोकगीत, भजन व नाटक पेट्रोमेक्स के प्रकाश में मंचित होते थे।

आस पास के गाँवों से करीब 40 मील की परिधि से विद्यार्थी अध्ययन हेतु इस विद्यालय में आते थे, रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी, छात्र झोपड़ों में सामूहिक रूप से रहते थे। गाँव में ना तो बिजली थी व ना ही पानी की व्यवस्था, मीठे पानी का कोई स्रोत चालीस मील परिधि में नहीं था, लोग बरसात के पानी जिसे पालर पानी कहते थे, इस पर निर्भर थे, लोग बरसात के पानी को टांकों में एकत्र कर लेते थे व साल भर पानी पीते थे। विद्यालय में भी एक बड़े टांके का निर्माण मेरे वहाँ अध्ययनरत रहते हुआ।

सन् 1965 में भारत पाक युद्ध छिड़ गया, गाँव में मात्र एक रेडियो, मुकनों की कुम्हार की होटल पर था, जिस पर सायं सात बजे समाचार सुनने के लिए लोग एकत्र हो जाते थे, समाचारों के बाद गणपत लाल डांगी द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम

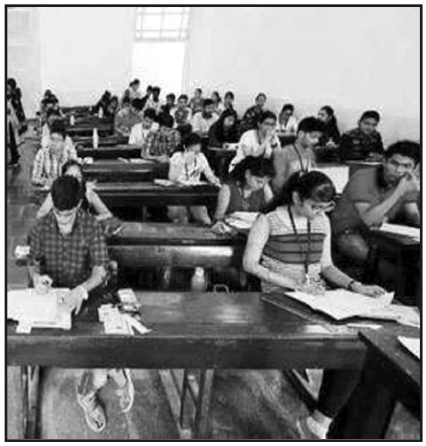

भोपा-भोपी लोगों में अति लोकप्रिय था।

बायतु रेल मार्ग से मिलिट्री स्पेशल गाड़ियाँ गुजरती थी व लोकोमोटिव इंजन पानी लेने हेतु रुकते थे, अध्यापकों ने जन सहयोग से पैसा इकट्ठा किया व सैनिकों के लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था की। विद्यालय रेलवे स्टेशन के पास ही था, अध्यापक स्टोव पर चाय बनाते व हम बालक चाय-नाश्ता लेकर सैनिकों में वितरित करते थे, इस बहाने हम बालकों को ट्रेन पर लदे टैंकों, तोपों व अन्य सैन्य सामग्री को पास से देखने का सुअवसर प्राप्त हो जाता था। राष्ट्र भक्ति का जज़्बा चरम पर था, अनाज का संकट हो गया था, गेहूँ की आपूर्ति अमेरिका ने बंद कर दी थी, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने देशवासियों से सोमवार को उपवास करने का आह्ववान किया, अध्यापकों व छात्रों ने मिलकर पूरे गाँव में दीवारों पर सोमवार को उपवास रखने व भोजन झूठा न छोड़ने के नारे लिख दिए, लोगों पर शास्त्री जी की इस अपील का सकारात्मक प्रभाव हुआ।

विद्यालय में खेलकूद नियमित होते थे, कबड्डी, फुटबाल व वॉलीबाल खेल लोकप्रिय थे। विद्यालय के चपरासी स्कूल की छुट्टी होते ही फुटबाल व वॉलीबाल में हवा भरकर कस्से बांधकर 'बॉल' तैयार कर देते थे, अध्यापक, छात्र व ग्रामीण सामूहिक रूप से खेल का आनंद लेते थे। पी.टी. के कालांश में ड्रिल होती थी व उद्योग के कालांश में तकली कातना व अन्य कार्य होते थे विद्यालय में उद्योग के अलग से अध्यापक थे। यदा-कदा फिल्म दिखाने के लिए गाड़ी आती थी व रात्रि समय विद्यालय में फिल्म दिखायी जाती थी, उस जमाने में हकीकत परिवार, उपकार व देशभक्ति की फिल्में दिखायी जाती थी, 'आवाज दो हम एक हैं' नामक राष्ट्रभक्ति गीत बालकों में बहुत लोकप्रिय था।

सन् 1967 में यह स्कूल क्रमोन्नत होकर सैकण्डरी स्कूल बन गया व श्री अगरचंद पहले प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए।

विद्यालय में मात्र कला संकाय ही था, सन् 1968 में विद्यालय निरीक्षक, बाड़मेर श्री गोकुल चंद सिद्ध ने विद्यालय का विस्तृत निरीक्षण किया उन्होंने अपने निरीक्षण वृतांत में उल्लेख किया कि कक्षा नवम् का छात्र रामगोपाल अध्ययन में होशियार पाया गया। श्री मोहन नाथ स्वामी सन् 1969 में नए प्रधानाध्यापक आ गए वे कुशल प्रशासक व शिक्षाविद् थे। श्री स्वामी के कार्यकाल में विद्यालय ने चहुँमुखी प्रगति की, परंतु विषय अध्यापकों की कमी थी। सन् 1969 में विद्यालय का सैकण्डरी का दूसरा 'बेच' था। विद्यालय में हमारे विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सामूहिक फोटोग्राफ हेतु फोटोग्राफर बाड़मेर से बुलाया गया! हमारी बोर्ड परीक्षा का केंद्र बाड़मेर था।

परीक्षा परिणाम में कक्षा के अठारह विद्यार्थियों में से मात्र छः विद्यार्थी पास हुए, तीन के 'सप्लीमेंटरी' आ गयी। कक्षा में मेरा स्थान प्रथम रहा व मेरा नाम विद्यालय के 'Honours Board' पर कई वर्षों तक अंकित रहा। कक्षा दशम के पश्चात मैंने एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य) तक की शिक्षा स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में उत्तीर्ण की एवं इसी विद्यालय में छः वर्षों तक अध्यापक भी रहा।

RAS (Retd.)
बी-36, नारायण निवास,
समता नगर, बीकानेर
मो : 9414470251

स्वप्रेरणा

मन की शक्ति अर्थात् इच्छा-शक्ति

❐ अनिता चौधरी

हमारा मन विलक्षण शक्तियों का स्रोत है। संसार में हम जो भी उन्नति और उत्कर्ष प्राप्त करते हैं, उनके पीछे हमारी मन की शक्ति ही है। किसी शास्त्रकार ने कहा है, 'जितं जगत् केन..... मनों ही येन' अर्थात् जिसने मन को जीत लिया, उसने संसार को जीत लिया। मन की शक्ति को हम इच्छा-शक्ति के रूप में भी जानते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें जिन गुणों की आवश्यकता होती है उनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है इच्छा-शक्ति। अन्य गुण जैसे ईमानदारी, साहस, परिश्रम, लगन आदि दृढ़ इच्छा-शक्ति के अभाव में व्यर्थ हो जाते हैं।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके असाधारण व्यक्तित्व-निर्माण के मूल में उनकी इच्छा-शक्ति ही रही है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह इच्छा-शक्ति है क्या? जब किसी उद्देश्य को लेकर हमारा मन यह कहता है कि मैं यह काम करूँगा/करूँगी और करके ही रहूँगा/रहूँगी, चाहे जो भी हो जाए ऐसी बलवती इच्छा को, जिसका प्रकाश कभी कम न हो दृढ़ ऐसी दृढ़-इच्छा को ही इच्छा-शक्ति कहते हैं।

जब हमारे जीवन में असफलता या निराशा घिर आती है तो इच्छा-शक्ति ही हमें उनसे उबरने में सहायता करती है। इच्छा-शक्ति को दृढ़ बनाकर हम अपनी सोच के अनुसार चीजों को प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य के भीतर अति मानवीय सामर्थ्य इच्छा-शक्ति के रूप में विद्यमान रहती है।

आवश्यकता है, इसे जानने और जाग्रत करने की, कुछ व्यक्तियों में यह जन्मजात होती है परन्तु कुछ में यह सुप्त अवस्था में होती है सुप्त इच्छा-शक्ति को वातावरण एवं अभ्यास से जाग्रत कर सकते हैं। आखिर इस इच्छा-शक्ति को कैसे जाग्रत करें? इच्छा-शक्ति को जाग्रत करने के लिए हमें हमारे मन और शरीर के प्रबंधन की आवश्यकता है, जिसके मुख्य बिंदु निम्न हैं-

1. सकारात्मक नजरिया-जीवन में सदैव सकारात्मक रवैया ही रखें, असफलताएँ भी आएगी तो आने दें, बल्कि उन असफलताओं को सीढ़ियों की तरह उपयोग कर अपने लक्ष्य पर नजर रखें। हर असफलता कुछ शिक्षा प्रदान करती है, उसका लाभ उठाएँ। असफलता ही हमें यह सिखाती है कि हमारे प्रयासों में क्या कमी रह गई? अब्राहम लिंकन 17 बार पराजित होने के उपरांत चुनाव जीत पाए थे और राष्ट्रपति पद तक पहुँचे। यह उनकी सकारात्मक सोच का ही परिणाम था।

2. तनाव न लें, प्रसन्न रहें- हमारा जीवन सुख-दुःख का मेला है। दुःख प्राप्त होने पर तनाव न लें। तनाव की अवस्था में मस्तिष्क कार्य करने में बाधा महसूस करता है और तनाव-रहित मस्तिष्क आने वाली मुसीबतों हेतु हमें तैयार करने में अधिक सक्षम होता है अतः सदैव प्रसन्न रहें, शांत रहें, तनाव से दूर रहें।

3. स्वयं पर विश्वास रखें- मन में यह विश्वास रखें कि जो मुझे चाहिए, वह मैं प्राप्त कर सकती हूँ प्राप्त करूँगी और करके ही रहूँगी। इससे आपके मन की शक्ति (इच्छा-शक्ति) और अधिक प्रबल होती जाती है और वांछित लक्ष्य तक हमें पहुँचा कर ही छोड़ती है।

4. अपनी अंतःशक्तियों का केन्द्रीकरण करें- अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अपनी भीतरी शक्तियों को एकत्र कीजिए चाहे कितनी ही मुसीबतें लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आएँ, **ये भीतरी शक्तियाँ (स्वयं पर विश्वास, सुविचार, मन की दृढ़ता, लक्ष्य के प्रति ईमानदारी आदि) आपको चट्टान की तरह अटल, स्थिर और शांत बनाती है ऐसा मनुष्य सदैव अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है एवं शांत व प्रसन्न रहता है।**

5. सही पोषण, योग और व्यायाम- स्वस्थ, सबल मन के लिए शरीर का स्वस्थ होना प्राथमिक आवश्यकता है कहावत भी है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक और संतुलित भोजन, उचित समय पर तथा उचित मात्रा में ग्रहण करना चाहिए। द्वितीय कार्य है योग और व्यायाम द्वारा मन की चंचलता और कुविचारों पर नियंत्रण करना। योग और व्यायाम द्वारा आपके मस्तिष्क का शोधन स्वयंमेव हो जाता है। आपका मन लक्ष्य पर केंद्रित हो जाता है।

6. कठोर व निरन्तर परिश्रम- आपने जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसकी योजना तैयार करके निरन्तर उसी दिशा में आवश्यक प्रयास करें। इच्छा-शक्ति के साथ यदि कठोर परिश्रम का विलय हो जाए तो संसार की सारी ताकतें आपको लक्ष्य तक पहुँचाने में स्वयं ही व्यस्त हो जाएगी, फिर चाहे सारी परिस्थितियाँ कितनी भी आप के विपरीत क्यों ना हो! गणिताचार्य रामानुजन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम आजाद एवं अपना एक पैर खो देने के पश्चात भी दुनिया की सातों सबसे ऊंची पर्वत-चोटियों पर तिरंगा फहराने वाली अरुणिमा सिन्हा इस दिशा में हमारे प्रेरणा स्रोत हैं।

अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति के बल पर असाधारण कार्य करने वाले ऐसे उदाहरणों का कोई अंत नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इच्छा-शक्ति के बल पर व्यक्ति असंभव को संभव बना सकता है। इच्छा-शक्ति के रूप में मनुष्य को यह एक 'ईश्वरीय वरदान' मिला है। 40 वर्ष की आयु तक अनपढ़ रहे कालिदास अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर संस्कृत के महान विद्वान बने। अंधी, गूंगी, बहरी हेलन केलर ने 17 विश्वविद्यालयों से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन को मंदबुद्धि बालक बताकर विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया था परंतु वे एक सफल वैज्ञानिक बने और 500 से अधिक जीवनोपयोगी उपकरणों का आविष्कार किया। ये उनकी प्रबल इच्छाशक्ति द्वारा ही संभव हुआ था।

यह जरूरी नहीं कि सफलता प्राप्त करने के लिए सुविधाएँ ही आवश्यक हो, इनका अभाव रहने पर भी मनुष्य अपनी इच्छा-शक्ति व अभ्यास के बल पर प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में बदलने की क्षमता रखता है और उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है। **'शिक्षा के क्षेत्र में समस्त अध्यापक इच्छा-शक्ति के सिद्धांत का प्रयोग अपने अध्यापन में कर सकते हैं। वे विद्यार्थियों की प्रसुप्त इच्छा-शक्ति को जाग्रत कर उनकी शैक्षिक प्रगति में अभिवृद्धि और सीखने की क्षमता में सुधार कर सकते हैं इससे अध्यापक की शैक्षिक उपलब्धि में भी मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रगति होगी।'**

प्राध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
राजगढ़ (चूरू)
मो: 7073047980

रपट

65वीं राष्ट्रीय वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग में राजस्थान विजेता

❒ द्वारका प्रसाद सुथार

65वीं SGFI राष्ट्रीय स्कूली गेम्स में राष्ट्रीय वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग में राजस्थान पहली बार विजेता बना। राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों का प्रशिक्षण शिविर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयसिंह देसर मगरा, पाँचू, बीकानेर में दिनांक 10.11.19 से 17.11.19 तक आयोजित हुआ। शिविर प्रभारी प्रधानाचार्य श्रीमती संज्ञा गुप्ता ने बताया कि 65वीं राष्ट्रीय वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग प्रतियोगिता में भाग लेने वाली खिलाड़ियों का प्रशिक्षण टीम के मुख्य कोच धूमल भाटी व विद्यालय शाशि रेवन्तराम सारण के नेतृत्व सम्पन्न हुआ।

65वीं राष्ट्रीय वॉलीबॉल U-17 छात्रा वर्ग की प्रतियोगिता दिनांक 19 नवम्बर 2019 से 24 नवम्बर 2019 तक त्रिमूर्ति पब्लिक स्कूल, नेवासा, अहमदनगर, महाराष्ट्र में सम्पन्न हुई। राजस्थान टीम के प्रभारी द्वारका प्रसाद सुथार ने बताया कि 65वीं राष्ट्रीय वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग का खिताब राजस्थान ने जीता। राजस्थान की टीम ने अपने ग्रुप के सभी मुकाबले जीतते हुए प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। राजस्थान की टीम ने अपने ग्रुप में आसाम को 3-0 से KVS को 3-0 से तथा तमिलनाडु को 3-1 से हराया।

राजस्थान की टीम ने प्री-क्वार्टर फाइनल में कर्नाटक को 3-0 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। क्वार्टर फाइनल में राजस्थान ने CBSE की टीम को 3-0 से पराजित करके पहली बार सेमी फाइनल में प्रवेश किया।

सेमी फाइनल में राजस्थान ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखते हुए गुजरात को 3-0 से पराजित करके इतिहास रचते हुए पहली बार फाइनल में पहुँचा राजस्थान टीम के चीफ डे मिशन द्वारका प्रसाद सुथार ने बताया कि फाइनल में राजस्थान ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखते हुए व अजेय रहते हुए छः बार चैम्पियन पश्चिम बंगाल की टीम को पराजित करके इतिहास रचते हुए पहली बार वॉलीबाल U-17 छात्रा वर्ग में राष्ट्रीय विजेता बना।

राजस्थान टीम प्रभारी के अनुसार विजेता बनी टीम में सुमन भाम्भू, लवप्रीत कौर, मनिता भाम्भू, अनिता, अल्पना (हनुमानगढ़) अंजली कुमारी भाट, ममता रैगर (भीलवाड़ा) मनदीप कौर (श्रीगंगानगर) लिछमा ज्याणी (बीकानेर) सोनू सेपट (सीकर), टीना चौधरी (झुन्झुनू), बबीता (चूरू) खिलाड़ी थे। टीम की कप्तान सुमन भाम्भू थी। टीम की कप्तान सुमन भाम्भू व लवप्रीत कौर को राष्ट्रीय प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया।

राष्ट्रीय विजेता बनी टीम में पाँच मुख्य खिलाड़ी हनुमानगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव सिलवाला खुर्द की थी।

टीम के मुख्य कोच धूमल भाटी, टीम मैनेजर अनिता कर्णावत, सहायक कोच हेमराज खटीक, सहीराम तावणिया व मूलाराम ज्याणी ने छात्रा खिलाड़ियों को विजेता बनने के लिए विशेष रणनीति बनाई। टीम प्रभारी व अन्य सदस्यों ने टीम के राष्ट्रीय विजेता बनने पर खिलाड़ियों को शुभकामना देते हुए खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। टीम के पहली बार विजेता बनने पर राजस्थान के खेल प्रेमियों ने टीम को शुभकामनाएँ व बधाइयाँ दी। राष्ट्रीय विजेता बनी टीम के चीफ डे मिशन व प्रभारी द्वारका प्रसाद सुथार, सहायक प्रभारी मूलाराम ज्याणी, टीम के मुख्य कोच धूमल भाटी, सहायक कोच हेमराज खटीक, सहीराम तावणिया, रेवन्तराम सारण, छात्रा प्रभारी अनिता कर्णावत, सहायक कर्मचारी बलवीर साथ रहे।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. बिलनियासर
नोखा बीकानेर (राज.)

पुस्तक समीक्षा

जलते मरुथल में दाझे पाँवों से

लेखक : आईदान सिंह भाटी **प्रकाशक :** रॉयल पब्लिकेशन, 18, शक्ति कॉलोनी, गली नंबर 2, लोको शेड रोड, रातानाड़ा, जोधपुर **पृष्ठ :** 112 **संस्करण :** 2019 **मूल्य :** ₹ 250

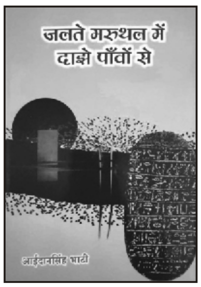

राजस्थानी कवि के रूप में विख्यात आईदान सिंह भाटी का पहला हिंदी कविता संग्रह 'जलते मरुथल में दाझे पाँवों से' है, जो उनकी लगभग चार साढ़े चार दशक की साधना का प्रतिफल है। वे अपने राजस्थानी कविता संग्रह 'आँख हींयै रै हरियल सपना' के लिए साहित्य अकादमी मुख्य पुरस्कार, बिहारी पुरस्कार और राजस्थानी अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं और इन सब के बाद उनके पहले हिंदी कविता संग्रह से गुजरना अनेक सत्यों से आमने-सामने होने जैसा है। बकौल कवि-'कविताएँ मूलतः राजस्थानी में ही लिखता रहा हूँ, किंतु परिवेशगत दबावों में लिखी गई इन कविताओं को मैंने अब तक प्रकाशित करने का इसलिए भी मन बनाया, क्योंकि बड़े भाई डॉ. रमाकांत शर्मा ने भी मुझे इस ओर ध्यान देने का आग्रह किया था।' डॉ. नामवर सिंह के आग्रह पर कवि आईदान सिंह भाटी मातृभाषा में लिखते रहे किंतु साक्षरता आंदोलन के दौरान और मंच के आग्रह पर उन्होंने समय-समय पर हिंदी में कुछ रचनाएं लिखीं। उन्हीं मुक्त छंद और छंदबद्ध रचनाओं का संकलन है उनका यह संग्रह।

जाहिर है कि हिंदी कविता के कई उतार-चढ़ाव इस संग्रह में दिखाई देते हैं किंतु सबसे उल्लेखनीय आईदान सिंह भाटी की भाषा और शैली है। वे कविता को सजावट का समान अथवा भाषा में गढ़ी पहेलियां नहीं मानते वरन उनके यहाँ कविता आम जन जीवन का प्रतिबिंब लिए सीधे व्यक्ति और समाज से मुखातिब होती है। 'माटी के जंगल में, रिश्ते घावों से/जलते मरुथल में, दाझे पाँवों से,/ मीरां के गीतों संग, सहलाते घावों को,/ सदियां सोयी है, हारे ही हारे,/ हरियाले सपने, नयनों में धारे।' (माटी के जंगल में, पृ. 44) यहाँ व्यक्ति और सत्ता का संघर्ष तो है ही साथ आजादी के इतने वर्षों बाद भी एक आम आदमी की लाचारी और बेबसी भी उनकी कविता में अभिव्यक्त हुई है। कॉरपोरेटी और पूंजीवादी जंगल के बीच में किसान और मजदूर वर्ग के दुख-दर्द को स्वर देते हैं। कविता के जनपक्ष की पैरवी करते हुए वे चेतावनी के स्वर में आज के कवि से सीधा सवाल करते हैं- 'लोग खिलवाड़ कर रहे हैं अपनी भाषा से/तुम टुकुर-टुकुर खड़े ताक रहे हो/रच रहे हो तुम प्रहेलिकाएं और वक्रोक्तियां।' (कवि तुम किसके पक्ष में हो?, पृ. 42) अपनी सभ्यता, परंपरा, भाषा और संस्कारों के सामने पसरता बाजार और आधुनिकता के रंग उन्हें नहीं भाते। वे बनावटी सौंदर्य के पक्ष में नहीं है। आधुनिकता के साजो-सामान बाहरी सौंदर्य को निखार सकते हैं किंतु वे व्यक्ति के सुंदर मन की कामना करते हैं। 'सौंदर्य खाल में नहीं/ अंतस में बसता है आलीजा।' (अकाल पर कोई कविता नहीं होती आलीजा!, पृ. 30) 'आलीजा' को संबोधित नवीन शैली की उनकी कई कविताएं ध्यान आकर्षित करती हैं।

हिंदी कविता के इस कालखंड में प्रचलित काव्य-भाषा से इतर इस संग्रह की काव्य-भाषा है, जो उन्हें अपनी निजी भाषा-शैली के कारण एक अलग पहचान देती है। राजस्थानी मिश्रित शब्दावली में यहाँ का लोक साकार होता है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार-'... आईदान सिंह भाटी की कविताओं में मुझे लोकभाषा के इसी सार्थक व प्रतिरोधी रूप की झलक मिलती है। वे स्थानिकता परंपरा और प्रतिरोध के सौंदर्य बोध के कवि हैं।' डॉ. रमाकांत शर्मा ने लिखा है- 'डॉ. भाटी की कविताएँ अपने जनवादी तेवर और देशजता के कारण अलग से पहचानी जा सकती है।' हिंदी की यहाँ आंचलिकता कहीं खटकने वाली नहीं है। भाषा अपने परिवेश को साकार करती है और कवि अपने परिवेश के हर सवाल से मुठभेड़ करते हुए अपनी कवि जमात तक को नहीं बख्शता। 'हे कवि! तुम अभी भी खड़े हो/टुकुर-टुकुर ताकते हुए।/उन्होंने तो लौटा दिया है अपना सम्मान!/और तुम नचिकेता की मुद्रा में/पूछ रहे हो सवाल?/ वाजश्रावाओं ने कर लिया है आरक्षण स्वर्ग में/पुरस्कार रूपी बूढ़ी गायों का दान करके।' (हे कवि!, पृ. 38)

कवि आईदान सिंह भाटी का विश्वास है- 'आखर फैलाता है उजास/ आदमी होने का।/ सपने संजोने का।' (जैसे, पृ. 49) उनकी 'अलख निरंजन' कविता बाबा नागार्जुन का स्मरण कराती है। 'अखल निरंजन, अलख निरंजन।/ देश का दंशन। साबुन-मंजन। नून तेल लकड़ी/रे रिश्वत तगड़ी/देखो रे देखो रे देखो देखो तमाशा!/ देखो रे देखो रे देखो कविता की भाषा!/बढती ही जाए रे देखो गाँव गरीबी।/ तन कर चलती ज्यों अफसर की बीबी।/वहीं है विधाता।/जहाँ कंपनी का खाता।' कवि आईदान सिंह भाटी के इस संग्रह में अपने साथी कवि और कवयित्री पर केंद्रित भी कुछ कविताएँ हैं। जैसे- 'नीलकमल की कविताएँ पढ़ते हुए', 'पद्मजा शर्मा की कविताएँ सुनकर' और 'उडीकते धोरै'। यह संग्रह जनकवि हरीश भादानी को न केवल समर्पित है वरन उन्हें कुछ कविताओं में कवि स्मरण भी करता है। 'विकल रेत गा रही थी हरीश भादाणी के गीत।/नारायण का मन भी तब/बुन रहा था ख्वाब/'रेत में नहाने का।''

'लज्जा नैनन की कहाँ, कहाँ रसीली डोर।/अब तो दड़बों में रहा चित्रहार का शोर।' जैसी पंक्तियों का अपना समय और दौर रहा है और ऐसे में यहाँ यह आग्रह गैरवाजिब नहीं कि इन कविताओं के अन्त में इनका रचनाकाल भी अंकित किया जाना चाहिए था। जैसा कि कवि ने स्वयं ही स्पष्ट कर दिया है कि इन रचनाओं में एक लम्ब अंतराल रहा है और इनकी सार्थकता इस बात में भी देख सकते हैं कि अनेक रचनाएँ कालजयी हैं। अपने समय-संदर्भों को अपने भीतर समेटे इन कविताओं में- 'आजादी अब देख लो, जूठे जश्न मनाय।/ वर्ष पचासों बाद भी, भूख गरीबी हाय।।' (आखर भए उदास, पृ. 60) जैसी कविताएँ कवि की तरफ से जनता का सत्ता से सीधा संवाद है। यहाँ यह भी रेखांकित करना जरूरी है कि इन कविताओं में जिस मुहावरे में संवाद हुआ है वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकता है। देश और समाज के कर्णधारों को हमारे मरुथल में दाझे पाँवों वाले कवि आईदान सिंह भाटी के शब्दों के परिप्रेक्ष्य में नए देश और समाज का निर्माण करना होगा। आम

जन को भूख और गरीबी की मार से बचाना ही हमारी आजादी का सच्चा जश्न होगा।

समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी,
बीकानेर-334003 (राजस्थान)
मो. 9461375668

जीने दो धरती पर

लेखक : डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा **प्रकाशक :** रॉयल पब्लिकेशन, रातानाड़ा, जोधपुर **पृष्ठ** : 88 **संस्करण :** 2018 **मूल्य :** ₹ 200

डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा का 2018 में प्रकाशित कविता संग्रह 'जीने दो धरती पर' टेक्श्चर का अद्‌भुत संग्रह है। टेक्श्चर यूं तो चित्रकला का शब्द है, परंतु कवि की कविता-शिल्प का मूल्यांकन इस शब्द के बिना किया जाना मुमकिन जान नहीं पड़ता। कच्छावा जी अपनी कविताओं में जो कुछ कह लेते हैं, पाठक का ध्यान तत्पश्चात् उसकी अर्थवत्ता की ओर जाता है। उनकी कविता के संकेतार्थों में ऐसा कुछ समाहित रहता है जो पाठकीय अवधान के अभाव में उद्‌घाटित नहीं हो पाता। कवि भावों को बिम्बों में उपस्थापित करता है। बिम्ब एक विशिष्ट पैटर्न में व्यवस्थित होते हैं। बिम्बावलियों को समझने के लिए कविता को बार-बार पढ़ना पड़ता है। वे सभी तत्त्व जो संरचना को रूपायित करते हैं, टेक्श्चर कहे जाते हैं, जैसे बिम्ब, प्रभावी मुहावरे, शब्द विन्यास, लय, ध्वनि आदि। संग्रह की अधिकांश कविताएँ इस 'टेक्श्चर' की कसौटी पर खरी उतरती नजर आती है।

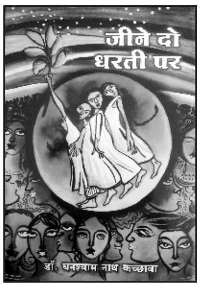

संग्रह की प्रारंभिक कविता 'कविता' कविता क्या होती है? की ध्वनि के साथ आगे बढ़ती है। कविता कैसे बनती है? उसकी रचना प्रक्रिया होती है? ऐसे प्रश्न प्रायः सभी काव्य सर्जकों के मन में उठते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर की तलाश में फिर कविता रची जाती है। अज्ञेय, कुँवर नारायण वाजपेयी जैसे सभी नामचीन कवियों ने इस विषय पर कविताएँ लिखी हैं। कच्छावा की 'कविता' कविता और रोटी में अद्‌भुत साम्य स्थापित करती है। एक तन की भूख शांत करती है और दूसरी अंतस की। पूरी कविता में बिम्बों की अद्‌भुत छटा बिखरी हुई है, जिसे बार-बार पढ़ने का मन करता है।

आलोच्य संग्रह की अधिकांश कविताओं में आशावादी स्वर ध्वनित होता है। कविता 'कल्पतरू' रूपात्मक है। कविता में जीवन खेत में विश्वास रूपी कल्पतरू उगाने के लिऐ प्रेम की सिंचाई को जरूरी माना गया है-

स्नेह-नीर से
तब उगता है
लाखों जनत
और
यथेष्ट प्रयत्न से
विश्वास का कल्पतरू
इस जीवन-खेत में।

इसी भावबोध की कविता है 'उम्मीद'। यह उम्मीद भाव को व्यक्ति की दिनचर्या के अर्थ में व्यंजित करती है। कविता के अनुसार सुबह जागने से लेकर सोने तक मनुष्य के साथ उम्मीद जुड़ी रहती है। यह उम्मीद ही उसे कर्म में लीन रखती है। 'उन्मेष' कविता में इसी आशा स्वर के नंकार से ऊपर रखा गया है-

नकारात्मक तूफान का
एक वेश
लेकिन सकारात्मक
सृजन का सौन्दर्य
मांगता है
श्रम का उन्मेष

'अकेला' और 'कमी' भी इसी भावबोध की कविता है। कविता 'अकेला' में प्रकृति को दोस्त माना है, जब तक आपके यहाँ खिलती हुई प्रकृति मौजूद, तब तक आप अकेले नहीं हो सकते-

किसने कहा तुम अकेले हो
देखो तो सही
खोलकर अपनी आँखें
यह अठखेलियाँ करती हवा
लहराते पेड़/बहता जल
सभी हैं तो तेरे अपने।

हमारी संस्कृति में सत, रज और तम को मानती है। इन तीनों का अस्तित्व सनातन है। बस हमें सदैव सत की ओर बढ़ते रहना है। इसी सत की अवधारणा का नाम ईश्वर है। कच्छावा जी सकारात्मक भाव से इस तथ्य को यूं वर्णित करते हैं-

ईश्वर की दी हुई को स्वीकारते है
समझकर दिव्य-प्रसाद
फिर उसके द्वारा प्रदत्त
अच्छाइयों से
खिलखिलाते/महकाते हैं
अपनी जीवन बगिया में
फूलों की क्यारी

कवि आशावादी होने के साथ-साथ यथार्थवादी भी है। वह सच से कभी मुँह नहीं छिपाता। वह 'आईने' में अपना हुबहू अक्स देखकर न तो नाराज होता है और न ही पतंग की तरह दूसरे के हाथों का खिलौना बनता है। वह 'जैसा है' उसके प्रति स्वीकार का भाव रखता है। 'जीने दो धरती पर' कविता में इसी भाव के विविध रंग वर्णित हुए हैं। इसीलिए उसे अब नट, पतंग बिना पंखों का पक्षी बनना, स्वीकार्य नहीं है।

गवारा नहीं मुझे
लोगों के मनोरंजन निमित्त
खुद को नट बना
हवा की क्षणिक
अठखेलियों के लिए
अपनी जड़ों से बिछुड़
अपना ही जीवन गवाना।

कुल मिलाकर पुस्तक की सभी कविताएँ-प्रेम, उमंग, उत्साह और आशा के भाव को निरंतर प्रवहमान करती हैं। कुछ-कुछ कविताओं में अधूरापन जरूर खटकता है। ये कविताएँ भावों को व्याख्यायित करने वाली है। मन, याद, सृजनहार ऐसी कुछेक कविताएँ है। कहीं-कहीं कवि उतावलेपन में समय की नब्ज को टटोलने में भी चूका है। कविता 'गाँव-शहर' में जो गाँव का वर्णन आया है। ऐसे गाँव अब बहुत कम रह गए हैं। इंटरनेट, टी.वी. मोबाइल की संचारी दुनियां में अब गाँव-शहर में वैसा फर्क नहीं रहा, जैसा प्रेमचंद जी के समय में हुआ करता था। फिर भी पुस्तक समग्र रूप में पठनीय बनी है। कवि को इस हेतु साधुवाद। पुस्तक के भूमिका लेखक डॉ. आईदान सिंह भाटी और आवरण शिल्पी पंकजा तूनवाल ने अपनी-अपनी भूमिकाएं बेहतर से निभाई है। ये दोनों बधाई के पात्र हैं।

समीक्षक : **डॉ. मूलचन्द बोहरा**
उपनिदेशक
आर.टी.ई., प्रारम्भिक शिक्षा राज., बीकानेर
मो. 9414031502

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

बेटी बचाओ

माँ मुझे आने दो,
माँ मुझे आने दो।
अपना फर्ज निभाने दो,
अपना कर्ज चुकाने दो।
मुझे इस दुनियाँ में आना है,
कुछ कर दिखाना है,
चाँद पर जाना है,
आपका नाम रोशन कर दिखाना है।
मैं आपकी आशा हूँ।
पापा की अभिलाषा हूँ।
जीवन की परिभाषा हूँ।
बेटी हूँ पर, आकांक्षा हूँ।
माँ मुझे आने दो,
माँ मुझे आने दो।
मुझे उड़ान भरना है,
सपनों को पूरा करना है,
इसलिए मुझे आना है,
इसलिए मुझे आना है।

-कल्पना मीणा, कक्षा 6-ए
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सींगपुरा (दौसा)

वृक्ष की भाँति रहना सीखो

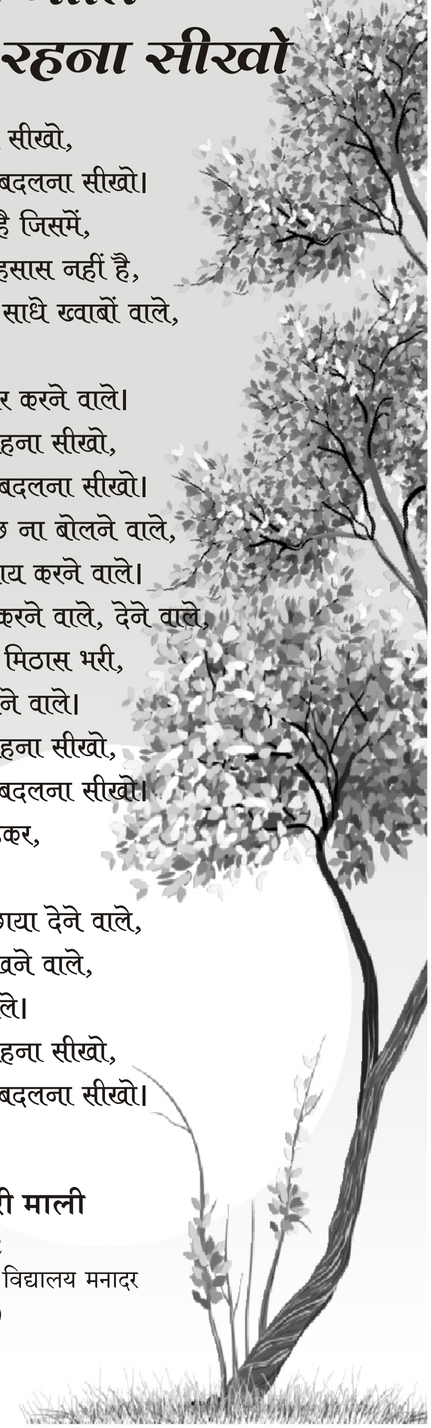

वृक्ष की भाँति रहना सीखो,
अपने आप में कुछ बदलना सीखो।
श्वास आता-जाता है जिसमें,
अपने ईमान का अहसास नहीं है,
ना कुछ बोले सीधे-साधे ख्वाबों वाले,
जिसमें गुण है,
चोट खाकर परोपकार करने वाले।
उस वृक्ष की भाँति रहना सीखो,
अपने आप में कुछ बदलना सीखो।
प्रहार सहकर भी कुछ ना बोलने वाले,
अन्याय के साथ न्याय करने वाले।
दूसरों के लिए कुछ करने वाले, देने वाले,
फल में जिनके कुछ मिठास भरी,
ऐसा कुछ अच्छा करने वाले।
उस वृक्ष की भाँति रहना सीखो,
अपने आप में कुछ बदलना सीखो।
कड़ी धूप में खड़े रहकर,
शीतलता देने वाले,
सबको समभाव से छाया देने वाले,
सजीवों को जिंदा रखने वाले,
हर हाल में जीने वाले।
उस वृक्ष की भाँति रहना सीखो,
अपने आप में कुछ बदलना सीखो।

-कंचन कुमारी माली
कक्षा 12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मनादर
(सिरोही)

बेटियाँ

बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

दादी, नानी की सोच बदलो,
चाची, ताई को समझाओ।
बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

घर-घर में यह बात बतलाओ,
नई सोच का नवदीप जलाओ।
बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

लक्ष्मी के साथ दुर्गा बनना सिखाओ,
अपने हक के लिए लड़ना सिखाओ।
बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

आज की पी.टी.उषा, सानिया मिर्जा बनाओ,
शिक्षा, दीक्षा, खेलकूद में आगे बढ़ाओ।
बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

बेटियों के जीवन को यूं व्यर्थ न गंवाओ,
खुद समझो, दूसरों को भी समझाओ।

बेटियों को पढ़ाओ, भविष्य सुनहरा बनाओ।

–रितु शर्मा, कक्षा 11वीं
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मिर्जेवाला (श्रीगंगानगर)

मकड़ी की चाल

मकड़ी की चाल शुरू करे इस छोटे-छोटे धागे,
अगर ऐसी चाल शुरू करें तो मिटे मनुष्य संताप।
बड़े काम को देख तू क्यों बार-बार घबराएँ,
जमाना भागा जाए तू पकड़ने को दौड़ लगाएँ।
कुछ कर ऐसा की भीड़ से तू निकल जाए,
और देख ये ज़माना तेरे कदमों में शीश नवाएँ।
क्या देखकर मकड़ी जाल ज़माने को तू अपनाएँ,
अरे! स्वार्थ है कुछ नहीं सभी देख मुस्काएँ।
नहीं तो तू तेरा मैं मेरा रास्ता जग अपनाए,
बिना स्वार्थ तो कौन है जो तुम्हें मीठी खीर खिलाए।
वैसे तो सब कहते हैं मकड़ी
जितना बुनती-उतना खुद ही फँसती,
जो पता किसी को ना चले एक ऐसा अर्थ मैं समझती।
बुराई के अंगारों में अच्छाई ढूँढ मैं चलती,
सब कहते हैं छोटी को सुधारे बड़ी बात है बनती।
अच्छाई के मकड़ी के जाल के आगे,
बुराई का कीड़ा मोह से फँस जाए,
लेकिन अच्छाई के आगे बुराई बिल्कुल ना टिक पाए।

–पायल सोनी, कक्षा 12 (कला वर्ग)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीमाधोपुर (सीकर)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। –वरिष्ठ संपादक

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

वार्षिकोत्सव के अवसर पर भामाशाहों तथा प्रतिभाओं का सम्मान

झुंझनूं–ग्राम हरिपुरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में दिनांक 30.11.2019 को शाला का वार्षिकोत्सव एवं अध्यापक श्री दयानन्द का सेवानिवृत्ति समारोह प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता मान की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अमरसिंह पचार, जिला शिक्षा अधिकारी, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नईम अहमद मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं श्री मनोज ढाका प्रधानाचार्य अलसीसर, श्री प्रीतम प्रधानाचार्य मलसीसर, श्री महेन्द्र सिहाग प्रधानाचार्य रामपुरा, महेश सिलायच एडीईओ, श्री नवीन ढाका आरपी उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यालय की पूर्व छात्रा सुश्री जयश्री का राजस्थान न्यायिक सेवा में चयन होने पर अभिनन्दन किया गया। जयश्री ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए लक्ष्य हेतु सजग रहकर प्रयास करने हेतु प्रेरणा दी। श्री नईम अहमद ने विद्यार्थियों को कड़ा परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया। ग्राम निवासी श्री जयप्रकाश ने विद्यालय को ग्यारह हजार रूपये का योगदान दिया। सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापक श्री दयानन्द ने विद्यालय हेतु चालीस हजार रुपये प्रदान किए। गत सत्र के भामाशाहों का सम्मान एवं सत्र पर्यन्त उत्कृष्ट कार्य करने वाले एवं मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण भी कार्यक्रम में किया गया। अन्त में प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता मान ने विद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

झालरापाटन में एसयूपीडबल्यू शिविर सम्पन्न

झालरापाटन–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय झालरापाटन में विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती प्रभासेन ने पांच दिवसीय SUPW शिविर का समापन किया। शिविर के प्रथम दिवस कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों को पाँच दलों में विभक्त किया गया - पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि। प्रत्येक दल प्रभारी एक एक अध्यापक/अध्यापिकाओं को बनाया गया और प्रत्येक दल में से एक House Captain बनाया गया। प्रथम दिवस छात्रों ने अपनी-अपनी कक्षा की साफ-सफाई व साज-सज्जा की। द्वितीय दिवस ART and CRAFT DAY रखा गया जिसमें छात्रों ने उपयोगी और सुंदर सामग्री तैयार की A GARBGE GOES GREEN थीम के तहत कुछ बच्चों ने प्लास्टिक की फालतू बोतलों को काटकर उनपर रंग रोगन कर सुंदर गमले तैयार किए और उनमें फूलों वाले पौधे लगाए। तीसरे दिन खेल-कूद प्रतियोगिताओं का छात्रों ने आनंद लिया और चौथे दिन सभी दलों ने अपने दल प्रभारियों के निर्देशन में विभिन्न व्यंजन तैयार किए। पाँचवे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ शिविर का समापन हुआ जिसमें प्रत्येक गतिविधि के दल विजेता घोषित किए गए जिन्हें वार्षिकोत्सव में पुरस्कार दिया जाएँगे। संस्थाप्रधान ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि शिविर गतिविधियों से बच्चों में समूह भावना और आपस मे सामंजस्य की प्रवृत्ति विकसित होती है। सभी बच्चे नए उत्साह से सरोबार दिखे।

मोकलसर में संविधान दिवस पर हुआ आयोजन

बाड़मेर–जिले के सिवाना उपखंड के मोकलसर क्षेत्र के कुमार जितेन्द्र वरिष्ठ अध्यापक (गणित) मेराम चंद हूंडिया रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर के द्वारा स्वरचित और मौलिक कविता संविधान में दिए गए 'मूल अधिकारों' पर लिखी हुई को मोकलसर क्षेत्र के पाँच विद्यालयों मेराम चंद हूंडिया रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर, रा.उ.मा.वि. रमणीया, रा.उ.मा.वि. धीरा, रा.उ.मा.वि. महिलावास, रा.उ.मा.वि. फुलण में भेंट की गई। इस अवसर पर संविधान ज्ञान परीक्षा आयोजित भी की गई जिसमें विद्यालय प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार सोलंकी, व्याख्याता श्री भरत कुमार सोनी, श्री जगदीश विश्नोई, वरिष्ठ अध्यापक श्री कुमार जितेन्द्र, श्री मांगसिंह भायल, श्रीमति सुधा रैया, श्रीमती मोहनी गोदारा, लिपिक जेठूसिंह, सहा. कर्म. तुलसी बाई, सागर बाई एवं विद्यालय की छात्राओं का सहयोग रहा।

जिला स्तरीय कब बुलबुल उत्सव सम्पन्न

डूंगरपुर–राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूंगरपुर के तत्वावधान में जिला स्तरीय कब बुलबुल उत्सव लक्ष्मण मैदान डूंगरपुर में आयोजित हुआ। सी.ओ. स्काउट सवाईसिंह ने बताया कि जिला स्तरीय कब बुलबुल उत्सव का शुभारंम्भ मुख्य अतिथि श्री कृष्णपालसिह चौहान अतिरिक्त जिला कलेक्टर डूंगरपुर, विशिष्ट अतिथि श्री अमित सहलोत सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डूंगरपुर ने किया। श्री चौहान ने अपने उद्‌बोधन में बाल भक्ति को राष्ट्र भक्ति बताया।

आज के बालक-बालिका ही आने वाले समय में समाज व राष्ट्र भक्ति में योगदान देंगे। समय-समय पर उत्सव मेले आयोजित कर शहीद व महापुरुषों का जीवन परिचय बालक-बालिकाओं को कराना चाहिए। जिससे बालक-बालिकाओं में राष्ट्र प्रेम व समाज सेवा की भावना उत्पन्न होती है। विशिष्ट अतिथि श्री सहलोत ने बालक-बालिकाओं को संविधान-शपथ का पठन कराया। और बालक-बालिकाओं के अधिकार की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर कब बुलबुल के लिए कब बुलबुल सलामी, प्रार्थना, प्रतिज्ञा, नियम, बोरा दौड़, चम्मच दौड़, गुब्बारा फोड़, चित्रकला, परेड, रस्सी कूदना, पेड़ पर रस्सी से चढ़ना, खोज संकेत व सड़क चिह्न पहचानना, व्यायाम, योग, सूर्य नमस्कार आदि पारम्परिक खेल प्रतियोगिताएँ सर्वश्री चन्द्रशेखर, रामसिह सिसोदिया, डायालाल, संजय मीणा, भरत रोत, श्रीमती नितु माली, माया गोस्वामी, सरोजनी के मार्गदर्शन में हुई। प्रकृति अवलोकन व डूंगरपुर शहर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करवाया गया। कब बुलबुल उत्सव में सेन्ट पॉल डूंगरपुर, महात्मा गाँधी वि. टाउन डूंगरपुर रा.प्रा.वि.लालपुरा घाटा उतार, रा.प्रा.वि बरोटी उपली, युनिक पब्लिक स्कुल डूंगरपुर, पब्लिक स्कुल कोकापुर विद्यालय के कब बुलबुल ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं में उच्च स्थान प्राप्त कब बुलबुल को प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरण श्री बाबुलाल चौधरी अग्नि शमन अधिकारी नगर परिषद डूंगरपुर के सानिध्य एंव कर कमलों से हुआ। संचालन श्री ललित कुमार बरण्डा ने किया।

दांदू (चूरू) में सम्मान समारोह का आयोजन

चूरू-राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाध्यापक विनयशील झाझड़िया ने की। नवजीवन साइंस कॉलेज सीकर में 30 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक आयोजित राज्यस्तरीय विज्ञान मेले में भाग लेकर लोटे विजेता विद्यार्थी चंद्रप्रकाश का ग्रामीणजनों व विद्यालय स्टाफ ने स्वागत व अभिनंदन किया। विद्यालय के छात्र चन्द्रप्रकाश ने मॉडल प्रतियोगिता जूनियर वर्ग में राज्य स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया। श्री संजय कुमार के मार्गदर्शन में छात्र ने विज्ञान मेले में भाग लिया। संस्थाप्रधान विनयशील झाझड़िया ने बताया कि चंद्रप्रकाश ने धुआँ व कोहरा अवशोषक यंत्र का निर्माण किया जिससे वातावरण को धुआँ व कोहरा मुक्त किया जा सकता है महानगरों में कुहरे व धुएँ से होने वाली परेशानियों से निजात मिल सकती है। इस अवसर पर लखेंद्र सिंह विजेंद्र, सुभाष, श्रवणकुमार, राजेश कुमार, नेमीचंद सुडिया, बजरंग लाल, विनोद कुमार, रामचंद्र, सुल्तान सिंह, राकेश आदि उपस्थित थे।

ग्राम स्वावलम्बन व खादी की महत्ता पर व्याख्यान माला का आयोजन

सिरोही-राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य पर व्याख्यान माला का आयोजन शनिवार को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भाग-दो (दक्षिण) मेघवाल वास, सिरोही में हुआ। प्रवृत्ति प्रभारी गाइडर श्रीमती इन्द्रा खत्री के अनुसार ग्राम स्वावलम्बन व खादी की महत्ता विषय पर संदर्भ शिक्षक श्री गोपालसिंह राव व व्याख्याता शीतल मारु ने व्याख्यान दिया। राव ने सत्य, सत्याग्रह विषय पर प्रेरक प्रसंगों व उदाहरण देकर बोध कराया। शीतल मारु ने खादी व ग्राम स्वावलम्बन पर व्यावसायिक व व्यावहारिक जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्रीमती हीरा खत्री, अनिता चव्हाण, सर्वश्री राजेश कुमार सोनी, रमेश कुमार मेघवाल, गौरव सुथार, श्रीमती चन्द्रकांता चौहान, सोनल राठौड़, इन्दरसिंह चौहान, कीर्ति कुमार सोलंकी, श्रीमती कामिनी रावल, गणपतराज खत्री, देवीलाल सहित समस्त स्टाफ का सहयोग रहा।

अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर आयोजन

भरतपुर-राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, जोगीपुरा, नदबई, भरतपुर में अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत दिव्यांग बच्चों हेतु 02 दिवसीय कार्यक्रम में दिव्यांग खेलकूद प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर प्रतियोगिता, जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, रैली को हरी झण्डी श्री रामवीर सिंह एवं कार्यक्रम अधिकारी श्री ओम प्रकाश खूंटला ने दिखाकर शुरूआत की। बच्चों को प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए। 02 दिवसीय आवासीय कार्यक्रम राजकीय उच्च प्राथमिक आवासीय विघालय (बेघर बेसहारा विद्यालय) पुष्प वाटिका कॉलोनी, भरतपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अतिरिक्त परियोजना समन्वयक श्री अशोक कुमार धाकरे, कार्यक्रम प्रभारी श्री ओमप्रकाश खूंटला, संस्कृत शिक्षा के श्री शिवलाल मदेरणा, श्री रामवीरसिंह, सी.बी.ई.ओ. सेवर, वार्ड पार्षद, श्री योगेश चौधरी एवं पुरस्कृत शिक्षक फोरम के सचिव एवं बाल संरक्षण इकाई के सदस्य श्री मदन मोहन शर्मा सहित अन्य गण मान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस अवसर शिक्षिका स्नेहलता शर्मा को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

अलवर–राजकीय प्राथमिक विद्यालय कोडिया, रैणी में प्रतिभा सम्मान समारोह–2019 का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री जौहरीलाल मीणा रहे, विशिष्टि अतिथि श्री अनिल कौशिक, सीडीइओ., श्री मुकेश किराड़ एडीइओ. श्री दुलीचंद मीणा ओएसडी, श्री उमाशंकर मीणा, प्रधानाचार्य, श्री दुलीचन्द बैरवा प्र.अ. तथा अध्यक्षता श्री अनीता ओम प्रकाश सैनी रैणी प्रधान ने की। इनके अलावा प्रधानाध्यापक, सर्वश्री नन्दलाल बैरवा पूर्व प्राचार्य, शिक्षाअधिकारी सर्वश्री कैशवभाई कच्छावा, मोडाराम कड़ेला, रोहिताश कांटिया, रतन पंवार, चुन्नीलाल एवं प्रेमनारायण मीणा ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। कार्यक्रम संयोजक श्री भगवान सहाय जोरवाल ने बताया कि सरकारी विद्यालयों से अध्ययनरत रैणी क्षेत्र के कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों को 75 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने पर सम्मानित किया गया तथा राष्ट्रपति/राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षकों को भी स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि श्री मीणा ने अपने सम्बोधन में शाला में बच्चों को नियमित भेजने का आह्वान किया तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए ग्रामवासियों के आग्रह पर शाला में अतिशीघ्र चार दीवारी बनवाने का आश्वासन दिया।

कोटड़ा में भामाशाह ने 150 स्वेटर्स वितरित किए

बीकानेर (कोलायत)–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा में कोटड़ा गाँव के ही समाजसेवी व भामाशाह श्री हेम सिंह पुत्र श्री प्रेम सिंह जी द्वारा कक्षा 1 से 5 तक के सभी विद्यार्थियों को 150 स्वेटर वितरित किए। वर्तमान में कड़ाके की सर्दी के चलते नन्हे–मुन्ने बच्चों के लिए यह एक उपयोगी उपहार प्राप्त हुआ है। कार्यक्रम में उनकी माताजी श्रीमती दाखु देवी, भाई लक्ष्मण सिंह, राजू सिंह सहित विद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा। प्रधानाचार्य श्री अवधेश शर्मा व पारी प्रभारी अनिल शर्मा ने भामाशाहों का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन नरेन्द्र सिंह रावत ने किया। कार्यक्रम में कांता हिंडोनिया, पूजा जाग्रत, नंदकिशोर टाक, लक्ष्मण सिंह आदि ने सहयोग किया।

नवीन विद्यालय परिसर का लोकार्पण

बालोतरा–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमरलाई गाँव के नवीन परिसर का 7 दिसंबर, 2019 को लोकार्पण कार्यक्रम हुआ। इसमें मुख्य अतिथि पचपदरा विधायक श्रीमान मदन प्रजापत तथा अध्यक्षता जिला प्रमुख प्रियंका मेघवाल ने की। इस दौरान विधायक ने कहा कि गाँव व गरीब के विकास को लेकर प्रदेश सरकार संकल्पित है तथा जिला प्रमुख ने कहा कि गाँव के विकास में कोई कसर नहीं रखी जाएगी। इस दौरान विधायक ने 2 व जिला प्रमुख ने 1 अतिरिक्त कक्षा–कक्ष की घोषणा की। इस दौरान शिक्षक सम्मान से सम्मानित शिक्षक श्री ठाकराराम प्रजापत का विधायक ने बहुमान किया। कार्यक्रम में बालोतरा प्रधान दरिया देवी, विकास अधिकारी श्री फिरोज खान, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी छगनलाल राठौड़, बालोतरा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष श्री भगवतसिंह जसोल, सरपंच ममता देवी, उपसरपंच श्री मालाराम भूकर, समाजसेवी सर्वश्री ठाकराराम गोदारा, किशनाराम भील, नरपतसिंह विदावत आदि मौजूद रहे। अंत में विद्यालय प्रधानाचार्य मोहनाराम चौधरी ने सभी आगंतुक मेहमानों का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अध्यापक श्री ठाकराराम प्रजापत ने किया।

भामाशाह पारीक ने 61 विद्यार्थियों को स्वेटर बांटी

सीकर–4 दिसम्बर 19–राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी में भामाशाह श्री शंकर लाल पारीक ने 61 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद्ध श्री मदन लाल जांगिड़, विशिष्ट अतिथि श्री भगवाना राम थालोड, अध्यक्षता प्रधानाध्यापिका भंवरी देवी ने की। शारीरिक शिक्षक श्री भंवर सिंह ने बताया कि पिछले पाँच वर्षों से लगातार प्रतिवर्ष भामाशाहों द्वारा स्वेटर वितरित करवायी जा रही है। इस अवसर पर भामाशाह श्री शंकर लाल पारीक का विद्यालय स्टाफ द्वारा माला व साफा पहनाकर अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में व.अ. सर्वश्री प्रवीण तेतरवाल, रोहिताश थालोड़, बनवारी लाल शर्मा, राजेश पूनियां, सरिता, रेणुका, जुगल किशोर, रामलाल गोदारा, रामकुमार

भामू, चिरंजी लाल शर्मा, हरीराम थालोड़, संतोष व इन्दिरा देवी सहित सैंकडों विद्यार्थी व ग्रामीण जन उपस्थित थे। सभी अतिथियों ने भामाशाहों को प्रेरित कर विद्यालय में लाखों रूपये की लागत से भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाने पर नेशनल अवार्डी टीचर श्री भंवर सिंह के उल्लेखनीय कार्यों की प्रशंसा की।

शारीरिक शिक्षक का सम्मान

सीकर–राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा, लाडखानी सीकर के शारीरिक शिक्षक श्री भंवरसिंह को कॅरियर कोचिंग लाइन संस्थान सीकर द्वारा आदर्श शिक्षक सम्मान से शॉल, साफा व प्रतीक चिह्न देकर शाला प्रांगण में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक श्री प्रवीण तेतरवाल ने कहा कि भामाशाहों को प्रेरित कर खिलाड़ियों को पोशाक वितरण करवाने तथा जिला स्तरीय प्रतियोगिता में आवागमन हेतु वाहन व्यवस्था, सर्दियों में स्वेटर वितरण करवाने में योगदान रहा है। इस वर्ष कलकत्ता प्रवासी अग्रवाल समाज से विद्यालय में 230 पोशाकों का वितरण करवाया। एक लाख तीस हजार रुपयों की लागत से भामाशाह श्री चिरंजी लाल जांगिड़ से प्रार्थना सभागार पर टीन शैड का निर्माण करवाया। इस विद्यालय से चार बार जिला व राज्य स्तर पर, दो बार राष्ट्रीय स्तर पर खेली छात्रा पूजा कंवर को इस वर्ष जिले की पहली महिला हैण्डबॉल अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी बनने का गौरव हासिल हुआ। विद्यालय से अनेक राज्य व राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी शारीरिक शिक्षक श्री सिंह ने तैयार किए हैं। इसके अलावा प्रार्थना सभा में श्री सिंह नैतिक शिक्षा, संस्कार व चरित्र निर्माण पर लागातार विद्यार्थियों का मोटिवेशन करते रहते हैं।

भामाशाह श्री देवड़ा का सम्मान

सीकर–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय माण्डेला छोटा, फतेहपुर में भामाशाह और समाज सेवी श्री महबूब देवड़ा ने आठ सीसी. टीवी. कैमरे और एक एलसीडी. शाला में भेंट की तथा भामाशाह ने इसी विद्यालय में तीस हजार रुपए की लागत का छह माह पूर्व रंग-रोगन व कलर कार्य करवाने पर शाला प्रांगण में प्रधानाध्याक श्री गोपाल सिंह ने भामाशाह श्री देवड़ा का सम्मान करते हुए व प्रेरक अध्यापिका शबनम भारतीय का भी आभार जताया। संस्थाप्रधान ने बताया कि शाला की छात्रा सानिया बानो कक्षा-7 ने अध्यापिका शबनम के नेतृत्व में नवोदय क्रांति परिवार की ओर से सत्यमेव जयते यूएसए अमेरिका द्वारा आयोजित स्पेलिंग बी कॉन्टेस्ट ऑनलाईन प्रतियोगिता 28 नवम्बर, 19 को भाग लिया। शाला में बाल अधिकार सप्ताह मनाया गया जो बालदिवस से विश्व बाल अधिकार दिवस तक आयोजित हुआ जिसमें आई जयन्तियों, दिवसों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन किए गए तथा महापुरुषों के जीवन चरित पर प्रतिदिन प्रकाश डालते हुए प्रेरित किया गया। सहयोगी के रूप में स्टाफ के साथी सर्वश्री राजीव चौधरी, मो. नासिर, राजेन्द्र सिंह, दीपिका बगूलिया आदि रहे।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।**

-वरिष्ठ संपादक

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

उपग्रह की मदद से जंगल उजड़ने से बचाए जाएँगे

देश में हरित क्षेत्र को बढ़ाने के लिए शुरू किए सघन वनीकरण और वृक्षारोपण अभियान की निगरानी में उपग्रह की मदद ली जाएगी। वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने यह जानकारी दी। हरित क्षेत्र बढ़ाने को गठित 'कैंपा फंड' के व्यय की समीक्षा के लिए सभी राज्यों के वन मंत्रियों की बैठक के बाद जावड़ेकर ने बताया कि वन क्षेत्र में विस्तार के लिए पिछले पाँच वर्षों में 12 करोड़ पेड़ लगाए गए हैं। पेड़ों के उचित रख रखाव और वृद्धि पर नजर रखने के लिए उपग्रह आधारित तंत्र विकसित किया जा रहा है। केंद्र ने विकास परियोजनाओं के कारण पर्यावरण को हो रहे नुकसान की भरपाई के लिए 2009 में उच्चतम न्यायालय के आदेश पर 47 हजार करोड़ रुपये का एक पृथक कोष (कैंपा फंड) स्थापित किया था। वन एवं पर्यावरण मंत्री की अध्यक्षता वाले इस फंड के तहत सभी राज्यों को विकास कार्यों के कारण हरित क्षेत्रों को होने वाले नुकसान की भरपाई नए हरित क्षेत्र विकसित करके की जाती है।

'जियो को-ऑर्डिनेट तकनीक' से पेड़ों पर नजर रखेंगे

'जावड़ेकर के मुताबिक 'जियो कोऑर्डिनेट तकनीक' से पेड़ों का ब्योरा सूचीबद्ध कर यह सुनिश्चित किया जाएगा कि एक विशिष्ट अवधि में कितना वृक्षारोपण हुआ और हरित क्षेत्र की वार्षिक वृद्धि कैसी व कितनी है? इससे यह भी पता चल सकेगा कि पिछले पाँच वर्षों में लगाए गए 12 करोड़ पेड़ों में से कितने बचे हैं और कितने नष्ट हो चुके हैं? मंत्री के मुताबिक उपग्रह से मिली सभी जानकारियाँ सार्वजनिक की जाएगी।

माँ का मधुमेह बच्चों में हृदयरोग की वजह बन रहा

लंदन। मधुमेह से पीड़ित माताओं के बच्चों में जल्दी हृदयरोग होने का खतरा ज्यादा होता है। इन बच्चों में बचपन से लेकर 40 साल तक की उम्र में कभी भी हृदयरोग हो सकते हैं। एक हालिया शोध में यह चेतावनी दी गई है। पत्रिका द बीएमजे में प्रकाशित शोध के अनुसार जो माताएँ हृदयरोग या मधुमेह से पीड़ित होती हैं उनके बच्चों में इन बीमारियों का जोखिम ज्यादा होता है।

महिलाओं की लगातार होनी चाहिए जाँच : डेनमार्क की अराहस यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने कहा, हमारे शोध में सबूत मिलते हैं कि ऐसे बच्चों में उम्र के पहले तीन-चार दशकों में हृदयरोग का खतरा ज्यादा होता है जिनकी माताओं में हृदयरोग या मधुमेह का इतिहास हो। शोधकर्त्ताओं ने कहा कि माँ बनने की उम्र में महिलाओं की लगातार जाँच होनी चाहिए ताकि मधुमेह से बचाव किया जा सके। दुनिया भर में गर्भावस्था के दौरान महिलाओं में मुधमेह के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। इन महिलाओं के बच्चों में हृदयरोग होने का खतरा ज्यादा होता है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि गर्भावस्था के दौरान मधुमेह होने से बच्चे पर कितना प्रभाव पड़ता है।

जोखिम 29 फीसदी ज्यादा : शोध में पाया गया कि जो महिलाएँ मधुमेह से ग्रस्त थी उनके बच्चों में पहले 40 सालों में हृदयरोग होने का खतरा 29 फीसदी तक ज्यादा था। शोधकर्त्ताओं को यह भी पता चला कि इन बच्चों में हृदय के रूक जाने के मामले 45 फीसदी, हाइपरटेंसिव बीमारी के मामले 78 फीसदी, डीप वेन थ्रंबोसिस के मामले 82 फीसदी और प्लमोनरी इमबोल्जिम के मामले 91 फीसदी थे।

अधेड़ उम्र में मोटापे से बचाएगा एवाकाडो

लंदन। अधेड़ उम्र में अक्सर लोगों का वजन बढ़ जाता है जिससे कई बीमारियाँ हो सकती है। इस उम्र में मोटापे को दूर करने के लिए एवाकाडो फल का सेवन करना चाहिए। एक हालिया शोध के अनुसार रोज एक एवाकाडो का सेवन करने से अधेड़ उम्र में वजन बढ़ने या मोटापे की चपेट में आने की आशंका कम होती है। शोधकर्त्ताओं ने 30 साल की उम्र के 55,000 पुरुषों और महिलाओं के डाटा का विशलेषण किया। इन प्रतिभागियों से पूछा गया कि वो रोज कितने एवाकाडो खाते थे। उन्होंने शोध की शुरुआत में, बीच में और अंत में वजन को भी मापा। सामान्य वजन वाले जिन प्रतिभागियों ने रोजाना आधे फल का भी सेवन किया, उनमें अधेड़ उम्र के होने पर मोटापे का खतरा 15 फीसदी तक कम पाया गया। लोमा लेंडा यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने जर्नल न्यूट्रिएंट्स में लिखा कि यह फल वजन बढ़ाने से रोकने में मदद करता है।

इंफ्रारेड आँखों, दिमाग से नियंत्रित होने वाले हथियारों से लैस होंगे सैनिक

न्यूयार्क पत्रिका- हॉलीवुड की कई फंतासी फिल्मों में दिखाए जा चुके महाशक्तिमान साइबॉर्ग अमरीकी सेना में शामिल होंगे। अमरीकी सेना की कॉम्बेट कैपबिलिटीज डेवलपमेंट कमांड ने भविष्य की संभावित तकनीकों को सैनिकों में इस्तेमाल करने संबंधी एक रिपोर्ट तैयार की है। इसके अनुसार 2050 तक सैनिकों में तकनीकों का उपयोग कर इन्हें महाशक्तिमान बनाया जा सकेगा। इंफ्रारेड आँखों और मस्तिष्क से नियंत्रित होने वाले हथियारों और गजब की शारीरिक क्षमता वाले ये साइबॉर्ग सैनिक आधे मानव और आधे मशीन होंगे।

तंत्रिका उपकरण करेगा कमाल, बढ़ाएगी ताकत : भविष्य के इन सैनिकों में तंत्रिका उपकरण (न्यूरल डिवाइस) कमाल करेगा। इससे मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने में मदद मिलेगी। साइबॉर्ग के इस विचार के लिए वैज्ञानिकों, सैन्य अधिकारियों और अन्य विशेषज्ञों ने कई वर्षों तक शोध किया।

मानव और मशीन का बेहतर मिश्रण : साइबॉर्ग शब्द का सबसे पहले इस्तेमाल नासा के शोध में किया था। मैनफ्रेड क्लायनेस और नेथन क्लाइन के शोध के अनुसार साइबॉर्ग एक साइबरनेटिक ऑर्गेनिज्म का विकास यानी मानव और मशीन के बीच बेहतर परिणामों के लिए प्रयास है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -व. संपादक

कोटा

रा.मा.वि. खजूरी (ओदपुर), सांगोद को श्री रमेश चन्द नागर (प्रधानाध्यापक) द्वारा 6,76,250 रुपये की निम्न सामग्री विद्यालय को सप्रेम भेंट की, सामग्री की सूची निम्न प्रकार से है, 8 पंखे जिसकी लागत 12,000 रुपये, प्लास्टिक कुर्सियाँ 15 जिसकी लागत 9,000 रुपये, 02 कम्प्यूटर मेज जिसकी लागत 15,000 रुपये, 01 कुर्सी जिसकी लागत 5,000 रुपये, 01 माइक सेट जिसकी लागत 7,500 रुपये, 01 लोहे की अलमारी जिसकी लागत 5,000 रुपये, 08 मेज (लोहे की) जिसकी लागत 8,000 रुपये, 150 सेट प्लेट स्टील जिसकी लागत 6,750 रुपये, 01 कूलर बड़ा लोहे का का जिसकी लागत 10,000 रुपये, 50 मीटर दरी पट्टी (सूती) जिसकी लागत 1,500 रुपये, 04 फर्श (सूती) जिसकी लागत 2,000 रुपये, 02 बाल्टी जिसकी लागत 500 रुपये, 01 डाइस (लकड़ी की) जिसकी लागत 10,000 रुपये, फर्नीचर (कक्षा I से IV तक) जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, कमरे एवं बरामदा की छत रिपेयरिंग कार्य जिसकी लागत 50,000 रुपये, प्लास्टिक पेंट से पुताई कमरे एवं बरामदा जिसकी लागत 25,000 रुपये, फर्श बाउन्ड्री वाल कार्य जिसकी लागत 50,000 रुपये, टीनशेड रिपेयरिंग जिसकी लागत 5,000 रुपये, बुक एवं डेस्क वर्क जिसकी लागत 25,000 रुपये, 100 बालकों को गणवेश वितरण जिसकी लागत 50,000 रुपये, 03 ग्रीन बोर्ड जिसकी लागत 4,000 रुपये, महापुरुषों के फ्रेम एवं नक्शा तादाद 10 जिसकी लागत 10,000 रुपये, प्रधानाध्यापक कक्ष में मेटी-फर्श जिसकी लागत 5,000 रुपये, 02 भामाशाह बोर्ड एवं प्रधानाध्यापक बोर्ड जिसकी लागत 10,000 रुपये, 5 निजी अध्यापकों का वेतन 2,50,000 रुपये।

हनुमानगढ़

रा.मा.वि. नुवां तह. भादरा को श्री दुलीचन्द स्वामी एक आटोमेटिक बेल मॉडल्स -UB-501 विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 16,600 रुपये।

भरतपुर

श्रीमती शीला जोशी रा.उ.मा.वि. बहज को पप्पू सोनी (हलवाई) द्वारा एक वाटर कूलर जिसकी लागत 44,500 रुपये तथा 120 छात्रों को जर्सियाँ जिसकी लागत 20,000 रुपये, विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री विनीत नगायच से छात्रों को बनियान भेंट जिसकी लागत 11,525 रुपये, श्री विष्णु कुमार शर्मा से 02 खादी पर्स जिसकी लागत 4,000 रुपये, दीपा कुमारी (व्याख्याता) से 100 बच्चों को ऊनी टोपे जिसकी लागत 6,000 रुपये, श्री मुरारी खंडेलवाल से 150 बस्ते प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये, लूपिन फाऊंडेशन भरतपुर से एक आर.ओ. वाटर प्लांट तथा पाँच पंखे तथा प्रयोगशाला के इक्विपमेंट 1,25,000 रुपये प्राप्त, विद्यालय में प्रार्थना सभा के मैदान हेतु को सीमेंट एडिटर से पक्का कराने हेतु नकद राशि तथा ऑनलाइन प्राप्त राशि निम्न प्रकार से है- सर्वश्री लाल सिंह (से.नि. प्रधानाचार्य), ब्रजेश कुमार बहज, प्रहलाद सिंह फौजदार बहज, राम खिलाड़ी सांवई, शीशराम (सरपंच बहज), प्रतापसिंह (राज. पुलिस बहज), राजेश फौजदार (व्याख्याता बहज) प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये प्राप्त, श्री रमेश चन्द फौजदार बहज से 10,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री ओमवीर सिंह (अध्यापक), रामेश्वर प्रसाद शर्मा, राजेन्द्र सिंह (डीलर), संजीव कुमार (डीलर), कृपाल सिंह (पीटीआई.), ओमप्रकाश (अध्यापक), भगवान सिंह (व. अध्यापक), वीरेन्द्र सिंह (से.नि. व्याख्याता), भगवान सिंह (अध्यापक), कैप्टन अशोक कुमार प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये प्राप्त एवं स्थानीय विद्यालय के स्टाफ से 31,500 रुपये प्राप्त हुए, श्री रामेश्वर सिंह (पूर्व पंच बहज) से 3,100 रुपये प्राप्त हुए, श्री पूरन सिंह से 6,100 रुपये प्राप्त हुए, सर्व श्री विजेन्द्र मेंबर साहब, दिनेश चन्द प्रत्येक से 500-500 रुपये प्राप्त हुए, श्री ओमवीर सिंह राज. पुलिस व श्री राजेन्द्र सिंह अध्यापक प्रत्येक से 5100-5100 रुपये प्राप्त हुए।

जालोर

रा.उ.मा.वि. नरता को भवानी ग्रुप (लौडा परिवार) की तरफ से विद्यालय में अध्ययनरत 0630 विद्यार्थियों को भोजन एवं प्रत्येक को एक थाली, स्टली गिलास, स्टील कटोरी भेंट की, श्री खेदाराम चौधरी से 11,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री मुकेश कुमार, खेताराम से 21,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री कोलाराम/देरवाजी से 5,000 रुपये नकद प्राप्त, इन रुपये से 16 C.C.T.V. कैमरे विद्यालय में लगाए गए, श्री रताराम/भीमाजी से 15,500 रुपये की लागत से इन्सीलेटर मशीन (Destroyer Machine) विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.मा.वि., कोड़, तह. सांचोर** में श्री किशनलाल द्वारा विद्यालय मुख्य द्वार का निर्माण जिसकी लागत 2,00,000 रुपये, सर्वश्री पीराराम, भीख सिंह, वीभाराम, सगताराम द्वारा कक्षा कक्ष मय बरामदा 25×35 का निर्माण करवाया गया जिसकी प्रत्येक की लागत 6,00,000 रुपये।

जयपुर

रा.उ.मा.वि. लक्ष्मण डूंगरी को शॉओमी कम्पनी के वितरक श्री शिशिर सराफ द्वारा बाल दिवस के अवसर पर 62,750 रुपये की लागत से विद्यालय में 720 ड्राइंग बॉक्स, 450 नोट बुक, 750 पेन्सिल, 750 रबड़, 750 शार्पनर व 720 रंग के डिब्बे छात्र-छात्राओं को सप्रेम भेंट, 18 फीट लम्बी तथा 2 फीट चौड़ी 25 दरी पट्टियाँ जिसकी लागत 19,750 रुपये, विद्यालय के नाम का चमक साईन बोर्ड, 25 फीट लम्बा तथा 2.5 फीट चौड़ा जिसकी लागत 17624 रुपये विद्यालय को सप्रेम भेंट, अध्यापिका राजबाला एवं सतवंत कौर द्वारा विद्यालय में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से 1100-1100 रुपये जमा किए।

झालावाड़

रा.उ.मा.वि. पचपहाड़, पं.सं. भवानी मण्डी जिला-झालावाड़ में श्री फरनीष कुमार विजय प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ के सहयोग से 30'×90' फीट का टीन शेड लगवाया (लागत 1,50,000 रुपये), श्री अभिषेक दीक्षित (N.R.I.अमेरिका) निवासी पचपहाड़ द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों को शीतल जल हेतु वाटर कूलर भेंट किया जिसकी लागत 25,000 रुपये, गिरधर गोपाल शर्मा व्याख्याता द्वारा पाँच सीलिंग पंखे भेंट किए, श्री हरि मोहन शर्मा निवासी चिड़ावा द्वारा विद्यालय विकास हेतु 21,000 रुपये, इसी प्रकार गिरिराज अहीर प्रधानाचार्य नि. रामगंज मण्डी द्वारा 11,000 रुपये श्री अशोक कुमार सोनी रि.व्या. द्वारा 5000 रुपये, श्री प्रदीप भटनागर प्र.अ. निजी विद्यालय, श्री अमीन मन्सूरी प्र.अ.निजी विद्यालय द्वारा 5000-5000 रुपये विद्यालय को भेंट किए गए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : जनवरी, 2020

श्री हिमांशु गुप्ता IAS, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का भारत स्काउट एवं गाइड संगठन बीकानेर के मण्डल कार्यालय के पदाधिकारियों ने मण्डल चीफ कमिश्नर डॉ. विजयशंकर आचार्य के नेतृत्व में स्वागत किया और स्काउट गतिविधियों से परिचय करवाया।

रा.उ.मा.वि. उदावास में लार्सन एण्ड टूब्रो कम्पनी द्वारा सीएसआर के तहत 42 लाख की लागत से छात्र–छात्राओं के लिए अलग–अलग निर्मित युरिनल व टायलेट के उद्घाटन अवसर पर प्रधानाचार्य श्री राकेश ढाका एवं कम्पनी मैनेजर एम.के. राणा, अतिथि एवं स्टाफ।

राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर विजेता विद्यार्थी चन्द्र प्रकाश का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दांदू चूरु के संस्थाप्रधान श्री विनयशील झांझड़िया और शाला परिवार द्वारा अभिनन्दन किया गया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमरलाइ, बालोतरा (बाड़मेर) के नवीन परिसर का 7 दिसंबर को लोकार्पण समारोह। मुख्य अतिथि पचपदरा विधायक मदन प्रजापत, अध्यक्ष जिला प्रमुख प्रियंका मेघवाल, बालोतरा प्रधान दरिया देवी एवं शाला स्टाफ।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22

शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2020
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2020 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा का बीकानेर संभाग के संस्थाप्रधानों एवं शिक्षा अधिकारियों से

शैक्षिक संवाद

दिनांक-16 दिसम्बर 2019

स्थान- तेरापंथ भवन, बीकानेर

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011